हिन्दी दैनिक

तीसरा विकल्प न्यूज़

(लखनऊ से प्रकाशित)

वर्षः- 02, अंकः-220, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.
लखनऊ, गुरुवार 23 जनवरी 2025

रोशन रोशन हो गए लुटा वतन पर प्राण ...02

2026 तक नक्सल मुक्त भारतः केंद्र सरकार का ऐतिहासिक...06

काशी-प्रयागराज समेत सात जिलों के धार्मिक क्षेत्र को योगी कैबिनेट की मंजूरी

महाकुंभ नगर, संवाददाता। महाकुंभ में बुधवार को हुई योगी कैबिनेट की बैठक में कई अहम प्रस्ताव पास किए गए। जिसमें प्रयागराज हेतापट्टी से सलोरी तक गंगा पर पुल, संगम के पास अरैल में भी एक सामानंतर पुल को मंजूरी दी गई है। वाराणसी, प्रयागराज समेत सात जिलों को धार्मिक क्षेत्र की मंजूरी मिली है। प्रयागराज, वाराणसी और आगरा में मल्टी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल और मुरादाबाद में 10 हजार करोड़ का निवेश का प्रस्ताव पास हुआ है। योगी कैबिनेट की बैठक में प्रयागराज कई अन्य अहम प्रस्तावों को मंजूरी मिली है, जिसमें प्रयागराज विंध्य क्षेत्र और वाराणसी विध्य क्षेत्र का गठन, गंगा एक्सप्रेस का विस्तार, मध्य प्रदेश की सीमा रीवा तक, बुंदेलखंड एक्सप्रेस का भी विस्तार रीवा तक किया जाएगा। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गंगा एक्सप्रेसवे को चित्रकूट से जोड़ने के लिए बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे को गंगा एक्सप्रेसवे से जोड़ा जाएगा। गंगा नदी पर छह लेन का पुल बनाया जा रहा है। प्रयागराज को झूसी से जोड़ने के लिए एक और चार लेन का पुल बनाया जाएगा। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रयागराज-चित्रकूट विकास क्षेत्र के साथ-साथ वाराणसी में भी नीति आयोग के सहयोग से विकास क्षेत्र विकसित किया जाएगा। योगी कैबिनेट की बैठक में प्रयागराज कई अन्य अहम प्रस्तावों को मंजूरी मिली है, जिसमें प्रयागराज विंध्य क्षेत्र और वाराणसी विध्य क्षेत्र का गठन, गंगा एक्सप्रेस का विस्तार, मध्य प्रदेश की सीमा रीवा तक, बुंदेलखंड एक्सप्रेस का भी विस्तार रीवा तक किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रयागराज और आसपास के क्षेत्रों के लिए एक सतत विकास बनाने के लिए, हम एक विकास क्षेत्र विकसित करेंगे। इसके बुनियादी ढांचे के लिए, गंगा एक्सप्रेसवे का विस्तार दिया जाएगा। गंगा एक्सप्रेसवे प्रयागराज से मिर्जापुर, भदोही से काशी, चंदौली और गाजीपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से जुड़ेगा। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ का कहना है, वाराणसी और चंदौली से, यह (गंगा) एक्सप्रेसवे सोनभद्र को राष्ट्रीय राजमार्ग से जोड़ेगा।

राज्य के विकास से जुड़ी नीतियों पर चर्चा हुई-योगी

यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा विशेष कैबिनेट बैठक के बाद कहा कि पूरी कैबिनेट पहली बार महाकुंभ में मौजूद है। राज्य के विकास से जुड़ी नीतियों पर चर्चा हुई। प्रयागराज से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा हुई। उत्तर प्रदेश एयरोस्पेस और रक्षा तथा रोजगार नीति को पांच साल पूरे हो गए हैं। इसे नवीनीकृत किया जाएगा। अधिक निवेश आकर्षित करने के लिए नए प्रोत्साहनों की घोषणा की गई है।

प्रयागराज, वाराणसी और आगरा के लिए बॉन्ड जारी किए जाएंगे

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रयागराज, वाराणसी और आगरा नगर निगम हैं। इन तीनों के लिए बॉन्ड जारी किए जाएंगे... पिछले एक हफ्ते में 9.25 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने संगम में पवित्र डुबकी लगाई है... प्रयागराज नगर निगम प्रयागराज सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल के लिए बॉन्ड जारी करेगा। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि केजीएमयू केंद्र को मेडिकल कॉलेज के रूप में स्थापित करने का निर्णय लिया गया है। तीन जिलों हाथरस, कासगंज और बागपत में तीन नए मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जाएंगे। 62 आईटीआई, 5 नवाचार, आविष्कार और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

अरैल में भी एक पुल को मंजूरी

सीएम योगी ने कहा कि हेतापट्टी से सलोरी तक गंगा पर पुल बनेगा, अरैल में भी एक पुल को मंजूरी दी गई है। वाराणसी, प्रयागराज समेत सात जिलों को धार्मिक क्षेत्र की मंजूरी मिली है। प्रयागराज, वाराणसी और आगरा में मल्टी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल और मुरादाबाद में 10 हजार करोड़ का निवेश का प्रस्ताव पास हुआ है।

योगी समेत 54 मंत्रियों ने संगम में लगाई डुबकी, आस्था के आगे सर्दी दिखा बेअसर

लखनऊ, संवाददाता। योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में महाकुंभनगर के अरैल क्षेत्र में मंत्रिमंडल की बैठक में रोड इंफ्रास्ट्रक्चर , रोजगार सृजन और चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े कई अहम प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की गयी। इसके बाद सीएम योगी की अगुवाई में एक साथ 54 मंत्रियों ने संगम में डुबकी लगाई। भीषण शदी के बावजूद भी अस्था के आगे सर्दी बेअसर नजर आ रहा था। आप को बता दें कि मंत्रिमंडल में शामिल भाजपा के सहयोगी अपना दल (एस),निषाद पार्टी और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) भी बैठक में मौजूद रहे। इससे पहले 2019 में यहां आयोजित महाकुंभ के मौके पर योगी मंत्रिमंडल की बैठक हुयी थी। श्री योगी ने बैठक के बाद आयोजित संवाददाता सम्मेलन में महाकुंभ में आये सभी पूज्य संतो और श्रद्धालुओं का स्वागत करते हुये कहा कि यह पहली बार है जब उप्र का संपूर्ण मंत्रिमंडल महाकुंभ नगर में उपस्थित है। बैठक में विकास से जुडे नीतिगत मुद्दों और प्रयागराज के विकास से जुड़े मुद्दों पर पर चर्चा हुयी है। उप्र की एयरोस्पेस और डिफेंस और रोजगार से जुडी पालिसी के पांच साल पूरे हो चुके है और इसकी नयी नीति के प्रस्ताव को भी मंजूरी प्रदान की गयी है। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 20 के अंतर्गत अभियोजन निदेशालय की स्थापना के सम्बंध में प्रस्ताव को मंजूरी। प्रयागराज नगर निगम ,वाराणसी नगर निगम,व आगरा नगर निगम हेतु म्युनिसिपल बांड निर्गत करने तथा अवस्थापना विकास निधि से क्रेडिट रेटिंग म्दींदबमउमदज के लिए धनराशि उपलब्ध कराए जाने पर अनुमोदन प्राप्त किये जाने के सम्बंध में मंजूरी। टाटा टेक्नोलॉजी लिमिटेड के सहयोग से प्रदेश के 62 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानो का उन्नयन, व 5 सेंटर फॉर इनोवेशन,इंवेंनशन, इन्क्यूबेशन एंड ट्रेनिंग की स्थापना किये जाने के सम्बंध में प्रस्ताव को मंजूरी। प्रदेश के असेवित जनपद हाथरस,बागपत, व कासगंज में भारत सरकार की वायबिलिटी गैप फंडिंग के अंतर्गत पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज सन्चालित किये जाने हेतु सफल निविदादाता का चयन किये जाने के सम्बंध में प्रस्ताव को मंजूरी। स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, बलरामपुर की स्थापना हेतु 166 बेडेड राजकीय संयुक्त चिकित्सालय बलरामपुर को चिकित्सा शिक्षा विभाग के पक्ष में निःशुल्क हस्तांतरण किये जाने व जनपद बलरामपुर में स्थापित किये जा रहे झळडन् के सेटेलाइट सेंटर को स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, बलरामपुर में परिवर्तित किये जाने के प्रस्ताव को मंजूरी।

स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना अंतर्गत निःशुल्क स्मार्टफोन वितरण हेतु योजनांतर्गत अंतिम बिड अभिलेख के संबंध में प्रस्ताव स्वीकृत। उप्र औद्योगिक निवेश व रोजगार प्रोत्साहन नीति 2022 के अंतर्गत प्रदेश में मेगा श्रेणी की आद्योगिक इकाइयों हेतु विशेष सुविधाएं एवं रियायतें अनुमन्य कराए जाने विषयक शासनादेश,मुख्य सचिव द्वारा अध्यक्षता में गठित उच्च स्तरीय प्राधिकृत समिति बैठक में की गई संस्तुतियों पर अनुमोदन प्रस्ताव को मंजूरी।

हार के डर से आपदा वाले घोषणाएं कर रहेः मोदी

भाजपा कार्यकर्ताओं से कहा- वे कहते हैं फिर आएंगे, जनता कहती है फिर खाएंगे

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को दिल्ली में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) पर लोकपाल के गठन जैसे वायदों से पीछे हटने का आरोप लगाते हुये कहा कि यह पार्टी हार से इतनी डरी हुयी है कि इन्हें रोज नयी हवाई घोषणायें करनी पड़ रही हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि आप की सरकार ने आयुष्मान जैसी केंद्र की कल्याणकारी योजनाओं से दिल्ली के लोगों को वंचित रखने का पाप किया है। दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिये जोरदार प्रचार अभियान के बीच श्री मोदी ने नमो ऐप के माध्यम से आज भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दिल्ली के बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं से संवाद कर रहे थे। उन्होंने कार्यकर्ताओं को हर बूथ पर जी-जान से मेहनत करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि दिल्ली के लोग सरकार बदलने का मन बना चुके हैं और कार्यकर्ताओं का प्रयास होना चाहिये कि इस बार पार्टी को हर बूथ पर 50 प्रतिशत मत मिले। उन्होंने आप को आप-दा की संज्ञा देते हुए कहा, दिल्ली वाले आप-दा वालों के झूठ और फरेब से अब ऊब चुके हैं। पहले कांग्रेस ने और फिर आप वालों की आप-दा ने दिल्ली के लोगों से बहुत विश्वासघात किया है। ये आप-दा वाले अब हर दिन एक नयी घोषणा कर रहे हैं। इसका मतलब है कि इनको रोज इनको (चुनाव में अपनी आसन्न) पराजय की नयी-नयी खबरें मिल रही हैं। ये इतने डरे हुये हैं कि इन्हें रोज सुबह एक नयी घोषणा करनी पड़ रही है, लेकिन अब दिल्ली की जनता इनका खेल समझ गयी है। उन्होंने कहा, हमने दिल्ली में मुफ्त स्वास्थ्य सेवा के लिये आयुष्मान भारत योजना को लागू करने के लिये 'आप-दा' के लोगों से अनुरोध किया है, लेकिन वे इसे लागू नहीं करना चाहते हैं। मैं दिल्ली के लोगों को बताना चाहता हूं कि इस योजना के कई लाभ हैं, लेकिन आप-दा के लोगों ने इस योजना के कार्यान्वयन में बाधायें पैदा की हैं। उन्होंने कहा कि ये आप-दा वाले तो अपने वायदों और बातों से ही पलट गये हैं। जन लोकपाल के नाम पर ये पार्टी बनी, लेकिन जन लोकपाल आज तक न तो दिल्ली में है और न ही पंजाब में है और न ही अब ये इसकी बात करते हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली में तो यह पार्टी इसका बहाना ढूंढ लेती है, लेकिन पंजाब में तो इनकी सरकार है, ये वहां भी लोक पाल नहीं बना रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा, इस बार दिल्ली के शत-प्रतिशत युवाओं का वोट भाजपा-राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को ही मिलने वाला है। दिल्ली का युवा चाहता है कि यहां रोजगार-स्वरोजगार के अवसर बढ़ें, दिल्ली स्टार्टअप हब बने, यहां उसकी युवा आकांक्षा के हिसाब से काम करने वाली सरकार हो। इसलिये दिल्ली के युवा की पहली पसंद भाजपा है। दिल्ली का युवा आप-दा वालों से नफरत करता है और उन्हें सजा देने के मूड में है।

नागरिक केन्द्रित दृष्टिकोण अपनाएं अधिकारीः राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

नयी दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने अधिकारियों को नागरिक-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने और निर्णय लेते समय समाज के कमजोर तथा वंचित वर्गों की जरूरतों और आकांक्षाओं को ध्यान में रखने की सलाह दी है। भारतीय रक्षा लेखा सेवा और भारतीय दूरसंचार सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के एक समूह ने बुधवार को यहां राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की। राष्ट्रपति ने परिवीक्षार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि वे भारत की विकास यात्रा में परिवर्तनकारी क्षणों में सेवाएं दे रहे हैं। उभरती प्रौद्योगिकी, तेजी से सूचना का प्रसार और बदलते वैश्विक परिदृश्य एक जटिल लेकिन रोमांचक स्थिति बना रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि भारत के समावेशी विकास और इसे वैश्विक रूप से अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने उन्हें अपने कर्तव्यों का पालन करते समय हमेशा नागरिक-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने और बढ़ावा देने की सलाह दी। उन्हें निर्णय लेते समय समाज के कमजोर और वंचित वर्गों की जरूरतों और आकांक्षाओं को ध्यान में रखना चाहिए।

जूट का न्यनतम समर्थन मूल्य 5650 रूपये प्रति क्विंटल

नयी दिल्ली, एजेंसी। सरकार ने वर्ष 2025-26 के लिए जूट का न्यूनतम समर्थन मूल्य 315 रूपये बढाकर 5650 रूपये प्रति क्विंटल करने का निर्णय लिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को यहां हुई केन्द्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में इस आश्य के प्रस्ताव को मंजूरी दी गयी। केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने मंत्रिमंडल की बैठक के बाद एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढोतरी से उत्पादन पर 66.8 प्रतिशत का मुनाफा सुनिश्चित होगा। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014-15 में जूट का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2400 रूपये प्रति क्विंटल था जो अब 5650 रूपये पहुंच चुका है जो क 2.35 गुना की बढोतरी है। उन्होंने कहा कि इस निर्णय से पश्चिम बंगाल, असम और बिहार जैसे राज्यों को विशेष रूप से फायदा होगा। सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार वर्ष 2014-15 से 2024-25 की अवधि के दौरान जूट उत्पादक किसानों को दी गई एमएसपी राशि 1300 करोड़ रुपये है जबकि वर्ष 2004-05 से 2013-14 की अवधि के दौरान दी गई राशि 441 करोड़ रुपये थी। देश में 40 लाख किसान परिवारों की आजीविका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जूट उद्योग पर निर्भर करती है। लगभग 4 लाख श्रमिकों को जूट मिलों और जूट के व्यापार में प्रत्यक्ष रोजगार मिलता है। पिछले वर्ष 1 लाख 70 हजार किसानों से जूट खरीदा गया था। देश में 82 प्रतिशत जूट किसान पश्चिम बंगाल के हैं, जबकि शेष असम और बिहार में हैं और जूट उत्पादन में इनकी 9-9 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। भारतीय जूट निगम मूल्य समर्थन संचालन करने के लिए केंद्र सरकार की नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है और ऐसे संचालन में होने वाले नुकसान, यदि कोई हो, की पूरी भरपाई केंद्र सरकार द्वारा की जाएगी।

कर्नाटक में सड़क हादसे में 11 लोगों की मौत

बेंगलुरु, एजेंसी। कर्नाटक में उत्तर कन्नड़ जिले के अरेबिले इलाके में बुधवार सुबह एक सड़क हादसे में 11 लोगों की मौत हो गयी। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि कुछ सब्जी विक्रेता ट्रक में सवार होकर कुमता बाजार जा रहे थे। इसी दौरान ट्रक रास्ता भटक गया और गहरी घाटी में गिर गया। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दारमैया ने शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और उन्हें सहायता देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा, राज्य सरकार इस कठिन समय में प्रभावित परिवारों को सहायता सुनिश्चित करेगी। स्थानीय पुलिस ने तुरंत घटनास्थल पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया तथा घायलों को तत्काल देखभाल के लिए नजदीकी चिकित्सा सुविधाओं में स्थानांतरित किया। केंद्रीय मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने सड़क सुरक्षा चिंताओं को दूर करने की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

दिल्ली दंगे के आरोपी ताहिर हुसैन को झटका, अंतरिम जमानत पर एकमत नहीं पीठ

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली दंगे के आरोपी ताहिर हुसैन की अंतरिम जमानत याचिका पर सुप्रीम कोर्ट की दो जजों की पीठ एकमत नहीं है। दो जजों की पीठ में से एक जस्टिस पंकज मित्तल ने ताहिर हुसैन की याचिका खारिज कर दी। वहीं दूसरे जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह ने याचिका को मंजूर कर लिया। ताहिर हुसैन आगामी दिल्ली चुनाव में एआईएमआईएम उम्मीदवार है और उसने चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत की मांग करते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। अब मामला मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना के सामने रखा जाएगा और वे मामले पर सुनवाई के लिए नई पीठ का गठन करेंगे। जस्टिस पंकज मित्तल ने अपने आदेश में कहा कि ताहिर हुसैन बीते पांच साल से जेल में बंद है। की दंगे में अहम भूमिका थी। उसने दंगे के दौरान कमांड सेंटर की तरह काम किया। उसके घर से हथियार बरामद किए गए। वहीं जस्टिस अमानुल्लाह ने अपने आदेश में कहा कि ताहिर हुसैन

जम्मू-कश्मीर के बधाल में रहस्यमयी बीमारी से 17 मौतें

3 नए मरीज मिले, गांव अब कंटेनमेंट जोन, भीड़ पर रोक, खाना-पीना प्रशासन देगा

राजौरी, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के राजौरी के गांव बधाल को कंटेनमेंट जोन बनाया गया है। यहां रहस्यमयी बीमारी से 44 दिनों में 3 परिवारों के 17 लोगों की मौत के बाद बुधवार को यह फैसला लिया गया। यहां अब भीड़ इकट्ठा होने पर रोक लगा दी गई है। मंगलवार को एक और बुधवार को दो मरीज और सामने आए। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मंगलवार को 25 साल के युवक एजाज अहमद की तबीयत बिगड़ी थी। पहले उसे जीएमसी जम्मू लाया गया था। फिर पीजीआई चंडीगढ़ रेफर किया गया। गांव में हुई मौतों की वजह अभी सामने नहीं आई है। गांव में 7 दिसंबर से 19 जनवरी के बीच संदिग्ध परिस्थितियों में ये मौतें हुई हैं। मंगलवार को मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला गांव में निरीक्षण के लिए पहुंचे थे। इसके बाद प्रशासन ने गांव को कंटेनमेंट जोन बनाने का फैसला लिया। पहला जोन उन परिवारों को कवर कर रहा है, जिनमें मौतें हुई हैं। इन परिवारों के घरों को सील कर दिया गया है और सभी लोगों के लिए यहां पर एंट्री बैन कर दी गई है। परिवार वालों को भी यहां जाने की अनुमति नहीं दी जा रही है। उन्हें यहां जाने के लिए अधिकारियों की मंजूरी लेनी होगी।

महाकुंभ में योगी सरकार की कैबिनेट बैठक पर भड़के अखिलेश यादव

कुंभ राजनीतिक कार्यक्रम और फैसले लेने का स्थान नहीं

लखनऊ, (संवाददाता)। समाजवादी पार्टी संस्थापक सदस्य जनेश्वर मिश्र की पुण्यतिथि पर बुधवार को उन्हें श्रद्धांजलि देने के बाद सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव का ने योगी सरकार पर तीखा हमला किया। अखिलेश ने तंज कसते हुए कहा कि कुंभ और प्रयागराज वह स्थान नहीं हैं, जहां पर राजनीतिक कार्यक्रम और फैसले लिए जाएं। वहां की गई कैबिनेट की बैठक राजनीतिक है। कुंभ के स्थान पर इसे आयोजित करके भाजपा राजनीतिक संदेश देना चाहती है। अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी भूमाफिया पार्टी बन गई है। लखनऊ, गोंडा ही नहीं प्रभु श्रीराम की धरती अयोध्या की ही रजिस्ट्री चेक कर लें तो सबसे ज्यादा खरीदारों में आप भाजपा के लोगों को ही पाएंगे।

अजय माकन ने केजरीवाल पर निशाना साधा

आप सरकार पर लगाया 382 करोड़ के घोटाले का आरोप

नयी दिल्ली। कांग्रेस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजय माकन ने बुधवार को दिल्ली की आम आदमी पार्टी (आप) सरकार के श्स्वास्थ्य मॉडलश् पर गंभीर आरोप लगाए। साथ ही कांग्रेस नेता ने नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) की रिपोर्ट का हवाला देते हुए आप सरकार के तहत कथित भ्रष्टाचार को उजागर किया। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अजय माकन ने दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि आज मैं सबके सामने आप के पाप की पहली कड़ी रखना चाहता हूं। दिल्ली में एक ऐसे नेता हैं, जिन्होंने अपनी पार्टी इसलिए बनाई थी, ताकि वो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ सकें। उस जमाने में केजरीवाल सीएजी रिपोर्ट के आधार पर ही कांग्रेस पर आरोप लगाते थे। इस समय सीएजी की 14 ऐसी रिपोर्ट हैं, जिसमें केजरीवाल सरकार के ऊपर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप हैं, लेकिन अब वो रिपोर्ट सामने नहीं आ रहीं। ऐसे में हम अरविंद केजरीवाल से पूछना चाहते हैं कि इस रिपोर्ट में हेल्थ से जुड़े मामले में 382 करोड़ का घोटाला कैसे है? कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि सीएजी रिपोर्ट कहती है कि दिल्ली में पिछले 10 साल में केवल तीन अस्पताल बनकर तैयार हुए। इनमें एक का एक्सटेंशन है और इनकी शुरुआत कांग्रेस के समय हुई थी। लेकिन इन हॉस्पिटल को बनने में समय तो ज्यादा लगा ही, बल्कि जितने का टेंडर था, उससे ज्यादा पैसा खर्च हुए। उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी अस्पताल बनाने में 314 करोड़ रुपये, बुराड़ी हॉस्पिटल बनाने में 41 करोड़ रुपये और मौलाना आजाद हॉस्पिटल बनाने में 26 करोड़ रुपये फालतू में खर्च किए गए। सीएजी की रिपोर्ट कहती है कि 2007-15 के बीच 15 प्लॉट दिल्ली सरकार ने एक्वायर किए, लेकिन कहीं भी काम शुरू नहीं हुआ। 2016-17 से लेकर 2021-22 तक इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट में जितने पैसे मिले, उनमें से 2,623 करोड़ रुपए खर्च ही नहीं हो पाया।

रोशन रोशन हो गए लुटा वतन पर प्राण

⇨ अमर शहीद ठाकुर रोशन सिंह की स्मृति में कवि सम्मेलन संपन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

शाहजहांपुर। काकोरी ट्रेन एक्शन डे के महानायक ठाकुर रोशन सिंह जन्मोत्सव समारोह के अंतर्गत मंगलवार रात्रि को ठाकुर रोशन की स्मृति में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम ठाकुर रोशन सिंह जन्मोत्सव समिति की ओर से नवादा दरोबस्त में आयोजित जन्मोत्सव समारोह कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि मैनपुरी से पधारे कवि सतीश समर्थ ने अमर बलिदानी ठाकुर रोशन सिंह को अपनी रचनाओं से काव्यांजलि अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। मां वीणा वादिनि की वंदना कवि कुलदीप दीपक ने इन पंक्तियों से की, अर्चना मैं करूं रात दिन आपकी। शक्ति का मां मुझे दान कर दीजिए। वंदना में चरण रज कणों की करूं, स्वर मुझे आप ऐसा प्रखर दीजिए। ओज के सशक्त हस्ताक्षर सुशील दीक्षित विचित्र ने रचना पाठ करते हुए कहा, विद्रोहों को कुचला जाता, दमन किया जाता है। दुश्मन को जिंदा ही यारों दफ़न किया जाता है।। गीतकार विजय ठाकुर ने कुछ यूं रचना पाठ किया, एक उम्र आई मधु ऋतु सी ऐसे निकल गई, जैसे फंसी हाथ से कोई मछली फिसल गई। कवि उमेश चंद्र सिंह ने पढ़ा, देखना चाहो शहीदों ने दिया क्या देश को, अपना सब कुछ देश पर कुर्बान करके देखिए। कवि और साहित्यकार डॉ प्रदीप वैरागी ने कुछ यूं रचना पाठ किया,रोशन रोशन हो गए ,लुटा वतन पर प्राण। उनका जीवन लक्ष्य था,धरती का कल्याण। कार्यक्रम का कुशल संचालन कवि और साहित्यकार डॉ. सुरेश मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में सभी कवियों को अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह भेंटकर कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभाग प्रचारक धर्मेन्द्र धवल, ईशपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

आदेश यादव ने कथावाचक को पैसों का हार और पगड़ी पहनकर किया सम्मानित

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

शाहजहांपुर। थाना परौर क्षेत्र के गांव पृथ्वीपुर में माता रानी मंदिर पर चल रही श्रीमद् भागवत कथा का 7 वें दिन हवन यज्ञ व विशाल भंडारे के साथ समापन हो गया। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालुओं ने हवन कुंड में आहुति डाली और प्रसाद ग्रहण किया।मंदिर परिसर में श्रीमद् भागवत कथा के अंतिम दिन सुबह पंकज यादव शास्त्री ने पूजा-अर्चना के साथ हवन यज्ञ शुरू कराया। इस दौरान तमाम यजमानों ने आहुतियां डाली। इसके बाद कलश विसर्जन शोभायात्रा निकाली गई। पवित्र कलशों के विर्सजन के बाद विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। और कथावाचक आदेश कुमार शास्त्री को पृथ्वीपुर गांव के ही आदेश कुमार यादव ने उन्हें पगड़ी और पैसों का हार पहना कर सम्मानित किया। उसके बाद उनकी विदाई की।इस मौके पर चौधरी आदेश यादव,चौधरी देवेंद्र यादव,सचिन यादव (कोटेदार),केपी यादव,प्रभाकर यादव,सुधाकर यादव,सोनू पाल,सुभाष पाल आदि भक्त गण मौजूद रहे।

23 जनवरी को अनावासीय भवनों, आरआरसी सेन्टर, अमुत सरोबर, सामुदायिक शौचालय, वृहद गौ संरक्षण केन्द्र

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरूरानी ने बताया है कि जिलाधिकारी महोदय के निर्देशानुसार अधोहस्तक्षरी द्वारा 23 जनवरी 2025 को प्रातः 10 बजे थाना सवायजपुर में अनावासीय भवनों का निरीक्षण किया जायेगा, इसके अलावा 11 बजे आरआरसी सेन्टर, अमुत सरोबर एवं सामुदायिक शौचालय पाण्डेपुर, 12 बजे वृहद गौ संरक्षण केन्द्र अमिरता तथा 12.30 बजे विकास खण्ड कार्यालय भरखनी का निरीक्षण किया जायेगा। सीडीओ ने संबंधित विभाग के अधिकारियों एवं खण्ड विकास अधिकारी व कर्मचारियों को निर्देश दिये है कि निरीक्षण के दौरान अद्यावधिक सूचनाओं सहित उपस्थित रहे।

शराब के ठेके को हटाने की मांग को लेकर कस्बाईयो ने प्रशासन से लगाई गुहार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता मैनपुरी

कुरावली। कुरावली कस्बा निवासी लोगो ने जी.टी रोड बस अड्डा पर देशी शराब दुकान को हटाने की मांग को लेकर प्रशासन से गुहार लगाई है।कस्बाईयो का कहना है कि यह शराब की दुकान आसपास के क्षेत्र में अशांति और गन्दगी फैला रही है और स्थानीय लोगों, खासकर महिलाओं और बच्चों के लिए परेशानी का कारण बन रही है। कसवाईयो ने आबकारी विभाग से गुजारिश की है कि इस शराब के ठेके को स्थानांतरित कर किसी अन्य स्थान पर ले जाया जाए। ग्रामीणों ने यह भी कहा कि इस शराब की दुकान के कारण क्षेत्र में अपराध बढ़ रहे हैं और शांतिपूर्ण माहौल खराब हो रहा है। कस्बे के लोंगो ने अपने हस्ताक्षर सहित एक ज्ञापन प्रशासन को सौंपा है। ज्ञापन में उन्होंने शराब के ठेके को हटाने की मांग को दोहराया है और आशा व्यक्त की है कि प्रशासन उनकी मांग पर सकारात्मक कार्रवाई करेगा। रजनीश वर्मा युगल राठौर सुनील कुमार रितिक भटनागर गुडियर मयंक गुप्ता अंकित गुप्ता ने आदि।

शिविर में महिलाओं एवं बालिकाओं को किया गया जागरूक

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ, के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हरदोई, के अध्यक्ष/जनपद न्यायाधीश संजीव शुक्ला सचिव/अपर जिला जज भूपेंद्र प्रताप के निर्देशानुसार तहसील विधिक सेवा समिति सदर सचिव/तहसीलदार सचिन्द्र कुमार शुक्ला के निर्देशन मे महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा सम्मान एवं स्वावलंबन हेतु मिशन शक्ति विशेष अभियान के पांचवें चरण के संचालन हेतु महिलाओं एवं बालिकाओं से संबंधित विभिन्न विधिक अधिकारों से संबंधित विषय पर विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन डा. राममनोहर लोहिया महाविद्यालय हरदोई में किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्राचार्या डा. अर्चना पाण्डे की शिविर का संचालन पी. एल. वी. अमित सिंह द्वारा किया गया जानकारी देते हुए कानूनी अधिकार पोश एक्ट 2013, घरेलू हिंसा अधिनियम 2005, पाक्सो एक्ट 2012, गर्भधारण पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम महिला सशक्तिकरण के विषय में कार्यस्थल पर महिलाओं का लैंगिक उत्पीड़न अधिनियम 2013, बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 आदि के विषय में जानकारी दी। पी.एल.वी.श्यामू सिंह द्वारा वीमेन हेल्पलाइन नंबर 1090 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर 1076 डायल 112 के विषय में जानकारी दी गई व, राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली द्वारा जारी कानूनी सहायता के लिए टोल फ्री नंबर 15100 आदि के बारे मे जानकारी दी गई तथा नालसा द्वारा चलाई जा रही मुख्य योजनाओं के विषय में जानकारी दी । प्राचार्या द्वारा महिलाओं को भारतीय संविधान में वर्णित पुरुषों के समान की महिलाओं को मौलिक अधिकारों के साथ-साथ अन्य विभिन्न विधिक अधिकार प्रदान किए गए हैं जिससे महिलाएं समाज में पुरुषों के समान सुरक्षा सम्मान पद व प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके की जानकारी दी गई तथा शिविर में अध्यापक गण व अधिक संख्या मे छात्राएं उपस्थित रही।

जिलाधिकारी अभिलाषा शर्मा ने राजस्व संग्रहण एवं राजस्व विभाग के कार्यों की समीक्षा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - कन्हैया सिंह

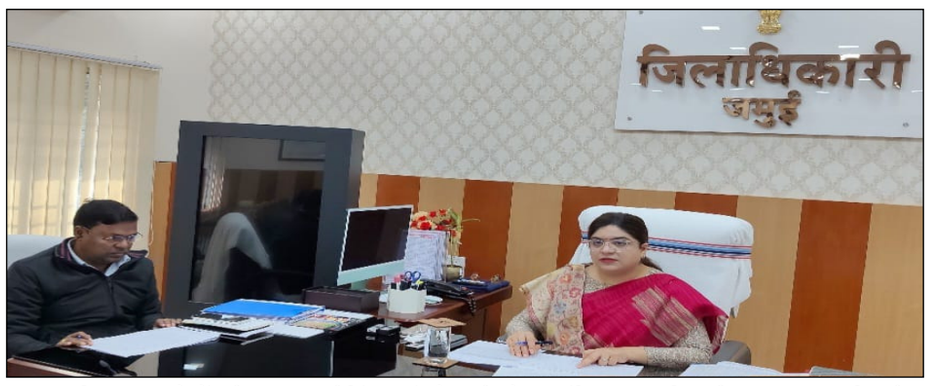

जमुई पटना। जिलाधिकारी अभिलाषा शर्मा ने समाहरणालय स्थित कार्यालय प्रकोष्ठ में राजस्व संग्रहण एवं राजस्व विभाग से संबंधित कार्यों को लेकर जिले के सभी अंचलाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में राजस्व संग्रहण , दाखिल खारिज , भूमि सीमांकन , ई-रेवेन्यू कोर्ट , सक्सेसन म्यूटेशन , पार्टीशन म्यूटेशन , सर्टिफिकेट , परिमार्जन प्लस , ई-मापी , अभियान बसेरा-टू , आरसीएमएस , एग्री सेन्सस फ़ेज़-टू , भू-समाधान , न्यायालय वाद समेत विभिन्न विषयों की समीक्षा की और जरूरी निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने संबंधित विभागों को निर्धारित लक्ष्य के अनुसार राजस्व संग्रहण सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। इस दरम्यान उन्होंने दाखिल खारिज मामलों का समयबद्ध निष्पादन सुनिश्चित करने पर बल दिया। दस्तावेजों की गहन जांच के बाद निर्णय लें। नियमित रूप से ई-रेवेन्यू कोर्ट करने और ऑनलाइन रिपोर्ट अपडेट करने की बात कही। विभिन्न विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए अंचल में भूमि चिन्हित करने को लेकर भी सभी अंचल अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिया। उन्होंने अधिक से अधिक सर्वेक्षक वास विहीन परिवारों को भूमि आवंटित करने का निर्देश दिया। वहीं आधार सीडिंग एवं ई-मापी से सम्बंधित लंबित मामलों को लेकर देरी करने पर संबंधित पदाधिकारियों को कड़ी फटकार लगायी। आगे उन्होंने सभी राजस्व कर्मचारियों को अपने लॉग-इन में लंबित आवेदनों का ससमय निष्पादन किए जाने का निर्देश दिया। विभागीय लक्ष्य के अनुरूप भू लगान वसूली करने पर भी बल दिया। अपर समाहर्ता सुभाष चंद्र मंडल , डीसीएलआर मो. तारिक रजा , अनुमंडल पदाधिकारी अभय कुमार तिवारी , जिला खनन पदाधिकारी आदि नामित जन बैठक में उपस्थित थे। अंकित करने वाली बात है कि डीएम के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन से राज्य स्तरीय रैंकिंग में जमुई जिला दिसम्बर 2025 के राजस्व रैंकिंग में अप्रत्याशित सुधार हुआ है एवं जिले की रैंकिंग 38 जिलों में 31 से 19 हो गयी है। राज्य स्तर पर जमुई जिला तीव्रतम गति से रैंकिंग में सुधार किया है।

कार्य स्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकथाम निषेध और निवारण के तहत आयोजित हुआ प्रशिक्षण

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार, उ.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के तत्वाधान में मा. जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हरदोई की अनुमति से कार्य स्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकथाम, निषेध और निवारण अधिनियम 2013 विषय पर विधिक जागरूकता कार्यक्रम/प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जनपद न्यायालय हरदोई के दस कक्षीय भवन के सभागार में किया गया।कार्यक्रम का संचालन सिविल जज जू.डि. जीशान खान द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में सौम्या द्विवेदी एन.जी.ओ. निदेशक समाधान अभियान द्वारा न्यायिक अधिकारियों को सम्मानित किया गया ततपश्चात कार्य स्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकथाम निषेध और निवारण अधिनियम 2013 आयोजित जागरूकता/प्रशिक्षण कार्यक्रम में सौम्या द्विवेदी एन.जी.ओ. निदेशक समाधान अभियान द्वारा महिलाओं का उत्पीड़न रोकथाम,निषेध एवं निवारण अधिनियम 2013 विषय पर संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अधिनियम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान समय में जो महिलाएं अपने घरों से बाहर निकल कर कार्य करती हैं। यह अधिनियम उन सभी महिलाओं के लिए बनाया गया है। इस अधिनियम में कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ हो रहे उत्पीड़न की रोकथाम किस प्रकार की जाएगी इसके बारे में जानकारी दी।उन्होंने महिलाओं का यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 विषय पर जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों व अधिवक्तागण को विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम के समापन में अपर जिला जज द्वितीय सपना त्रिपाठी द्वारा सौम्या द्विवेदी एन.जी.ओ. निदेशक समाधान अभियान को एक जीवित पौधा देकर कार्यक्रम के सफल आयोजन पर सम्मानित किया गया।इस अवसर पर अपर जिला जज प्रथम प्रीती श्रीवास्तव, अपर जिला जज द्वितीय सपना त्रिपाठी, अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भूपेन्द्र प्रताप व समस्त न्यायिक अधिकारीगण, एवं महिला अधिवक्तागण व जनपद न्यायालय समस्त कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

गुवाहाटी में धुबरी जिले से प्रकाशित होने वाले एकमात्र असमिया दैनिक और साप्ताहिक दुर्नीतिर दर्पण समाचार पत्र की 10 वीं वर्षगांठ समारोह

तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ

असम। धुबरी जिले से प्रकाशित एकमात्र असमिया दैनिक और साप्ताहिक समाचार पत्र दुर्नीतिर दर्पण ने आज अपनी 10 वीं वर्षगांठ को एसआर लॉज, सिक्स माइल्स, गुवाहाटी में एक रंगारंग कार्यक्रम के साथ मनाया। कई कार्यक्रमों के साथ आज आयोजित कार्यक्रम की खुली बैठक की अध्यक्षता दुर्नीतिर दर्पण अखबार के वरिष्ठ पत्रकार डिब्रूगढ़ के प्रशांत सैकिया ने किया । आज की वर्षगांठ समारोह के बीच में अखबार के पत्रकारों के बीच एक अंतरंग चर्चा के साथ-साथ असम के धुबरी जिले के समाचार क्षेत्र को संभालने वाले दिवंगत पत्रकार दिलीप कुमार चक्रवर्ती मेमोरियल अवार्ड के अलावा कई गणमान्य व्यक्तियों को समाज में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया । इस अवसर पर आज वर्ष 2025 के लिए डिब्रूगढ़ जिला साहित्य सभा के प्रकाशन सचिव और जिला साहित्य सभा पत्रिका के संपादक, जाने-माने लेखक, कहानीकार, %चाचनी गौरव पुरस्कार% से सम्मानित, पीडब्ल्यूडी विभाग के वर्तमान अधीक्षण अभियंता प्रशांत सैकिया को दिवंगत पत्रकार दिलीप कुमार चक्रवर्ती मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित किया गया। प्रशांत सैकिया को साहित्य और संस्कृति के साथ-साथ सामाजिक जीवन में उनके विशिष्ट योगदान के लिए अखबार समूह द्वारा इस अवार्ड के लिए चुना गया था। आज के कार्यक्रम में अखबार से जुड़े दो पत्रकारों को यंग जर्नलिस्ट अवार्ड और यंग ब्रेवरी अवार्ड प्रदान किया गया जो क्रमशः जाह्नू शाम सोनोवाल और रुमिय मेहदी है। इस अवसर पर कई पत्रकारों को सम्मानित भी किया गया। दुर्नीतिर दर्पण अखबार के संपादक सायेद अली खान द्वारा आरंभ किये गये इस बैठक को राष्ट्रीय ओर क्षेत्रीय अखबार में पत्रकारिता करने वाले वरिष्ठ पत्रकार पंकज नाथ, दिवंगत पत्रकार दिलीप कुमार चक्रवर्ती स्मृति पुरस्कार से सम्मानित प्रशांत सैकिया और मंच पर उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने संबोधित किया। आज की वर्षगांठ समारोह में असम के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में पत्रकारों ने भाग लिया और इस आयोजन की भव्यता में इजाफा किया।

समाहर्ता को स्मृति चिन्ह देकर दिया सम्मान

तीसरा विकल्प न्यूज़ - कन्हैया सिंह

जमुई पटना। बिहार सरकार , उर्दू निदेशालय , मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के निर्देश पर जिला उर्दू भाषा कोषांग के प्रभारी पदाधिकारी जटाशंकर पांडे ने समाहरणालय स्थित कार्यालय प्रकोष्ठ में जिलाधिकारी अभिलाषा शर्मा से शिष्टाचार मुलाकात की और उन्हें स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर उर्दू अनुवादक मो. सादिक उपस्थित थे। अंकित करने वाली बात है कि जिला उर्दू भाषा कोषांग ने बीते 16 जनवरी को फ़रोग-ए-उर्दू सेमिनार , कार्यशाला एवं मुशायरा का आयोजन किया था। इसमें विद्वत जनों ने हिस्सा लिया और इसके प्रचार-प्रसार को तबज्जो दी थी। डीएम ने सेमिनार , कार्यशाला एवं मुशायरा कार्यक्रम के सफल आयोजन पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि इसके प्रचार-प्रसार के लिए यथोचित कदम उठाए जाएंगे। जिला उर्दू भाषा कोषांग के प्रभारी पदाधिकारी को निष्ठा के साथ देय दायित्वों का निर्वहन किए जाने का संदेश दिया।

चोरी की दो ट्रॉली व एक ट्रैक्टर बरामद, तीन आरोपी गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। रात के समय गन्ने से लदी ट्रॉली चोरी करने वाले गिरोह का पुलिस ने खुलासा किया है। पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार करते हुए उनकी निशानदेही पर चोरी की दो ट्रॉली व एक ट्रैक्टर तथा घटना में प्रयुक्त एक बोलेरो बरामद की है। बरामद एक ट्रॉली कोतवाली शाहाबाद व एक बेहटा गोकुल क्षेत्र से चोरी की गईं थी। बेहटा गोकुल थाना क्षेत्र के ग्राम स्वारा पुरवा मजरा बेहटाधीरा निवासी सुमनपाल ने बीती 28 दिसंबर को थानें पर तहरीर दी, जिसमें कहा कि भम्मापुरवा के निकट धर्म कांटे के पास गन्ने से भरी ट्रॉली अज्ञात चोरों ने चोरी कर ली है। तहरीर के आधार पर पुलिस ने रिपोर्ट छानबीन शुरू कर दी। इसके बाद 6 जनवरी को कोतवाली शाहाबाद क्षेत्र के फत्तेपुर गयंद निवासी श्याम पुत्र हेतम ने थानें पर तहरीर देकर रिपोर्ट दर्ज कराई, जिसमें बताया कि गन्ने से भरी उनकी ट्रॉली गांव के बाहर खड़ी थी, जिसे अज्ञात चोरों ने चोरी कर लिया। तहरीर के आधार पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज ली। बुधवार को बेहटा गोकुल पुलिस ने ट्रॉली चोरी की दोनों घटनाओं का खुलासा कर तीन आरोपियों को चोरी की दो ट्रॉली, एक ट्रैक्टर व एक बोलेरो (घटना में प्रयुक्त) सहित गिरफ्तार किया है। जिन्होंने अपना नाम व पता सुशील कुमार निवासी रमुआपुर व अशोक निवासी पुष्पताली मजरा भड़ायल थाना टड़ियावां हरदोई, तथा अमित पाल निवासी सहरोईया थाना नैमिष जनपद सीतापुर बताया है। प्रभारी निरीक्षक रमेश कुमार द्विवेदी ने बताया कि तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया। मामले में वैधानिक कार्रवाई प्रचलित है।

परिवार नियोजन का सन्देश जन जन तक पहुंचाने को रवाना हुआ सारथी वाहन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। मिशन परिवार विकास अभियान के अवसर पर अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. जीतेन्द्र श्रीवास्तव ने परिवार नियोजन जागरूकता के लिए सारथी वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस मौके पर अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने कहा कि लोगों को परिवार नियोजन के साधनों के बारे में जानकारी देने के लिए यह सारथी वाहन रवाना किया जा रहा है 7 सारथी वाहन के माध्यम से परिवार नियोजन के आधुनिक साधनों का वितरण भी किया जायेगा। डाक्टर जीतेन्द्र ने बताया कि मिशन परिवार विकास अभियान 18 जनवरी से 31 जनवरी के मध्य संचालित होगा। अभियान में परिवार नियोजन के साधनों का प्रचार प्रसार, परामर्श एवं परिवार नियोजन के साधनों का वितरण किया जायेगा। सभी चिकित्सा इकाईयों पर नियत सेवा दिवस आयोजित किए जायेंगे इनमें नसबंदी सहित सभी परिवार नियोजन सेवाएं बास्केट आफ च्वाइस के माध्यम से दी जायेगी। अभियान के अंतर्गत परिवार नियोजन की महत्ता एवं परिवार नियोजन के साधनों की स्वीकार्यता को बढ़ाने के लिए सभी उप स्वास्थ्य केंद्रों पर सास बहू बेटा सम्मेलन आयोजित किए जायेंगे। इस अवसर पर डा मनोज सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

बच्चों के पोषण संबंधी कार्यों में किसी भी स्तर की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी जिलाधिकारी

☐ समाज में जागरूकता लाने सुपोषित व स्वस्थ समाज बनाने एवं शिक्षा की अलख जगाने में महिला एवं बाल विकास विभाग की भूमिका महत्वपूर्ण है डीएम

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता हरदोई

हरदोई। गत दिवस जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में विवेकानंद सभागार में महिला एवं बाल विकास विभाग की बैठक आहूत की गई बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं सेवाओं और कार्यक्रमों की गहन समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए जिलाधिकारी ने कहा कि सभी सीडीपीओ अपने-अपने आंगनबाड़ी केंद्रो का निरीक्षण करे साथ ही आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से संवाद करते हुए उन्हें फील्ड पर निकालकर सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आम जनमानस को दें समाज में जागरूकता लाने सुपोषित व स्वस्थ समाज बनाने एवं शिक्षा की अलख जगाने में महिला एवं बाल विकास विभाग की भूमिका महत्वपूर्ण है जिलाधिकारी ने जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहां की वह जनवरी 2024 से जनवरी 2025 तक सीडीपीओ बार किए गए कार्यों का विवरण उपलब्ध कराए समीक्षा बैठक करते हुए जिला अधिकारी ने आंगनबाड़ी केंद्रो की आवश्यकता और संसाधनों की भी जानकारी ली उन्होंने कहा कि सभी आंगनबाड़ी केंद्रो के लिए बर्तन और जरूरी सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए जिलाधिकारी ने यह भी निर्देश दिए की ब्लॉकवाईज सीडीपीओ आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को प्रशिक्षण दे जिलाधिकारी ने जिला कार्यक्रम अधिकारी से आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका का आधार व मोबाइल सत्यापन का कार्य की भी गहन समीक्षा की तथा निर्देशित किया कि इन कार्यों में भी तेजी लाए जच्चे बच्चों के पोषण संबंधी कार्यों में किसी भी स्तर की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी टीम भावना के साथ सभी लोग अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी ईमानदारी के साथ करना सुनिश्चित करें बैठक में अपर जिलाधिकारी प्रियंका सिंह, स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी मनोज कुमार, अपर जिला सूचना अधिकारी दिव्या निगम ,सभी सीडीपीओ व अन्य अधिकारीगणों उपस्थित रहे!

संवाद सामाजिक संस्थान ने नीति आयोग और एवीए की साझेदारी का किया समर्थन, लखनऊ को बाल विवाह मुक्त बनाने का किया वादा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण के इको सिस्टम को मजबूती देने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए भारत सरकार के नीति आयोग और एसोसिएशन फॉर वालंटरी एक्शन (एवीए) ने देश के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा और सशक्तीकरण तथा अगले एक साल में देश के 104 प्रखंडों के 15000 गांवों को बाल विवाह मुक्त घोषित करने के लिए हाथ मिलाया है। इस आशय के मंतव्य पत्र (एस.ओ.आई) पर नई दिल्ली में दस्तखत किए गए। नीति आयोग और एवीए की इस साझेदारी का स्वागत और समर्थन करते हुए संवाद सामाजिक संस्थान के सचिव अतुल तिवारी ने कहा कि इस कदम से उनकी कोशिशों को एक नई उर्जा और गति मिली है और वे जनपद लखनऊ, बाराबंकी, प्रतापगढ को बाल मजदूरी, बाल विवाह, बच्चों की ट्रैफिकिंग और बाल यौन शोषण जैसे बच्चों के खिलाफ सभी तरह के अपराधों से मुक्त कराने के प्रयासों में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे। एवीए और संवाद सामाजिक संस्थान दोनों ही बाल अधिकारों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए देश के 416 जिलों में काम कर रहे 250 से भी ज्यादा गैरसरकारी संगठनों के नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन के सहयोगी हैं। दो-वर्षीय एस.ओ.आई के तहत अगले दो सालों में देश के 73 जिलों के आकांक्षी प्रखंडों के इन गांवों के आर्थिक रूप से बेहद कमजोर उन परिवारों के बच्चे जो शोषण, उत्पीड़न, बाल मजदूरी या बाल विवाह दृष्टि से संवेदनशील हैं। संवाद सामाजिक संस्थान के निदेशक अतुल तिवारी ने कहा हम भारत सरकार के 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान पर अमल करते हुए अपने जिले को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिये प्रयास कर रहे हैं। एवीए और नीति आयोग की इस साझेदारी से हमारे प्रयासों को और बल मिलेगा। एवीए के साथ मिलकर हम जिले को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिए प्रतिबंध हैं। इसके साथ ही हम जिले में बाल सुरक्षा के व्यवस्थागत तंत्र को मजबूत बनाने के लिए भी काम करेंगे। साथ मिलकर हम सुनिश्चित करेंगे कि हमारे बच्चों को एक सुरक्षित वातावरण में पुष्पित-पल्लवित होने के अवसर मिलें। बाल विवाह और बच्चों की ट्रैफिकिंग की निगरानी और रोकथाम के लिए सभी लक्षित गांवों में पंचायत स्तर पर लोगों की आवाजाही और विवाहों के ब्योरे दर्ज करने के लिए रजिस्टर रखे जाएंगे। स्कूल नहीं जा पाने वाले बच्चों को शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों से जोड़ा जाएगा, जबकि हाशिये के व्यक्तियों और परिवारों को सरकारी जनकल्याण योजनाओं से जोड़ा जाएगा। इस अवसर पर एसोसिएशन फॉर वॉलंटरी एक्शन के कार्यकारी निदेशक धनंजय टिंगल ने कहा, आज समाज के सबसे कमजोर वर्गों के सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए हम गर्व और कृतज्ञता महसूस कर रहे हैं। साझा प्रयासों से हमारा लक्ष्य 2025 के अंत तक इन विकास खण्ड को बाल विवाह मुक्त बनाना और दूसरों के लिए एक मिसाल कायम करना है। सरकारी निकायों, समुदायों और नागरिक समाज संगठनों राज्य जिला और विकास खण्ड जैसे हर स्तरों पर एकजुट होकर काम करने और साझा प्रयासों से सही मायनों में बच्चों की सुरक्षा का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

भारतीय एकता युवा मोर्चा - एक परिचय

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। भारतीय एकता युवा मोर्चा कोई राजनैतिक दल नहीं है, यह एक संगठन है, जिसके प्रमुख उद्देश्य गरीबी उन्मूलन झोपड़ी झुग्गियों में रहने वालों के लिए घर रोजगार, शिक्षा महिला सशक्तिकरण भिक्षावृत्ति मुक्त समाज है। संगठन के संस्थापक इंजीनियर दीपक लाल श्रीवास्तव के निजी प्रयास और विचारधारा को बल मिला आचार्य प्रफुल्लकांत शुक्ला और अमन श्रीवास्तव के साथ से। संगठन के प्रमुख उद्देश्य में भिक्षुक समाज एवं झुग्गी झोपड़ी में रहने वालों की मदद करते हुए सरकार को उनके हालत से अवगत कराना, महिला उत्पीड़न, दहेज, दहेज हत्या, बालश्रम, श्रमिक शोषण, सांप्रदायिक हिंसा, कारागार में निरुद्ध बंदियों के उत्पीड़न, पुलिस प्रशासन द्वारा उनके कार्यों में विफलता, मौलिक अधिकारों के हनन, सामाजिक व जातिगत अत्याचार, वृक्षारोपण, सरकार द्वारा चलाई जा रही रोजगार परक योजनाओं को जन जन तक पहुंचना है।महिला सशक्तिकरण अभियान के तहत राष्ट्रीय स्तर पर महिला प्रकोष्ठ का गठन कर ममता मिश्रा को महिला प्रकोष्ठ का राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। वृक्षारोपण को सफल बनाने हेतु प्रतिमाह विशेष दिवस (जयंतियों) पर एवं नवागत सदस्यों द्वारा वृक्षारोपण किया जाता है। नर नारायण सेवा संगठन संस्थापक महोदय ने 2021 में सभी कार्यकर्ताओं से ठंडक में जरूरतमंदों के लिए ठंडी के कपड़े (पुराने स्वेटर लोई कंबल आदि) वितरित करने का सफल अभियान प्रतिवर्ष चलाया जाता है। नववर्ष 2022 में संगठन ने अपनी उपस्थिति सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर दर्ज की। वर्ष 2022 में विधानसभा चुनाव के अंतर्गत अपनी शर्तों पर राजनैतिक दल भारतीय जनता पार्टी को समर्थन दिया गया और तब से भारतीय जनता पार्टी ने हमारे संगठन को अपने सहयोगी दल के रूप में स्वीकृति प्रदान की। मार्च 2022 में हमारे संगठन की विचारधारा से जुड़ने वाले कार्यकर्ताओं की संख्या 20000 (बीस हजार) के ऊपर थी जो कि आज बढ़कर दो लाख (2,00,000) के ऊपर है। जिसमें वार्ड अध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, पांच राज्यों के प्रदेश अध्यक्ष आदि शामिल हैं। प्रतिवर्ष हिन्दू नववर्ष के उपलक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण जागरूकता अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण अभियान और स्वच्छ भारत अभियान के तहत स्वच्छता अभियान चलाया जाता है। समय समय पर झोपड़ झुग्गियों में रहने वाले बच्चों को पढ़ने के लिए मुफ्त किताबें व स्कूल बैग वितरित करते हुए शिक्षा के प्रति जागरूक भी किया जाता है। नववर्ष 2025 में सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा अपने अपने कार्य क्षेत्र में संगठन की विचारधारा व उद्देशों के प्रति लोगों को जागरूक करते हुए वृक्षारोपण, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छ भारत अभियान, गरीबी उन्मूलन, रोजगार परक एवं जागरण हेतु कार्य व सर्व शिक्षा अभियान का प्रचार प्रसार किया जाता है। संस्थापक महोदय ने संगठन में फेरबदल करते हुए राष्ट्रीय कार्यकारणी का पुनर्गठन करते हुए शरद श्रीवास्तव को संगठन में महत्वपूर्ण पद देते हुए दिलीप श्रीवास्तव को राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर मनोनीत करते हुए अन्य कार्यकर्ताओं को विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर संगठन की जिम्मेदारी दी। भारतीय एकता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय प्रबंध कार्यकारणी में सदस्यों की संख्या 11 है जो कि दीपक लाल श्रीवास्तव, दिलीप श्रीवास्तव, विवेक सिंह, ओ.पी. श्रीवास्तव, मोहम्मद अनवर अली, हलीम अंसारी, आशुतोष चौधरी, आदित्य विक्रम साही, सुमित सिंह, प्रीतेश वर्मा, जसवीर दलाल है। भारतीय एकता युवा मोर्चा के सदस्यों का संस्थापक महोदय द्वारा 2024 - 2025 में राष्ट्रीय कार्यकारणी में पदवार किया गया मनोनयन निम्नवत है - आचार्य प्रफुल्लकांत शुक्ला सह संस्थापक, शरद श्रीवास्तव सह संस्थापक, दिलीप श्रीवास्तव राष्ट्रीय अध्यक्ष, अमर कुमार मिश्रा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, एजाज बालियान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विवेक सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, किरण सिंह राष्ट्रीय अध्यक्ष (महिला प्रकोष्ठ), इंद्रा यादव राष्ट्रीय उपाध्यक्ष(महिला प्रकोष्ठ), आकाश उपाध्याय राष्ट्रीय सचिव, रवि प्रकाश श्रीवास्तव राष्ट्रीय उप सचिव, शाहनवाज अख्तर राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, राहुल जैन राष्ट्रीय सचिव है। आज के इस तकनीकी युग में जहां सबकुछ डिजिटल होता जा रहा है, वहां सबसे बड़ी समस्या उत्पन्न होती है हमारे पिछड़े समाज को सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं और योजनाओं की जानकारी उन लोगो तक नहीं पहुंचती हैं जिनके पास डिजिटल सुविधा नहीं है। ऐसे में हमारे संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा लोगों को जागरूक किया जाता है और आगे भी किया जाता रहेगा। संगठन की विचारधारा को जन जन तक पहुंचते हुए महिला शशक्तिकरण, गरीबी उन्मूलन, प्रौढ़ शिक्षा और सर्व शिक्षा अभियान के तहत सभी को शिक्षा का महत्व समझाना और प्रेरित करते हुए समाज को नई ऊंचाइयों पर ले जाना चाहते हैं एवं संगठन के विचार को आगे ले जाते हुए आप सभी से संस्थापक, तथा अध्यक्ष, व पूरी टीम हर जिले में जन जन तक संगठन से लोगो को जोड़ने का काम किया जाये। बड़े बदलाव की जरूरत है जिसमें सहयोग की जरूरत है, एकता में बल है और बल में शक्ति है, शक्ति होगी तो बात बनेगी। भारतीय एकता युवा मोर्चा 2020 में गठित की गई थी। जल्द ही टीम की विस्तार किया जाएगा, राष्ट्रीय में विस्तार किया जाएगा। प्रदेश टीम में विस्तार किया जाएगा, लक्ष्य 2027 का है भारतीय एकता युवा मोर्चा किसी एक पार्टी का नहीं है। अभी हाल में भाजपा के साथ काम कर रही है। 2027 में अगर हमारी संगठन के विचारधारा पर कुछ सहमति नहीं बनती तो संगठन की पूरी टीम अपनी विचार के साथ संघर्ष जारी रहेगा। हमारा लक्ष्य 2027 विधान सभा की है। 2022में झुग्गी झोपड़ी को लेकर मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री के यह आवास देने की बात कही गई। झुग्गी मुक्त करने की आग्रह किया गया। संगठन के प्राथना पत्र पे सुनवाई हुई। रोजगार दिया जा रहा है, आवास दिया जा रहा है, झुग्गी मुक्त किया जा रहा है, शिक्षा अभियान चलाएं जा रहे है, संगठन ऐसे प्रयास जीवन भर हर एक पीड़ित, वंचित लोगों के लिए लड़ाई लड़ती रहेगी। संगठन को विधान सभा तक पहुंचाने की जरूरत है इसके लिए संघर्ष जारी है। लक्ष्य है विधान सभा में कम से कम 2 सीट... क्योंकि अब लक्ष्य प्रदेश का है, लक्ष्य उन लोगो के लिए काम करना है जो हर चीज से वंचित है उनके लिए संगठन काम करती है। संगठन भाजपा के बड़े नेता के संपर्क में है। संगठन को बड़े बड़े नेता से प्रोत्साहन मिला है। प्रशंसा मिली है। सम्मानित भी किया गया है, संगठन आज तक निस्वार्थ समाज की सेवा, भाजपा के हित के लिए निस्वार्थ काम करते आए है। राष्ट्रीय अध्यक्ष का कहना है कि संगठन को काफी समय से भाजपा कुछ संगठन को जुझारू कार्यकर्ता को जगह नहीं दिया गया, सम्मान नहीं दिया गया, जिसके वजह से भारतीय एकता युवा मोर्चा को काफी समय से भाजपा निराशा मिली, सारी बाते भाजपा के नेताओं को बतायी गयी है। लोक सभा यूपी चुनाव में हम लोग बाहरी समर्थन थे, वोट भी थे लेकिन प्रचार प्रसार में बढ़ चढ़ के हिस्सा नहीं लिया गया। लोक सभा चुनाव रिजल्ट के बाद काफी विचार विमर्श के बाद संगठन 2027 की तैयारी बीजेपी के साथ कर रही है।

22 रजब के मौके पर बाजारों में दिखी रौनक

➪ छठवें इमाम जाफर ए सादिक (अ.स.) के वसिले से कुंडे की नज़र का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। 22 रजब को इमाम जाफर ए सादिक (अ.स.) की याद में कुंडे की नज़र का आयोजन पूरे धार्मिक और सांस्कृतिक उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह परंपरा न केवल शिया बल्कि सुन्नी समुदायों में भी समान रूप से प्रचलित है, जो लखनऊ की गंगा-जमुनी तहज़ीब का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करती है। ये नज़र फजर की नमाज के बाद सवा किलो आटे की टिक्कियों पर दिलाई जाती है। महिलाएं इन टिक्कियों को रातभर मेहनत से तैयार करती हैं। टिक्कियों के कुंडे तैयार कर नज़र के रूप में बांटे जाते हैं। इसे मुबारक परंपरा माना जाता है, जिसमें मन्नत पूरी होने की उम्मीद की जाती है। लखनऊ के बाजारों में इस दिन मिठाई और टिक्कियों की खूब खरीदारी होती है। घर-घर में नज़र के आयोजन के साथ-साथ रिश्तेदारों और पड़ोसियों को नियाज बांटने की परंपरा सामाजिक एकजुटता को प्रोत्साहित करती है। इस आयोजन में गंगा-जमुनी तहज़ीब भी देखने को मिलती है शिया और सुन्नी दोनों समुदायों की सहभागिता लखनऊ की सांप्रदायिक एकता और भाईचारे की मिसाल पेश करती है। यह त्योहार धार्मिक आस्था के साथ-साथ मानवता, एकता, और सांस्कृतिक पहचान का संदेश भी देता है। इमाम जाफर ए सादिक (अ.स.) की नज़र इस बात की याद दिलाती है कि परंपराएं न केवल धार्मिक होती हैं, बल्कि उनके माध्यम से समाज में प्रेम और भाईचारे का प्रसार भी होता है।

छोटे इमाम बाड़े शाही बावर्चीखाने की मरम्मत के लिए अफहाम-ए-ज़मा सोसाइटी ने ज्ञापन सौंपा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। बुधवार को शाही बावर्चीखाने की मरम्मत के संबंध में अनुरोध अफहाम-ए-ज़मा सोसाइटी, जो कि एक जनहित सेवा संस्था है और विगत 20 वर्षों से सामाजिक और धार्मिक कार्यों में सक्रिय है, आपके समक्ष एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय प्रस्तुत करना चाहती है। आपके अधीन हुसैनाबाद एंड एलाइड ट्रस्ट, अवध के तीसरे बादशाह मोहम्मद अली शाह बहादुर द्वारा 1839 में हज़रत इमाम हुसैन अ.स. की याद में स्थापित किया गया था। इस ट्रस्ट का उद्देश्य धार्मिक कार्यक्रमों और समाजसेवा से जुड़े कार्यों को संचालित करना है। इसी ट्रस्ट के अंतर्गत छोटा इमामबाड़ा और इसके भीतर स्थित शाही बावर्चीखाना भी शामिल है। यह बावर्चीखाना धार्मिक कार्यक्रमों के दौरान वितरित किए जाने वाले तबर्रुक (प्रसाद) को तैयार करने के लिए बनाया गया था। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों से शाही बावर्चीखाने की उचित मरम्मत और देखभाल न होने के कारण, वहां पर तबर्रुक तैयार नहीं हो पा रहा है, और इसे बाहरी स्रोतों से मंगवाना पड़ रहा है। हमारी संस्था ने हुसैनाबाद एंड एलाइड ट्रस्ट के चेयरमैन (जिलाधिकारी, लखनऊ) और संबंधित अधिकारियों से इस बावर्चीखाने की मरम्मत कराने के लिए कई बार ज्ञापन प्रस्तुत किया है। हमें बताया गया है कि पुरातत्व विभाग द्वारा मरम्मत पर रोक लगाई गई है और यह कार्य आपके अधिकार क्षेत्र में आता है हमारी संस्था आपसे विनम्र अनुरोध करती है कि शाही बावर्चीखाने की अविलंब मरम्मत करवाई जाए, ताकि दस मोहर्रम और अन्य धार्मिक अवसरों पर पूर्व की भांति तबर्रुक का निर्माण वहीं पर किया जा सके। हम आपके इस सहयोग के लिए सदा आभारी रहेंगे।

सरकार ने लखनऊ के छोटा बड़ा इमामबाड़ा को वक्फ बोर्ड की संपत्ति मानने से किया इनकार

➢ शिया धर्मगुरु मौलाना सैफ अब्बास का करारा जवाब

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार ने लखनऊ के छोटा और बड़ा इमामबाड़ा को वक्फ बोर्ड की संपत्ति मानने से इनकार किया है। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार, वक्फ बोर्ड 14,000 हेक्टेयर जमीन पर दावा करता है,जिसमें से 11,700 हेक्टेयर जमीन सरकारी मानी गई है। इसमें लखनऊ के छोटा इमामबाड़ा, बड़ा इमामबाड़ा और बेगम हजरत महल पार्क जैसी प्रमुख इमारतें शामिल हैं।शिया धर्मगुरु मौलाना सैफ अब्बास ने इस सरकारी दावे पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि सरकार का यह आंकड़ा गलत है। उन्होंने जोर देकर कहा कि छोटा और बड़ा इमामबाड़ा वक्फ बोर्ड की संपत्ति हैं और सरकार का यह दावा तथ्यों पर आधारित नहीं है। इसके अतिरिक्त, मौलाना सैफ अब्बास ने छोटा इमामबाड़ा के गेट से दुकानों को हटाने के प्रशासनिक कदम की भी आलोचना की है। उन्होंने कहा कि कोर्ट के आदेश की आड़ में गरीब दुकानदारों को बेरोजगार किया जा रहा है और पहले सतखंडा चौकी को हटाया जाना चाहिए। उन्होंने इमारत की जर्जर स्थिति के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को जिम्मेदार ठहराया है।

युवक पर खौलती चाय फेंकने का आरोप, रिपोर्ट दर्ज

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। सरोजनीनगर में मंगलवार शाम चाय की दुकान पर खड़े एक युवक के ऊपर एक अन्य युवक ने अपने दो साथियों के साथ मिलकर उबलती हुई चाय डाल दी। जिससे वह बुरी तरह झुलस गया। बाद में निजी अस्पताल में उसका प्राथमिक उपचार कराया गया। पीड़ित ने सरोजनीनगर थाने में मामले की रिपोर्ट दर्ज कराई है। सरोजनीनगर के बदाली खेड़ा में रहने वाले तौफीक के मुताबिक मंगलवार शाम करीब 5:30 बजे वह ट्रांसपोर्ट नगर में खाना पैक कराने गया था। तभी वह आरटीओ ऑफिस के पास पंडित चाय वाले की दुकान पर खड़ा हो गया। तौफीक का आरोप है कि वहां पर पहले से खड़े अनुराग ने उसके ऊपर उबलती हुई चाय डाल दी। पीड़ित का कहना है कि उस दौरान आरोपी अनुराग के साथ में उसके दो साथी अमजद रजा व एक अज्ञात भी मौजूद थे। तौफीक का कहना है कि अनुराग द्वारा डाली गई उबलती चाय से वह बुरी तरह झुलस गया। बाद में उसने एक निजी अस्पताल में अपना प्राथमिक उपचार कराया। इसके बाद घटना की सूचना सरोजनी नगर पुलिस को दी। पुलिस ने तौफीक की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

समाचार

कोमल और रजत बंधे परिणय सूत्र में, आशीर्वाद देने आए तारे जमीन पे

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के प्रतिष्ठित कायस्थ परिवारों मे शामिल स्वर्गीय रघुवीर प्रसाद श्रीवास्तव के परिवार मे उनके बडे पुत्र बलबीर सरन श्रीवास्तव एवं सीमा श्रीवास्तव की पुत्री कोमल श्रीवास्तव का शुभ विवाह रजत श्रीवास्तव के साथ संपन्न हुआ, उक्त विवाह समारोह का आयोजन सीतापूर रोड स्थित कबीर मठ में बडे ही शान और शौकत के साथ संपन्न हुआ, जिसमे वर एव वधू को आशीर्वाद देने राजधानी के सभी वर्गो के लोग ऐसे उमड पडे जैसे तारे ज़मीन पे । कोमल एव रजत के विवाह के अवसर पर राजधानी की प्रसिद्ध गंगा जमुनी तहजीब की अदभुत छटा देखता ही बनती थी, जहाँ एक ओर मंत्रोचार के बीच विवाह संपन्न हो रहा था तो वही शानदार संगीत पर हिन्दू मुस्लिम सभी खुशी से झूम एव थिरकते नजर आ रहे थे । सनद रहे कि राजधानी लखनऊ सदैव से गंगा जमुनी तहजीब के लिए प्रसिद्ध रहा है, उक्त विवाह समारोह मे भी बडी संख्या मे मुस्लिम समुदाय से जुडे लोग भी वर वधू को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित रहे । बलबीर सरन श्रीवास्तव एवं सीमा श्रीवास्तव के साथ ही परिवार के अन्य वरिष्ठ सदस्यो मुख्य रूप से अखिलेश श्रीवास्तव, अवधेश श्रीवास्तव एडवोकेट, सवीता श्रीवास्तव, रूबी श्रीवास्तव, संजय श्रीवास्तव, रीना श्रीवास्तव, कौशल श्रीवास्तव, कैलाश श्रीवास्तव आदी परिवारिक सदस्यो ने अतिथियों का स्वागत किया एव भरपूर आवभगत की जिससे आने वाले अतिथी गदगद दिखे ।

आग में 70 हज़ार का माल जलकर राख, पीड़ित ने की मुआवजे की अपील

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

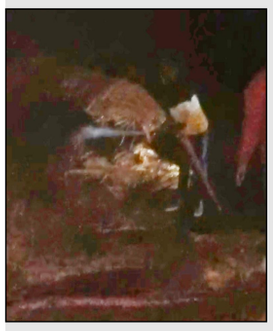

लखनऊ। मंगलवार की रात उस वक्त हड़कम मच गया जब रहीमाबाद निवासी रामकुमार के घर में अचानक आग लग गई। आग लगने की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई पुलिस ने रहीमाबाद फायर ब्रिगेड को आग लगने की सूचना दी। सूचना पाते ही फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और आग बुझाने का कार्य शुरू कर दिया कई घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया । मगर इस आग में जानकारी के मुताबिक 70 हज़ार का रखा हुआ धान पैरा जलकर राख हो गया। आग ने इतना विशाल रूप धारण कर लिया था अगर फायर ब्रिगेड मौके पर ना पहुंचती तो बराबर में रह रहे जानवर भी आग में झुलस जाते । यह आग ग्राम जालामऊ थाना रहीमाबाद के अंतर्गत रामकुमार जी के घर में लगी थी। आग लगने के संबंध में रामकुमारजी ने ब्लॉक प्रमुख से मुआवजे की अपील की है । साथी पीड़ित रामकुमारजी ने ये भी कहा यदि किसी की शरारत का परिणाम है, तो पुलिस को जांच का निर्देश दें। रामकुमारजी को न्याय और उचित मुआवजा मिल पाए। फिलहाल आग लगे की क्या वजह थी इसका कारण पता नहीं चल पाया

विधानभवन के सामने कमिश्नर ने ली परेड रिहर्सल की सलामी, जिलाधिकारी सहित कई प्रशासनिक अधिकारी रहे मौजूद

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में गणतंत्र दिवस के लिए तैयारियां जोरों पर हैं। इसके मद्देनजर बुधवार को विधान भवन के सामने परेड का रिहर्सल किया गया। परेड देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब ने रिहर्सल परेड की सलामी ली। इस दौरान जिलाधिकारी विशाख जी समेत कई प्रशासनिक व पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। विधान भवन के सामने स्कूली बच्चों, पुलिस, पीएसी व एनसीसी टीम ने परेड का रिहर्सल किया। स्कूली बच्चों का डांस देख लोगों ने अपने मोबाइल फोन में तस्वीरें कैद कीं। प्रत्यक्षदर्शी भी परेड का रिहर्सल कर रहे लोगों का उत्साहवर्धन कर रहे थे। परेड रिहर्सल के लिए विधान भवन से रूट बदला गया है, जिससे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। ड्यूटी करने वाले लोग जाम से जूझते नजर आए। एक घंटे से अधिक समय तक चली परेड रिहर्सल चारबाग, हुसैनगंज बर्लिंग्टन चौराहा, विधान भवन होते हुए केडी सिंह बाबू स्टेडियम पहुंची। मंडलायुक्त ने परेड में शामिल बच्चों से कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चे दो दिन तक अभ्यास करें और अपनी प्रस्तुति को और बेहतर बनाएं। जिलाधिकारी ने बताया कि गणतंत्र दिवस को लेकर लगातार तैयारियां चल रही हैं। 24 जनवरी को फुल ड्रेस रिहर्सल होगी।

मतदाता जागरूकता के लिए वॉकथान आज

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। स्वीप योजना के तहत राज्य स्तरीय वॉकथान का आयोजन 23 जनवरी को किया जाएगा। यह आयोजन केडी सिंह बाबू स्टेडियम होगा। वॉकथान में एनएसएस, भारत स्काउट गाइड, एनवाईके, खेल पर्सन और छात्र-छात्राओं सहित लगभग 1500 प्रतिभागी भाग लेंगे। वॉकथान को लेकर बुधवार को जिलाधिकारी विशाख जी अय्यर ने कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया और तैयारियों का जायजा लिया।वॉकथान का प्रारंभ सुबह 8 बजे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सामने से हजरतगंज रोड और सहारागंज होते हुए स्टेडियम के गेट नंबर-3 से प्रवेश कर स्टेडियम ग्राउंड पर समाप्त होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा रहेंगे। वॉकथान के समापन के बाद केडी सिंह बाबू स्टेडियम में ही मुख्य निर्वाचन अधिकारी सभी प्रतिभागियों को मतदाता शपथ दिलाएंगे। जिला निर्वाचन अधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि कार्यों को ससमय पूरा करवाए। कार्यक्रम में प्रतिभागियों के लाइनअप व अन्य व्यवस्थाओं के लिए सिविल डिफेंस के वालंटियर की तैनाती की जाए। साथ ही निर्देश दिया कि वॉकथान में शामिल होने वाले बच्चों के आवागमन के लिए बसों की व्यवस्था को सुनिश्चित कराए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने चिकित्सा विभाग को निर्देश दिया गया कि वॉकथान के पीछे एक एम्बुलेंस और एक एम्बुलेंस की व्यवस्था स्टेडियम में करें।

समाजवादी चिंतक पं. जनेश्वर मिश्र की पुण्य तिथि पर सपा मुखिया अखिलेश यादव ने दी श्रद्धांजलि

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने बुधवार को समाजवादी चिंतक पूर्व केंद्रीय मंत्री पंडित जनेश्वर मिश्र की पुण्य तिथि पर जनेश्वर मिश्र पार्क स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हे श्रद्धांजलि दी । इस अवसर पर अखिलेश यादव ने कहा कि पंडित जनेश्वर मिश्र जी समाजवादी आंदोलन के बड़े नेता थे। वह सादगी के प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने हमेशा नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव का साथ दिया और समाजवादी आंदोलन को आगे बढ़ाने का काम किया। पंडित जनेश्वर मिश्र जी ने समाजवादियों को संघर्ष का रास्ता दिखाया। अगर वे आज होते तो पीडीए की लड़ाई में सबसे आगे दिखाई देते। श्री यादव के साथ जनेश्वर मिश्र पार्क में पंडित जनेश्वर मिश्र की बेटी श्रीमती मीना तिवारी एवं उनके परिवार के विश्वभूषण तिवारी, चंद्र शेखर तिवारी, राहुल सिंह एवं सोनू यादव ने भी पुष्पांजलि अर्पित की। नेता विरोधी दल माता प्रसाद पांडे, पूर्व नेता विरोधी दल राम गोविंद चौधरी, राष्ट्रीय सचिव राजेंद्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल, सांसद सनातन पांडे, पूर्व सांसद आलोक तिवारी सहित सपा के वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं नेताओं ने भी पंडित जनेश्वर मिश्र जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की ।

राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान द्वारा तिरंगा की शान विषय पर काव्य एवं व्यक्तव्य गोष्ठी सम्पन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान द्वारा संस्थान कार्यालय में फतिरंगा की शानफ विषय पर काव्य/व्यक्तव्य गोष्ठी संपन्न हुई।गोष्ठी की अध्यक्षता अमरेंद्र द्विवेदी ने की। मुख्य अतिथि रत्नदीप दीक्षित, विशिष्ट अतिथि सुरेन्द्र विक्रम अस्थाना थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन संस्थान की महामंत्री डॉक्टर सीमा गुप्ता ने किया। कार्यक्रम का आरंभ मां सरस्वती जी की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलित करके किया गया। वाणी वंदना राज श्री दुबे ने किया। गोष्ठी में डॉक्टर सीमा गुप्ता, रत्नदीप दीक्षित, अमरेंद्र द्विवेदी, सुरेंद्र विक्रम अस्थाना, राम राज भारती, राज श्री दुबे, आदित्य तिवारी, सुरेन्द्र गौतम आदि ने राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्र भक्ति पर आधारित अपनी कविताओं, गीत, गजल, छंद एवं व्यक्तव्य से सबको भाव विभोर कर दिया। अंत में आदित्य तिवारी ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

खूबचंद ज्वेलरी शॉप में हर महीने लकी ड्रॉ कार्यक्रम, क्षेत्र मंत्री संजय गुप्ता ने पुरस्कार वितरण

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजिनी नगर। (गौरी बाजार) - खूबचंद ज्वेलरी शॉप पर हर महीने आयोजित होने वाले लकी ड्रॉ कार्यक्रम में इस बार एक खास मील का पत्थर देखा गया, जब क्षेत्र मंत्री संजय गुप्ता ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया और विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। यह कार्यक्रम शॉप पर आने वाले सभी ग्राहकों के लिए एक विशेष अवसर प्रदान करता है, माननीय पार्षद गीता देवी गुप्ता द्वारा प्रथम पुरस्कार, संतोष कुमार द्वितीय पुरस्कार सुनील कश्यप और तृतीय पुरस्कार अजय सिंह को वितरित किया गया। पुरस्कारों के साथ-साथ सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए। क्षेत्रीय मंत्री संजय गुप्ता ने इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति से इसे और भी गौरवमयी बना दिया। उन्होंने कहा, खूबचंद ज्वेलरी शॉप द्वारा आयोजित यह लकी ड्रॉ कार्यक्रम ग्राहकों के लिए एक शानदार पहल है। यह न केवल व्यापार को बढ़ावा देता है, बल्कि ग्राहकों के साथ जुड़ाव भी बढ़ाता है। विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार, से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही, इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी अन्य ग्राहकों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में कूपन या डिस्काउंट ऑफर दिए गए, जिससे वे अगली बार और भी खुशी से खरीदारी कर सकें। क्षेत्रीय मंत्री संजय गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि खूबचंद ज्वेलरी शॉप की ओर से हमारे ग्राहकों की संतुष्टि हमारी प्राथमिकता है, और इस लकी ड्रॉ कार्यक्रम के माध्यम से हम उन्हें धन्यवाद देना चाहते हैं। क्षेत्र मंत्री संजय गुप्ता की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम को और भी यादगार बना दिया। हम हर महीने इस कार्यक्रम का आयोजन करेंगे ताकि अधिक से अधिक लोग इसका हिस्सा बन सकें और पुरस्कार जीत सकें। कार्यक्रम के दौरान ड्रॉ का चयन पारदर्शी और निष्पक्ष तरीके से किया गया, और यह शॉप के समर्पित स्टाफ द्वारा सुनिश्चित किया गया कि सभी विजेताओं को सम्मानपूर्वक पुरस्कार प्राप्त हों। इस कार्यक्रम ने ग्राहकों के बीच उत्साह और उत्सुकता को बढ़ाया है, और खूबचंद ज्वेलरी शॉप को स्थानीय बाजार में और भी अधिक लोकप्रिय बना दिया है।अगला लकी ड्रॉ कार्यक्रम जल्द ही आयोजित होने जा रहा है।

सरोजनीनगर पुलिस ने लापता लड़के को दो घंटे में खोज कर खोए हुए पुत्र को किया मां को सौंपा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। राजधानी लखनऊ के थाना सरोजनीनगर क्षेत्र के अन्तर्गत बीती रात्रि करीब 10:00 बजे पूनम सिंह पत्नी स्वर्गीय राम सिंह निवासी हीरालाल नगर गौरी ने पुलिस को सूचना दी कि उसने पुत्र हर्ष सिंह उम्र करीब 14 वर्ष को मोबाइल फोन पर गेम खेलने को लेकर डांट दिया था । जिस कारण वह नाराज होकर घर से शाम करीब 7:30 बजे कहीं चला गया है । पूनम सिंह द्वारा दी गई अपने पुत्र की गुमशुदा होने की सूचना पर थाना सरोजनीनगर प्रभारी राजदेव प्रजापति ने नेतृत्व में पुलिस ने तत्काल कार्यवाही करते हुए गुमशुदा हर्ष को करीब 2 घंटे के अंदर ही तेलीबाग थाना क्षेत्र आशियाना से सकुशल बरामद कर उसकी मां व परिजनों को सुपुर्द किया गया । सरोजनीनगर पुलिस द्वारा तत्काल कार्यवाही से उनके पुत्र को सकुशल बरामद करने पर मां ने बेटे को वापस पाकर पुलिस की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए धन्यवाद दिया ।

संपादकीय

ट्रंप का टशन

यूं भी अमेरिका की सारी नीतियां अमेरिका से शुरू होकर अमेरिका पर ही समाप्त हो जाती हैं। लेकिन जब ट्रंप जैसा अप्रत्याशित व अमेरिका फर्स्ट का जयकारा लगाने वाला राष्ट्रपति सत्तासीन हो, तो दुनिया सांसत में ही रहेगी। शपथ ग्रहण के बाद जिस तरह असहज करने वाले कार्यकारी आदेश जारी किए गए, ये उसी की आहट है। लगता है अमेरिका के लिये स्वर्णयुग लाने का दावा करने वाले ट्रंप को लोकतांत्रिक मूल्यों, दुनिया की सेहत और वैश्विक पर्यावरण संरक्षण से कोई सरोकार नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन को दी जाने वाली बड़ी अमेरिकी मदद से हाथ पीछे खींचकर उन्होंने अपने मंसूबे जताए हैं। विश्व को ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों से बचाने के लिए प्रतिबद्ध पेरिस जलवायु समझौते से भी किनारा कर उन्होंने अपने इरादे जाहिर किए हैं। यह जानते हुए भी कि बीता साल दुनिया में अब तक का सबसे गर्म साल रहा था। यहां तक कि इन प्रभावों से पिछले दिनों लॉस एंजिल्स की भयावह आग ने अमेरिका के दरवाजे पर पिछले दिनों दस्तक दी है। वहीं दूसरी ओर तमाम आर्थिक मुश्किलों से जूझते व बेहतर भविष्य की तलाश में अमेरिका का रुख करने वाले प्रवासी उनके लिये दुश्मन नंबर वन हैं। जिनको रोकने के लिये अमेरिका की मैक्सिको सीमा पर आपातकाल की घोषणा कर दी गई है। मैक्सिको की सीमा पर दीवार बनाना उनका महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। वे लाखों अवैध प्रवासियों को अमेरिका से खदेड़ने की बात बार-बार कहते हैं। वहीं अमेरिका फर्स्ट की नीति के चलते वे चीन समेत अन्य विकासशील देशों पर अंधाधुंध टैरिफलगाकर मुनाफे का पलड़ा अमेरिका के पक्ष में झुकाने पर अड़े हैं। यहां तक कि उन्होंने ब्रिक्स देशों को चेताया है कि यदि डॉलर के मुकाबले वैकल्पिक मुद्रा चलन में लाने का प्रयास किया गया तो वे भारत,रूस व चीन आदि पर सौ फीसदी टैरिफ लगाएंगे। विशेष रूप से चीन उनके निशाने पर है, जो अमेरिका के नंबर एक दावे को चुनौती देने की क्षमता रखता है। दुनिया के तमाम देशों को उनके बड़बोले बयानों के मद्देनजर मुश्किल समय हेतु तैयार रहना चाहिए। दरअसल, केवल विकासशील व तीसरी दुनिया के देश ही नहीं, बल्कि ग्रीनलैंड पर कब्जे की मंशा के बयानों को लेकर यूरोपीय देशों में ट्रंप को लेकर खासी नाराजगी नजर आ रही है। पनामा नहर का प्रबंधन हासिल करने के बयानों पर भी तल्ख प्रतिक्रिया सामने आई है। कभी वे कनाडा को अमेरिका में शामिल करने के दावे करते हैं। आते ही कनाडा पर टैरिफबढ़ाकर उन्होंने अपने मंसूबे जाहिर किए हैं। पिछले कुछ वर्षों में महामारी के प्रभावों से उबरते हुए तमाम बीमारियों से जूझते विश्व को ट्रंप ने बड़ा झटका दिया है। मानवता के कल्याण को समर्पित डब्ल्यूएचओ की आर्थिक मदद बंद करने से विकासशील व गरीब मुल्कों का स्वास्थ्य तंत्र अब भगवान भरोसे रह जाएगा। यदि विश्व में फिर किसी महामारी की दस्तक होती है तो पूरी दुनिया में स्थितियां गंभीर होंगी। विश्व के सबसे शक्तिशाली लोकतंत्र में यूं पूंजीवादी सोच व नीतियों का वर्चस्व बेहद चिंता की बात है। जिस बात की चिंता पिछले दिनों निवर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडेन जता चुके हैं। लेकिन उग्र राष्ट्रवाद के खुमार में डूबे अमेरिकी कुछ सुनने को तैयार नहीं हैं। पर्दे के पीछे 'ट्रंप उदय' के पीछे दुनिया के सबसे अमीर पूंजीपतियों में शुमार एलन मस्क की भूमिका को लेकर भी सवाल उठाये जा रहे हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि अमेरिका फर्स्ट की नीतियों के प्रबल पैरोकार ट्रंप को दुनिया के सामाजिक, आर्थिक व सेहत के सरोकारों से कुछ भी लेना-देना नहीं है। कमोबेश यही स्थितियां अमेरिका की विदेश नीति में भी उजागर होंगी। फिलहाल, इस्राइल-हमास संघर्ष थमता दिख रहा है, लेकिन ये कब तक थमा रहता है, कहना कठिन है। जाते-जाते संघर्ष विराम का श्रेय लेने की होड़ में जो बाइडेन इस्राइल-हमास संघर्ष को फौरी तौर पर रोक तो गए हैं,लेकिन इसके लंबे समय तक थमे रहने के आसार कम ही हैं। वहीं ट्रंप रूस-यूक्रेन युद्ध को भी रुकवाने की बात कर रहे हैं,लेकिन वे अपने यूरोपीय सहयोगियों को नाराज करके इसमें कितना कामयाब होते हैं, ये भविष्य के गर्भ में निहित है।

श्रद्धांजलियों का महत्व्

फेसबुकिया संसार की कोई और खासियत हो या न, पर यह खासियत तो जरूर है कि फेसबुकिया भाई खुशी के मौके पर बधाई देने में कंजूसी कर जाएं तो कर जाएं, पर श्रद्धांजलि देने का मौका हाथ लगते ही अपरिचित को भी श्रद्धांजलि देने में देर नहीं लगाते। मुंह का कौर मुंह में तो हाथ का हाथ में। सच कहूं, लेखन में अब श्रद्धांजलियों के सिवाय मुझे और कुछ भी मौलिक नहीं दिख रहा। मेरे मरने के तुरंत बाद एक से बढ़कर एक मनमोहक, लोमहर्षक श्रद्धांजलियां इधर उधर से आने लगीं तो मैं मरने के बाद भी चिहुक उठा। आप सच नहीं मानेंगे, पर यह सच है कि दो मिनट में ही फेसबुक पर मुझे दी जाने वाली श्रद्धांजलियों का ज्वार आ गया। देखते ही देखते फेसबुक हैंग होने लगी। तब मुझे पहली बार पता चला कि मेरे दोस्त मुझे श्रद्धांजलि देने को वाह! कितने आतुर थे? सच्चे दोस्त वही होते हैं जो आपकी खुशी से जले भुने, पर ज्यों ही आप श्रद्धांजलि पाने के अधिकारी हो जाएं वे तमाम दूसरे जरूरी काम बंद कर सबसे पहले आपको मौलिक श्रद्धांजलि दें। अब सुरापान तो कर नहीं सकता था। इसलिए अपना अंतिम सिंगार किए जाने को लेकर पंडित जी के न आने तक मैं भी हल्के फुल्के कफन के नीचे अपने अमित्र मित्रों द्वारा मुझे दी जा रही श्रद्धांजलियों का मजे से रसपान करता रहा। हर श्रद्धांजलि को गौर से पढ़ता तो मरने के बाद भी कलेजा मुंह को आ जाता। कंबख्त साधारण से दोस्त भी दोस्त के मरने पर उसको श्रद्धांजलि देने को पता नहीं कहां से ऐसे ऐसे शब्द चुन चुन कर ला रहे थे? मित्रो! मैंने अपने जीवित रहते अपने बहुत से मित्रों को श्रद्धांजलियां दी थीं। पर श्रद्धांजलियों में ऐसा काव्य सौष्ठव पहली बार देख रहा था। अपनी श्रद्धांजलि में कोई मुझे देवात्मा बात रहा था तो कोई ब्रह्मात्मा। कोई मुझे सादगी की साक्षात् प्रतिमा बता रहा था तो कोई मुझे दोस्तों का दोस्त! अपने साथ मुझे पल भर को भी न रखने वाला कोई सदा सदा को मेरे ईश्वर में लीन होने की कामना कर रहा था तो कोई मेरा जिंदगी भर एक भी आग्रह न मानने वाला भगवान से आग्रह कर रहा था कि वे मुझ ताउम्र के चरणजीवी को बिना किसी विरोध अपना चरणजीवी बनाएं। मरने के बाद भाई साहब! चाहने वालों को तो छोड़िए, जो कभी सपने में भी न मिले हों, मत पूछिए वे भी मरने वाले के मरने पर उसको दी जाने वाली श्रद्धांजलियों के प्रति अहा! कितने उदार हो जाते हैं? मुझ पर यकीन नहीं होता तो तनिक अपने मरने का स्वांग करते अफवाहों से चमचमाते सोशल मीडिया पर अपने दिवंगत होने की खबर फैला दीजिए। फिर देखिए अपने को मिलती श्रद्धांजलियों का कमाल! इधर मैं था कि मरने के बाद भी उनकी श्रद्धांजलियां बटोरता बटोरता मरा जा रहा था। काश! उस वक्त मेरे आसपास जो कोई दूसरा भी मरा होता तो उसे भी अपने हिस्से की श्रद्धांजलियां बटोरने में लगा देता। असल में मरने के बाद अपने मित्रों से मिली दिल खुश कर देने वाली ऐसी श्रद्धांजलियां ही तो मरने वाले की एकमात्र पूंजी होती हैं। मेरे मरने पर मुझे असीम एक से एक मौलिक, नूतन श्रद्धांजलियां देने वाले हे मेरे शुभचिंतको! आपके लिए भगवान से मेरा बस यही निवेदन! भगवान मेरे सिधारने पर मुझे मौलिक श्रद्धांजलियां देने वालों को भविष्य में इससे भी बेहतर श्रद्धांजलियां लिखने की शक्ति प्रदान करें। भगवान से मैं यह भी विनम्र निवेदन करता हूं कि मित्रों के दिवंगत होने के साथ साथ उनका श्रद्धांजलि लेखन कौशल श्रद्धांजलि श्रद्धांजलि निखरता जाए।

ट्रम्प के न बुलाये जाने के लिये मोदी खुद ही जिम्मेदार हैं

डॉ. दीपक पाचपोर

“ एक समय था जब किसी भी देश के राष्ट्राध्यक्ष, खासकर बड़े देशों के राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में कौन आमंत्रित है और कौन नहीं, यह बहुत मायने नहीं रखता था ”

एक समय था जब किसी भी देश के राष्ट्राध्यक्ष, खासकर बड़े देशों के राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में कौन आमंत्रित है और कौन नहीं, यह बहुत मायने नहीं रखता था। देखा यह जाता था कि किस व्यक्ति के सर्वोच्च पद पर आसीन होने से किस तरह की आंतरिक व बाह्य नीति अपनाई जायेगी? हाल के वर्षों में शपथ ग्रहण समारोह एक इवेंट बन गया है जो घरेलू मोर्चे के साथ-साथ विदेशी मित्र हों या शत्रु अथवा तटस्थ देश-सभी को साधने का अवसर माना जाने लगा है। जब से यह परिपाटी चल पड़ी है, तब से मेहमानों की सूची इस मौके की सबसे अधिक गौरपूर्वक देखे जाने वाली बात बन गयी है। अतिथियों का चयन शपथ लेने वाले व्यक्ति पर काफी कुछ छोड़ दिया गया है और वह इस अवसर पर कौन उपस्थित रहेगा यह तय करने के साथ ही यह संदेश भी दे देता है कि अपने कार्यकाल में वह किसके साथ कैसे सम्बन्ध निभायेगा (या निभायेगी)। देश और पार्टी की नीतियां एवं विचारधाराएं अब गौण हो चली हैं तथा ज्यादातर राष्ट्राध्यक्ष जनता को अपने बूते हांकने लगे हैं। विशेष रूप से वे शासक जिनका रवैया अपेक्षाकृत कम या अलोकतांत्रिक होता है। ऐसे शासक अपने देश की चिर-परिचित नीतियों के साथ-साथ वैश्विक संतुलन बिगाड़ने में भी सक्षम होते हैं। अमेरिका के नये बने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को लेकर इसी तरह की आशंकाएं हैं। उनकी वाणी जैसी स्वच्छंद है, कार्यप्रणाली वैसी ही उच्छृंखल। 4 साल के अंतराल के बाद फिर से लौटे ट्रम्प जब दुनिया के सबसे ताकतवर राष्ट्रपति के पद की सोमवार को वाशिंगटन डीसी में शपथ ले रहे थे तो उनके अतिथियों के रूप में उन्हीं के जैसे अनेक दक्षिणपंथी नेता मौजूद थे। अतिथियों के रूप में किसे बुलाना है और किसे नहीं, इसके सामान्यतरू दो उद्देश्य होते हैं- एक, नयी शुरुआत करने की इच्छा की अभिव्यक्ति। याद करें 2014 में पहली बार नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री की शपथ ले रहे थे तब उन्होंने सार्क देशों के प्रमुखों को आमंत्रित किया था। पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को भी बुलाकर मोदी ने संदेश दिया था कि वे पड़ोसी मुल्कों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाना चाहते हैं। यह हो नहीं सका वह अलग बात है जिसके अनेक कारण हैं। दूसरे, ऐसे राष्ट्राध्यक्ष अपने जैसे राष्ट्रपतियों-प्रधानमंत्रियों का कुनबा बनाते हैं। ये मिलकर दुनिया पर राज करने की इच्छा रखते हैं या सम्मिलित गुट के रूप में अपने हितों को साधते हैं। अमेरिका और उसके जैसे बड़े देश सम्बन्ध निर्वाह में अपनी शर्तें लाद सकते हैं। वहां के राष्ट्रपति किसे बुलाते हैं किसे नहीं, इसका असर उनके अपने देशों पर कम आमंत्रित या अनामंत्रित देशों पर अधिक पड़ता है- जैसे मोदी को न बुलाये जाने पर अमेरिकियों को फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन वह भारत में हंगामे का सबब बन गया है। मोदी नहीं बुलाये गये हैं तो यह साफ संकेत हैं कि आने वाले समय में अमेरिका को लेकर भारत की परेशानियां बढ़ सकती हैं। पिछले एक दशक से भारत की स्थिति अंतरराष्ट्रीय पटल पर चाहे जो रही हो, लेकिन यह सच है कि मोदी ने भारत की विदेश नीति को राष्ट्रीय की बजाये अपनी व्यक्तिगत छवि निर्माण की नीति बना रखा है। वे राष्ट्राध्यक्षों के ग्रुप फोटो में कहां खड़े होते हैं, किसके साथ चाय पी रहे हैं, किसे झूला झुला रहे हैं- यह अधिक महत्वपूर्ण बना दिया गया है। इसलिये वे संसदीय परम्पराओं के अनुरूप अपनी विदेश यात्राओं की रिपोर्ट न संसद में पेश करते हैं और न ही राष्ट्रपति को देते हैं। अपने कारोबारी मित्रों को साथ लेकर घूमना और उन्हें विदेशों ठेके दिलाना तो विदेश नीति नहीं हो सकती। दो देशों के सम्बन्धों को मोदी ने व्यक्तिगत दोस्ती के प्रदर्शन का विषय बना लिया है। वे किसके गले लगते हैं, किसे अंगूठी भेंट करते हैं और किस देश में जाकर वहां का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पाते हैं, इसका उपयोग हेडलाइन मैनेजमेंट के लिये तो किया जा सकता हैय या खुद को अपने लोगों के बीच देवता के रूप में स्थापित करने में भी वह उपयोगी होगा, परन्तु वह देशहित में रत्ती भर भी नहीं है। जिन लोगों के लिये मोदी विश्वगुरु हैं, वे सोचें कि आज वे अनामंत्रित क्यों हैं। दरअसल, इसका आभास ट्रम्प को होगा कि मोदी अपने देश में ही कमजोर पड़ गये हैं। भारत ने अपनी पूरी वैदेशिक नीति को मोदी के जरिये कुछ लोगों के व्यवसाय संवर्धन अथवा हथियार खरीद तक सीमित कर दिया है। अमेरिका जानता है कि फिलहाल मोदी अपनी जमीन पर ही ठीक से खड़े नहीं हो पा रहे हैं। मोदी को यदि ट्रम्प ने नहीं बुलाया है, तो यह उनकी अपनी पराजय है। इसे भारत की हार, नाकामी या अपमान के रूप में नहीं देखा जाना चाहिये क्योंकि भारत की चिर-परिचित विदेश नीति तटस्थता की रही है। उस विदेश नीति को मोदी कभी से मटियामेट कर चुके हैं। वर्तमान दौर की यह उनकी अपनी निजी यात्राएं बन गयी है वरना हमारी विदेश नीति में न तो ताकतवर राष्ट्राध्यक्षों की चिरौरी करने की परम्परा रही है और न ही किसी भी कदम के लिये किसी शक्तिशाली राष्ट्रपति के सामने अपने सुरक्षा सलाहकार को भेजकर इस बात की सफाई देने की रही कि हमारे राष्ट्रपति ने आपके साथ युद्ध कर रहे देश के राष्ट्रपति के कंधे पर हाथ रखकर चलहकदमी क्यों की। हमारे किसी भी पूर्व प्रधानमंत्री ने अपनी विदेश यात्राओं के दौरान पार्टी या सरकार के खर्च पर विदेशी जमीन पर भीड़ नहीं जुटाई, न ही किसी के लिये नारे लगवाये कि श्अबकी बार फलां-फलां की सरकारश। तमाम बड़े देशों में हमारे पीएम जाते रहे हैं और वहां की सड़कों के दोनों ओर वहीं की जनता जोश व सम्मान के साथ उनका अभिवादन करती थी- अमेरिका हो या उसका धुर विरोधी तत्कालीन सोवियत रूस।

वाहियात लड़ाई वाला महत्वपूर्ण चुनाव

अरविन्द मोहन

दिल्ली को सबसे अच्छी तरह जानने और दिल्ली विधान सभा चुनाव को काफी करीब से जानने के आधार पर कहा जा सकता है कि देश की राजनीति में अपने कद से काफी बड़ा स्थान रखने के बावजूद इतना वाहियात चुनाव प्रचार कहीं नहीं होता। बड़े मुद्दे बताते हुए दिल्ली राज्य सरकार के अधिकार और उसकी सीमाओं की चर्चा भी हो सकती है लेकिन यहां दिल्ली का यातायात (खासकर जाम की समस्या), दमघोंटू प्रदूषण, शिक्षा और स्वास्थ्य से लेकर हर मामले में कई-कई स्तर का साफबंटवारा (और हर दल के नेता और अधिकारियों के एक अलग ही स्तर पर जीने), संसाधनों के दुरुपयोग (जिसमें सबसे ज्यादा नेताओं के प्रचार का खर्च अखरता है), गंदगी के साम्राज्य, अपराधों, की भरमार, बेतहाशा शराबखोरी और महंगाई-बेरोजगारी चुनावी मुद्दा बनते ही नहीं। सत्ता के साथ समृद्धि का केंद्र बनाकर दिल्ली जिस तरह दूरदराज के गरीब इलाकों के बेरोजगार और बीमार लोगों को बसने और इलाज के लिए आकर्षित करती है उसमें यहां कोई व्यवस्थित नीति बने यह चर्चा सिरे से गायब है- जबकि पुरबिया प्रेम अचानक सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा बन गया है। उसमें जरा सी चूक या मन के तह में बैठे पुरबिया द्वेष के बाहर आते ही बवाल मच जाता है-भाजपा के एक नामी प्रवक्ता तो झा जी को झान्टूजी कहकर शहीद भी हो चुके हैं। चुनाव के समय अचानक पुरबिया समाज के महत्वपूर्ण होने के मसले की चर्चा से पहले यह देखना जरूरी है कि जैसे ही कोई गंभीर मसला उठता है दोनों प्रमुख पक्ष एक दूसरे को दोषी बताने का नाटक चलाकर चुप्पी साध लेते है। भाजपा शिक्षा का रोना रोएगी तो आप वाले प्रिंसिपल और अध्यापकों की नियुक्ति की फाइल लाट साहब द्वारा रोकने की बात करेंगी। अदालत पेड़ कटवाने पर उप राज्यपाल को दोषी बताते हैं तब भी आप के नेताओं को उस पर दबाव बनाने की नहीं सूझती। जबकि वे लगभग रोज उनकी दखलंदाजी की या अधिकारियों द्वारा उनका निर्देश न मानने की शिकायत करते हैं। इस बार तो शक्तियों के बंटवारे का सवाल उठा ही नहीं वरना अभी तक दिल्ली चुनाव में केंद्र बनाम राज्य एक मुद्दा रहा करता था। भाजपा झुग्गी झोपड़ी वालों को मकान देने का आप का वायदा पूरा न होने का आरोप लगाएगी तो आप वाले डीडीए से जमीन न मिलने का बहाना ढूंढ लेते हैं। दंगा, अपराध, प्रदूषण, यमुना सफाई, गंदगी, कूड़े का पहाड़ जैसे हर मुद्दे पर यही खेल चलता है और बात आई गई हो रही है और यह अखरता ज्यादा है क्योंकि चौथी बार आप और भाजपा आमने सामने है तथा सारा जोर भी लगा है पर मुद्दों के मामले में खेल और बिगड़ा है। 27 साल से दिल्ली की सत्ता से बाहर रहने और महाबली नरेंद्र मोदी की सत्ता के ठीक नीचे अरविन्द केजरीवाल का एक अलग तरह की राजनीति शुरू करना और बार बार-बार भाजपा को पटखनी देना मोदी-शाह को जरूर अखरता है लेकिन जिस तरह आप और अरविन्द खड़े रहा करते हैं और दिल्ली से बाहर हर जगह की चुनावी लड़ाई में मोटे तौर पर भाजपा को ही मदद करते रहे हैं उससे भाजपा उनकी मौजूदगी से ज्यादा शिकायत नहीं लगती। पंजाब में जरूर आप की सत्ता हो जाने से अरविन्द को बल मिला है लेकिन वहां कांग्रेस का हारना भाजपा को अच्छा ही लगा है। दिल्ली की लड़ाई भाजपा चुनाव के अलावा भी लगातार लड़ती है लेकिन जिस तरह उसने अपना स्थानीय नेतृत्व खत्म किया है और इस चुनाव में भी साफ कमजोरियां दिखा रही है वह उसके इस डर को भी बताता है कि कहीं कांग्रेस और राहुल गांधी मजबूत न हों जाएं। भाजपा ने शराब नीति के घोटाले और मुख्यमंत्री आवास के मसले पर कुछ श्अतिश् कर दिया हो लेकिन इन्हें मुद्दा बनाने में वह सफल रही, चुनाव में उस पर जोर न देना समझ नहीं आता। केजरीवाल ने भी इन मुद्दों पर बेशर्मी की हद तक राजनीति की (उन्हें हेमंत सोरेन से सीख लेनी चाहिए थी) लेकिन वे अब इन्हें भुलाने में लगे हैं क्योंकि इनका असर देखकर ही उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ी थी। पुरबिया वोट के मसले पर भाजपा शुरू से बहुत संवेदनशील रही है लेकिन उसने पुरबिया लोगों के लिए कुछ किया नहीं है। संवेदनशीलता की हालत यह है कि कहीं बाहर से लाकर मनोज तिवारी को सर्वेसर्वा बना दिया और इस बार उनका टिकट रिपीट भी किया लेकिन ये सारे फैसले भाजपा के मूल चरित्र और आधार से इतना उलट हैं कि लाभ करने की जगह नुकसान ही हुआ लगता है। इस बार भी आप के एक दर्जन पुरबिया उम्मीदवारों की जगह उसने मात्र चार या पांच उम्मीदवार उतारे हैं, वह भी कपिल मिश्र को पुरबिया बताकर जबकि उनका पूरब से कोई लेना-देना नहीं है। आप को यह आधार मिला लेकिन यह कांग्रेसी आधार है। इस बार कांग्रेस जोर लगा रही है लेकिन ऐसा कोई बड़ा शिफ्ट होता दिखाई नहीं देता। मुसलमान वोटों के मामले में ऐसा कहना जल्दबाजी होगी पर उसमें बदलाव हो सकता है। खुद कांग्रेस पूरा जोर नहीं लगा रही है। अभी तक राहुल गांधी की सिर्फ एक सभा हुई है और प्रियंका तो मैदान से बाहर ही हैं। कांग्रेस के प्रति दलितों और पिछड़ों में आकर्षण बढ़ा है लेकिन मतदान तक की स्थिति बहुत मेहनत और भरोसे से आती है। फिर दिल्ली की चुनावी राजनीति में जाति उतना बड़ा फैक्टर नहीं होती जितना यूपी-बिहार-राजस्थान या उत्तराखंड में। यहां उसकी तुलना में वर्ग का आधार ज्यादा कारगर है जो काफी कुछ मुहल्लों और चुनाव क्षेत्रों की बसावट से भी जाहिर होता है। स्लम और निम्न-मध्यमवर्गी बस्तियों में पहले कांग्रेस का जोर रहता था और अब आप का। लेकिन इन सबसे दिल्ली चुनाव का महत्व इतना काम नहीं हो जाता कि कभी सैफ के कथित हमलावर की राष्ट्रीयता तो कभी काटोगे-बांटोगे और कभी भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला जी जुबान फिसलने को केन्द्रीय मुद्दा बना दिया जाए। अभी भी छोटा और सत्ता से कमजोर राज्य होने के बावजूद दिल्ली देश की राजधानी है और उभरते भारत की प्रतिष्ठा इसके साथ जुड़ी है। सत्ताईस साल से सत्ता से दूर रही भाजपा के स्थानीय नेता अगर भूखे भेड़िए सा व्यवहार करते हैं तो बात समझ आती है। नरेंद्र मोदी तथा अमित शाह के लिए भी काफी कुछ दांव पर लगा है क्योंकि हर्षवर्द्धन जैसे नेता को किनारे करना और भाजपा के पंजाबी, बनिया और ब्राह्मण आधार को झुठलाकर पुरबिया मनोज तिवारी जैसों के हाथ में पतवार देने का फैसला उनका ही रहा है।

मेष:- जीविका क्षेत्र में अवरोधों से मन में निराशा संभव। भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में व्यय अपेक्षित है। नई सफलताओं से खुद की क्षमताओं का एहसास होगा। संतान संबंधी दायित्वों की पूर्ति होगी।
बृषभ:- शासन-सत्ता से जुड़े लोगों के साथ निकटता बढ़ेगी। नियोजित परिश्रम द्वारा कार्य पूर्ण होने के आसार बनेंगे। पुराने संबंधों से लाभ होगा। पारिवारिक वातावरण सुखद व उत्साहपूर्ण होगा।
मिथुन:- संबंधों में व्यवहार कुशल बने। सामाजिक एवं मांगलिक कार्यक्रमों में आपकी भागेदारी संभव। निकट संबंधों में अपनी अच्छी छबि बनायें। कुछ महत्वपूर्ण प्रयत्न की सार्थकता से उत्साहित होंगे।
कर्क:- विद्यार्थियों के लिए ग्रहों की अनुकूलता लाभप्रद होगी। कुछ महत्वाकांक्षी योजनाएं सार्थक होंगी। नवीन आशाएं नये उत्साह का संचार करेंगी। कार्यक्षेत्र में संबंधों का भरपूर लाभ उठाएंगे।
सिंह:- अंतमरुखी स्वभाव को त्याग बाह्यमुखी बनायें। कुछ महत्वपूर्ण अभिलाषाओं की पूर्ति होने के आसार हैं। सामान्य दिनर्चया के साथ बीत रहे जीवन में उत्साह का अभाव रहेगा। घर में खुशहाली रहेगी।
कन्या:- पुरानी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर सुख की अनुभूति करेंगे। ग्रहों की अनुकूलता से अवरोधित कार्य हल होंगे। शिक्षा में समुचित परिश्रम करने में असमर्थ मन नकारात्मक चिंताओं से बोझिल होगा।
तुला:- किसी नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव। पारिवारिक वातावरण में उत्साह का माहौल रहेगा। दुबिधाओं का त्याग कर लक्ष्य पर केंद्रित हों।
वृश्चिक:- कुछ महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां मन पर प्रभावी होंगी। घरेलू कायरें में ब्यस्तता बढ़ेगी। परिजनों के भावनात्मक सहयोग से मन उत्साहित होगा। हंसमुख स्वभाव से आसपास का माहौल प्रसन्न होगा।
धनु:- कठिन एवं विषम स्थितियों के मध्य परिश्रम व लगन से प्रगति की ओर अग्रसर होंगे। सामाजिक सक्रियता से मान-प्रतिष्ठा में बढ़ेगी। घरेलू दायित्वों की पूर्ति होगी। जीवन साथी के साथ मधुरता कायम रखें।
मकर:- कुछ भौतिक आकांक्षाएं अपनी सार्थकता हेतु मन को उद्वेलित करेंगी। निकट संबंधों में भावनात्मक अपेक्षाएं कष्टकारी हो सकती हैं। गैर सांस्कारिक कायरे की आकर्षित मन पर अंकुश लगायें।
कुंभ:- कुछ नई इच्छाएं बलवती होंगी। प्रयासरत् क्षेत्रों में संघर्ष संभव परंतु निराशावादी विचारों को मन में स्थान न दें। किसी बड़े आयोजन हेतु समुचित ऊर्जा की अनुभूति होगी। रोजगार में लाभकारी स्थिति रहेगी।
मीन:- नकारात्मक चिंताओ को त्याग अपनी क्षमताओं पर भरोसा करें।

दोषी को सजा और समाज की जिम्मेदारी

प.बंगाल में आरजी कर अस्पताल में 8-9 अगस्त 2024 की रात ट्रेनी डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या के दोषी संजय रॉय को सोमवार को सियालदह कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई है। इससे दो दिन पहले अदालत ने 18 जनवरी को संजय को दोषी ठहराया था। अदालत ने इस मामले को जघन्य तो माना, लेकिन दुर्लभतम यानी रेयरेस्ट ऑफ द रेयर नहीं माना, इसलिए दोषी को मृत्युदंड न देकर मरने तक उम्रकैद दी गई है। हालांकि प.बंगाल सरकार ने अब कलकत्ता हाईकोर्ट में उम्रकैद को सही नहीं मानते हुए दोषी को फांसी देने के लिए याचिका दायर की है, जो मंजूर तो कर ली गई है, लेकिन इस पर सुनवाई कब होगी, यह अभी तय नहीं है। वहीं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा- मुझे पूरा विश्वास है कि यह रेयरेस्ट ऑफ रेयर मामला है, जिसके लिए मौत की सजा मिलनी चाहिए। कोर्ट यह कैसे कह सकता है कि यह दुर्लभतम मामला नहीं है? वहीं भाजपा ने भी इस मामले में उम्रकैद मिलने पर अपनी नाराजगी जताई और इसके लिए ममता सरकार को कटघरे में खड़ा किया। जबकि भाजपा यह जानती है कि मामले की पूरी जांच सीबीआई की निगरानी में हुई और उसके द्वारा पेश तथ्यों और सबूतों के आधार पर ही दोषी को सजा दी गई है। अगर भाजपा को आपत्ति दर्ज करनी ही है तो उसे फिर सीबीआई पर भी सवाल उठाने चाहिए। लेकिन ऐसा लगता है कि यहां न्याय से अधिक राजनीतिक लाभ लेने का खेल चल रहा है। वैसे पीड़िता के परिजन भी इस फैसले से निराश हैं और उन्होंने भी बड़ी अदालत में याचिका दायर करने का फैसला किया है। सियालदह अदालत ने दोषी को सजा के साथ-साथ पीड़िता के परिवार को मुआवजा देने का भी आदेश दिया है। अदालत ने डॉक्टर की मौत के लिए 10 लाख और बलात्कार के लिए 7 लाख मुआवजा तय किया। इस दौरान कोर्ट में मौजूद ट्रेनी डॉक्टर के माता-पिता ने हाथ जोड़कर कहा कि हमें मुआवजा नहीं, न्याय चाहिए। इस पर जज ने कहा- मैंने कानून के मुताबिक यह मुआवजा तय किया है। आप इसका इस्तेमाल चाहे जैसे कर सकते हैं। इस रकम को अपनी बेटी के बलात्कार और हत्या के मुआवजे के तौर पर मत देखिए।बात सही है कि इस जघन्य अपराध का कोई मुआवजा तय ही नहीं हो सकता, फिर भी अदालत ने कानून के दायरे में जो उचित था, वैसा फैसला सुनाया। पीड़िता के माता-पिता ने यह दावा भी किया है कि जांच ठीक से नहीं हुई है। कई लोगों को बचाया गया है। इस बारे में अदालत ने भी पुलिस और अस्पताल के रवैये की आलोचना की है। अस्पताल की तरफ से घटना की जानकारी देने में देर की गई और उसके बाद पुलिस ने केस दाखिल करने में देर की। दो पुलिसकर्मियों के बयान के आधार पर अदालत ने टिप्पणी की, इस बात में कोई शक नहीं कि अधिकारियों द्वारा ये कोशिश की जा रही थी कि इस मौत को आत्महत्या दिखाया जाए ताकि अस्पताल पर कोई बुरा असर न पड़े। जज ने अपने फैसले में कहा, चूंकि जूनियर डॉक्टरों ने विरोध करना शुरू कर दिया था, इसलिए ये गैर कानूनी सपना पूरा नहीं हो पाया। अदालत की यह टिप्पणी काफी गंभीर है, क्योंकि समाज में अनेक महिलाएं ताउम्र केवल इसलिए नाइंसाफी का शिकार बनी रहती हैं क्योंकि किसी न किसी वजह से दोषी को बचाने या मामले को दबाने की कोशिश की जाती है। इसमें अगर राजनीति का खेल शुरु हो जाता है, तब तो बात और बिगड़ जाती है। आर जी कर मामले में ही देश ने देखा कि किस तरह भाजपा ने इसे ममता बनर्जी सरकार पर निशाना साधने के लिए इस्तेमाल किया। इससे पहले निर्भया मामले में भी भाजपा का रवैया ऐसा ही था। लेकिन कठुआ, हाथरस, उन्नाव जैसे मामलों में भाजपा का रवैया दूसरा ही रहा। मणिपुर की घटना पर तो अंतरराष्ट्रीय मंचों से आलोचना हुई, लेकिन फिर भी भाजपा की तथाकथित डबल इंजन सरकार नाकारा साबित हुई। यही हश्र महिला पहलवानों के संघर्ष का भी रहा, जो यौन उत्पीड़न की शिकायत करती रहीं, मगर आरोपी सत्ताश्रय में मजे से रहे। आर जी कर मामले के दोषी संजय रॉय को चाहे मरने तक जेल में रहना पड़े या उसे बड़ी अदालतों से मौत की सजा मिल जाए, इससे देश में महिलाओं के साथ अत्याचार रुकेगा, इसका दावा नहीं किया जा सकता। निर्भया मामले में भी दोषियों को फांसी की सजा हुई, लेकिन इससे महिलाओं के लिए असुरक्षित और नकारात्मक माहौल में कोई बदलाव नहीं आया। इसलिए केवल कानूनी या अदालती कार्रवाई पर्याप्त नहीं है, इसमें हर तरह से सजगता चाहिए। आर जी कल मामले में ही सीबीआई ने आरोपपत्र में कहा कि संजय रॉय को बलात्कार या हत्या का कोई पछतावा नहीं है, उसका व्यवहार जानवरों जैसा था। कई मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक संजय रॉय की कई शादियां भी हो चुकी हैं। यानी उसके चरित्र के सारे दाग अब दिखलाए जा रहे हैं। लेकिन इसी संजय रॉय ने 2019 में कोलकाता पुलिस में डिजास्टर मैनेजमेंट ग्रुप के लिए वॉलंटियर के तौर पर काम करना शुरू किया था, तब उसकी पूरी पृष्ठभूमि क्यों नहीं खंगाली गई, यह बड़ा सवाल है। अगर तब उसकी असलियत पता चल जाती तो शायद एक लड़की की जान बच जाती। क्योंकि पुलिस के लिए स्वयंसेवी के तौर पर काम करने के बाद संजय वेलफेयर सेल में चला गया। और अपने संपर्कों की बदौलत उसने कोलकाता पुलिस की चौथी बटालियन में घर भी ले लिया। इस घर की वजह से ही आरजी कर अस्पताल में उसे नौकरी मिली। बताया जाता है कि वह अक्सर अस्पताल की पुलिस चौकी पर तैनात रहता था, जिससे उसे सभी विभागों में आने-जाने की छूट मिली थी। संजय रॉय जैसे कितने ही दरिंदे इंसानों की शक्ल में हमारे आसपास घूमते रहते हैं, जिन्हें समाज या प्रशासन की लापरवाही के कारण अपराध करने की छूट मिल जाती है।

संविधान के निर्माण में डॉ अंबेडकर की भूमिका अति महत्वपूर्ण : सुरेंद्र अग्रहरि

दुद्धी, सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे संविधान गौरव अभियान के अन्तर्गत दुद्धी नगर पंचायत के हरिजन बस्ती में डॉ भीमराव अंबेडकर जी के चित्र पर माल्यार्पण कर संविधान निर्माण में उनकी मुख्य भूमिका पर लोगो को जानकारी दिया गया। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला महामंत्री सुरेन्द्र अग्रहरि ने इस अवसर पर कहा कि जिस तरह परिवार और घर को चलाने के लिए संस्कार और अनुशासन की जरूरत होती है ठीक उसी तरह देश को चलाने के लिए संविधान की आवश्यकता होती है। देश को आजादी दिलाने और संविधान के निर्माण में डॉ भीमराव अंबेडकर जी ने अपना अमूल्य योगदान दिया जिससे आज समाज

में छुआछूत दूर हुआ ,साथ ही लोगो में समानता की भावना आई। भारतीय संविधान में नागरिकों के लिए मूल अधिकार के साथ साथ मूल कर्तव्यों और नीति निदेशक तत्वों को समाहित किया गया जिससे आज निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के लोग एक साथ काम कर रहे हैं। संविधान में दलित,वंचित और पिछड़े वर्गों को बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई। 18 वर्ष के ऊपर के वयस्क व्यक्ति को अपना मत देने का अधिकार भारतीय संविधान से ही प्राप्त हुआ इस प्रकार डॉ अम्बेडकर ने देश के संविधान निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नगर पंचायत के चेयरमैन कमलेश मोहन ने कहा कि संविधान के निर्माता डॉ अम्बेडकर को कांग्रेस ने कभी भी उनको सम्मान नहीं दिया ,उनको यदि सम्मान मिला तो गैर कांग्रेस सरकार में मिला। 1990 में वी पी सिंह की सरकार में भारत रत्न मिला। मंडल अध्यक्ष दीपक शाह ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने डॉ भीमराव अंबेडकर जी के जन्म स्थान से लेकर शिक्षा प्राप्त करने, अध्ययन केंद्र, दीक्षा लिए स्थान पर और जहां इनकी मृत्यु हुई वहां पर पंच तीर्थ बनाकर उनको सम्मान देने का काम किया। इस अवसर पर प्रेमनारायण सिंह, विकास मद्धेशिया, टिंकू हरिजन, कुन्दन भारती, विकास भारती आदि उपस्थित रहे।

बिना ब्याज के मिलेंगे 5 लाख, डालीगंज मे आज लगेगा कैंप

लखनऊ। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत लखनऊ के युवा व्यापारियों को मिलेंगे बिना ब्याज के 5 लाख रुपए। कैंप का संयोजन कर रहे लखनऊ युवा व्यापार मंडल के नगर अध्यक्ष मनीष गुप्ता ने बताया है कि विधायक नीरज बोरा जी के मार्ग दर्शन मे कल 22 जनवरी दिन बुधवार को प्रात: 10 बजे से शाम 4 बजे तक उमराव सिंह धर्मशाला डालीगंज मे कैंप आयोजित किया जायेगा। मनीष गुप्ता ने बताया कि निचले दर्जे के युवा व्यापारियों को अपने व्यापार को मजबूत करने हेतु बिना ब्याज के 5 लाख रुपए मिलेंगे। बड़ी संख्या में संपूर्ण लखनऊ के जरूरतमंद व्यापारी कैंप में आएंगे। लोन संबंधित जानकारी देने के लिए कैंप में अधिकारी उपस्थित रहेंगे इस मौके पर कैंप में भारतीय जनता पार्टी नगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी, उपाध्यक्ष धनश्याम अग्रवाल गुड्डू, लखनऊ व्यापार मंडल अध्यक्ष अमरनाथ मिश्रा, भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ अध्यक्ष अभिषेक खरे सहित भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ एवं लखनऊ युवा व्यापार मंडल के समस्त पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे।

राय नर्सिंग होम में डायलिसिस सेन्टर की हुई स्थापना

रेनुकूट, सोनभद्र। स्थानीय नगर पंचायत क्षेत्र के मुर्धवां में स्थित राय नर्सिंग होम में डायलिसिस सेन्टर का शुभारंभ नर्सिंग होम के प्रबंधक प्रसिद्ध सर्जन डॉ विनोद राय ने फीता काट कर किया ।आपको बताते चलें कि अदिवासी बहुल क्षेत्र में पानी में प्रदूषण से किडनी सम्बन्धी रोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है, जिसकी वजह से मरीजों को डायलिसिस कराने के लिये बाहर जाना पड़ता है। मिडिया से बातचीत करते हुए डॉ विनोद राय ने कहा कि राय नर्सिंग होम में डायलिसिस की सुविधा हो जाने से रेणुकूट, बीजपुर, बभनी, चपकी, अनपरा तथा आस पास के मरीजों का कम खर्च में आसानी से इलाज हो जायेगा और अब नयी सुविधा से मरीजों को और भी सुविधा हो जायेगी । इस अवसर पर सपना राय ,बबलू राय आदि मौजूद रहे।

वसुधैव कुटुम्बकम भारत की सनातन परंपरा : अनन्त मोहन

बीजपुर, सोनभद्र। भारत माता के पूजन के अवसर पर कुटुम्ब प्रबोधन के जिला संयोजक अनन्त मोहन ने कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम की परंपरा भारत में सनातन काल से चली आ रही है। कुटुम्ब प्रबोधन की परंपरा को मजबूती प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्त्ता इस अभियान को आगे बढ़ाने में लगे हैं। आधुनिकता के इस दौर में हमारे बीच दूरियां बढ़ी हैं। जो भारतीय समाज के लिए उचित नहीं है। आज परिवारों के बीच दूरियां बढ़ती जा रही हैं, हमारा प्रयास विश्व बंधुत्व और आपसी प्रेम को बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि हमें एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल होना चाहिए। भारत माता का पूजन समाज को जोड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन रहा है। इस अवसर पर अनिल त्रिपाठी ने कहा कि समाज और राष्ट्र दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। समाज और परिवार की मजबूती से ही राष्ट्र मजबूत होगा। इसलिए हम सभी को आगे आना चाहिए और कुटुम्ब प्रबोधन के इस अभियान में तन और मन से जुट जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आपसी प्रेम और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कुटुम्ब प्रबोधन के स्वयं सेवक घर- घर जाकर आपसी प्रेम और भाईचारे को बढ़ा रहे हैं। इस अभियान में और तेजी लाने की जरूरत है। कुटुम्ब प्रबोधन इस अभियान के द्वारा संयुक्त समाज का निर्माण कर भारत को सबल बनाने में अहम योगदान देगा। भारत माता के पूजन कार्यक्रम में दिनेश चंद्र शुक्ला, वीका रावत, मनीष विश्वकर्मा, मुकेश शाही, पुनम शाही, मधुकर, प्रशांत, कन्हैया लाल वर्माजी, हरिओम मिश्रा आदि शामिल रहे।

परिवर्तन सेवा समिति के तत्वाधान में बांटा गया कंबल

डीडीयू नगर, चन्दौली। परिवर्तन सेवा समिति के तत्वाधान में दुल्हीपुर स्थित वृद्धाश्रम में बुजुर्गों के बीच कंबल वितरण किया गया। इस मौके पर समिति के अध्यक्ष चंदेश्वर जायसवाल ने कहा कि हमारा लक्ष्य है गरीबों एवं असहायों की सेवा करना इसी क्रम में सूचना प्राप्त हुई की दुल्हीपुर में एक वृद्धा आश्रम है जिसमें लगभग 30 की संख्या में बुजुर्ग रहते हैं और इन्हें कंबल की शीघ्र आवश्यकता है तो समिति के सदस्यों के साथ तत्काल वहाँ पहुंचकर बुजुर्गों के मध्य कंबल वितरण किया गया। परिवर्तन सेवा समिति विगत 3 वर्षों से लगातार सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है नर सेवा ही नारायण सेवा की तर्ज पर गरीबों को सेवा प्रदान कर रही है और आगे भी सूचनाएं प्राप्त होगी तो हमारी टीम गरीब असहायों के कंबल वितरण का कार्य जारी रहेगा। इस मौके पर एस फाजिल, दिलीप जायसवाल, मयंक जायसवाल, निखिल गुप्ता मौजूद रहे।

अदलहाट थाना क्षेत्र में पुलिस के साथ मुठभेड़ में दो गो-तस्करों के पैर में लगी गोली

मिर्जापुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मीरजापुर सोमेन बर्मा द्वारा अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों की धरपकड़ व गो-तस्करों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष को प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं। मंगलवार को थाना अदलहाट व एसओजी/सर्विलांस की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा थाना अदलहाट क्षेत्रांतर्गत ग्राम रानीबाग के पास दौराने पुलिस मुठभेड़ में 02 पशु तस्कर अब्बू सहमा पुत्र स्व0 बदरूद्दीन निवासी ग्राम चकिया कसारी मसारी थाना धूमनगंज जनपद प्रयागराज और महबूब आलम पुत्र हनीफ निवासी दौलतपुर कड़ाधाम जनपद कौशाम्बी को गिरफ्तार किया गया, महबूब आलम उपरोक्त के दाहिने पैर में तथा अब्बू सहमा उपरोक्त के बाये पैर में गोली लगी है। पुलिस टीम द्वारा अभियुक्तो को गिरफ्तार कर पुलिस अभिरक्षा में इलाज हेतु भिजवाया गया, जहां उसकी स्थिति सामान्य है। मौके से उपरोक्त दोनों तरस्कों के कब्जे से मुठभेड़ की घटना में प्रयुक्त 02 अदद अवैध तमंचा 315 बोर, 02 अदद खोखा व एक अदद स्विफ्ट कार, एक अदद ट्रक कंटेनर तथा 32 राशि गो-वंश बरामद किया गया । उपरोक्त तस्करों द्वारा ट्रक कटेंनर मे वध हेतु ले जाए जा रहे 32 राशि गोवंशो की बरामदगी की गई है।

उक्त पुलिस मुठभेड़ व गिरफ्तारी/बरामदगी के सम्बन्ध में थाना अदलहाट पर अभियोग पंजीकृत कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है गिरफ्तारी का स्थान थाना अदलहाट क्षेत्रांतर्गत ग्राम रानीबाग नगर तिराहा के पास से, गिरफ्तारी व बरामदगी करने वाली पुलिस टीम में प्रभारी निरीक्षक थाना अदलहाट-अमित मिश्रा मय पुलिस टीम। निरीक्षक राजीव कुमार सिंह प्रभारी एसओजी/सर्विलांस मय पुलिस टीम रहे।

सती महोत्सव में कबड्डी खिलाडियों ने दिखाए जौहर

हमीरपुर। राठ क्षेत्र के टोला खंगारन में चल रहे पांच दिवसीय जय माँ सती मेला महोत्सव में कबड्डी खिलाडियों ने शानदार खेल दिखाया। आज हुए लीग मुकाबलों में महोबा ने अमगांव को 36 के मुकबले 28 अंकों से पराजित किया वहीं दूसरे मुकबले में अमगांव ने एक तरफा मैच में अटगांव को 22 अंको के बड़े अंतर से हराया। इस अवसर पर निर्णायक की भूमिका में प्रदीप राजपूत सिकरौधा, हरिशंकर यादव टीकमगढ़, सुभाष निवाड़ी एवं उद्घोषक प्रदीप यादव रहे। स्कोरर की भूमिका में राकेश सक्सेना ने निभाई।वही मेला समिति के अध्यक्ष ग्राम प्रधान सोबरन सिंह यादव, पूर्व प्रधान भारत सिंह बुंदेला, महमूद खान, भगवान दास चौधरी, डॉ0 जगरूप सिंह, रघुराज सिंह, हुकुम सिंह ,श्रीकांत मिश्रा, जीतेंद्र श्रीवास, मदन पांचाल, मन्नू परिहार, गुलाब चौकीदार, प्रभाकर चतुर्वेदी,भूप सिंह माते सहित भारी संख्या में ग्रामवासी एवं क्षेत्र वासी मौजूद रहे। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि पुष्पेंद्र सिंह यादव ने उपस्थित जनसमूह का आभार व्यक्त किया।

शहर बचाओ संघर्ष समिति के बैनरतले व्यापारियों ने निकाला जुलूस

डीडीयू नगर, चन्दौली। नगर क्षेत्र में एक गुट 6 लेन बनाने के लिए तीन दिनों से धरना प्रदर्शन किया जा रहा है।वही दूसरा व्यापारियों का गुट नगर क्षेत्र में फोर लेन बनाने के लिए में पीडब्ल्यूडी आफिस तक जुलूस निकाला। व्यापारियों व दुकानदारों का एक जत्था सोमवार को शहर बचाओ संघर्ष समिति के बैनर तले पीडब्ल्यूडी कार्यालय पहुंचा और एक्सईएन राजेश कुमार को पत्रक सौंपा। उन्होंने नगर में फोरलेन बनाने के निर्णय का स्वागत किया। सुबह व्यापारी व दुकानदार गल्ला मंडी स्थित कार्यालय पहुंचे। यहां से जुलूस निकालकर नारेबाजी करते हुए जीटी रोड होते हुए वे पीडब्ल्यूडी कार्यालय पहुंचे। यहां भी उन्होंने फोरलेन के समर्थन में जमकर नारेबाजी की और प्रदर्शन किया। इसके बाद वे एक्सईएन के कार्यालय में पहुंचे और मांगपत्र सौंपा। उन्होंने कहा कि शासन के निर्देश पर नगर में बन रहे फोरलेन से वे पूरी तरह संतुष्ट हैं। यह जनहित में लिया गया न्यायसंगत कार्य है। इस मानक में भी कई दुकानों और मकान क्षतिग्रस्त होंगे किंतु जनता के हित में यह भी व्यापारियों को स्वीकार्य है। जीटी रोड के व्यापारियों के हित को ध्यान में रखकर कराया जा रहा फोरलेन का निर्माण स्वागत योग्य है। इन दुकानों से कई लोगों की रोजी-रोटी चलती है।इस दौरान इरशाद अहमद बबलू, लक्ष्मीकांत अग्रहरि, निजाम बाबू,संता सिंह, आशुतोष जायसवाल, शिवकुमार जायसवाल, अंकुर जायसवाल, दिनेश जायसवाल, सरदार सतपाल सिंह, सरदार लोचन सिंह, राजवीर सिंह, रोहिताश पाल, विकास खरवार, मुन्नू चौरसिया सौरभ जायसवाल, ओमप्रकाश जायसवाल, मंगल जायसवाल, राजकुमार गुप्ता आदि शामिल रहे।

इंडियन बैंक ने किसानों को सुगम वित्तीय समाधान देने के लिए एसीई लिमिटेड के साथ साझेदारी की

लखनऊ। भारत के अग्रणी बैंकों में से एक, इंडियन बैंक ने लखनऊ में एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए कृषि समुदाय को समर्थन करने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। यह साझेदारी, किसानों के लिए अनुकूलित वित्तीय समाधान प्रदान करने की इंडियन बैंक की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इससे किसानों को कृषि संबंधी आधुनिक उपकरणों तक पहुँच बनाने में सहुलियत होगी। इंडियन बैंक ,इस सहयोग के तहत, एसीई द्वारा विनिर्मितट्रैक्टर, हार्वेस्टर और अन्य कृषि संबंधी मशीनरी खरीदने हेतु विशेष ऋण की सुविधाएं प्रदान करेगा। बैंक का लक्ष्य न्यूनतम दस्तावेज और कम ब्याज दरों परडिजिटल और पारंपरिक दोनों चौनलों के माध्यम से सरलीकृत प्रक्रियाओं के तहतदेश भर के किसानों के लिए त्वरित ऋण मंजूरी प्रदान करते हुए निर्बाध ऋण की प्राप्ति सुनिश्चित करना है।

महाकुंभ बीजेपी का कार्यक्रम : लोकदल

लखनऊ। महाकुंभ पर लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी सुनील सिंह ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि यह जनता का पैसा है जिसे सरकार अपने प्रचार प्रसार के लिए सरकार सरकारी खजाने को खाली करके कर रही है। यह उत्सव केवल हिंदू वर्ग के लिए किया जा रहा है जबकि भारत की संस्कृति सभी धर्म को लेकर है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। जबकि सरकार सिर्फएक धर्म और वोटो को लेकर कर रही है इस प्रकार सरकार को बगैर भेदभाव के सभी धर्म को लेकर कार्य करना चाहिए, ना की विशेष धर्म को लेकर। भारतीय जनता पार्टी इस उत्सव को धर्म के नाम पर राजनीति कर रही है, जिसका उदाहरण पूर्व में संभल और अजमेर की घटना जनता ने देखा है। श्री सिंह ने यह भी आरोप लगाया है कि इस प्रकार के आयोजनों को पार्टी को अपने फंड के द्वारा खर्च करना चाहिए ना कि सरकारी खजाने से। सिंह ने यह भी कहा है कि भाजपा समर्थित यह कुंभ आयोजन है। भाजपा इसका इस्तेमाल धर्म के नाम पर अपने वोटर के लिए कर रही है, और यह बीजेपी पार्टी द्वारा आयोजन उसके द्वारा करवाया जा रहा है। भाजपा महाकुंभ को अपने वोट के लिए इस्तेमाल कर रही है और मात्र हिन्दुओं में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए आयोजन करके सरकारी खजाने का दुरुपयोग कर रही है। ये एक राजनैतिक उत्सव है इसका आयोजन जनता के बीच बीजेपी का संदेश पहुंचाना न की कुंभ का संदेश है। कुंभ के नाम पर देश और दुनिया भर से लोग यहां डुबकी लगाकर अपने पाप को धोलेंगे, लेकिन क्या किसी को मां गंगा की फिक्र है। पाप धोने के लिए बीजेपी जितनी भी कोशिश कर रही हैं, उतनी कोशिश ईमानदारी से बेरोजगारों को रोजगार देने, महंगाई पर काबू पाने, किसानों के फसलों का वाजिद मूल्य का काम करने में करते तो शायद उन्हें कुंभ में डुबकी लगाने की जरूरत नहीं पड़ती । बीजेपी के द्वारा इस प्रकार के उत्सव को मनाने पर जनता से किसी भी प्रकार का लाभ होने वाला नहीं है यह उनका असफल उत्सव है।

रेल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आरपीएफ द्वारा चलाया गया जागरूकता अभियान

पीडीडीयू नगर, चंदौली। पीडीडीयू जंक्शन पर रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जागरूकता अभियान चलाया। आरपीएफ पोस्ट डीडीयू के प्रभारी निरीक्षक प्रदीप कुमार रावत के नेतृत्व में यह अभियान स्टेशन प्लेटफार्म और सर्कुलेटिंग एरिया में आयोजित किया गया।

इस अभियान के दौरान यात्रियों को गाड़ियों में अनावश्यक रूप से एसीपी (अलार्म चेन पुलिंग) न करने, बिना कारण चेन पुलिंग से बचने, ट्रेसपासिंग (रेलवे ट्रैक पर अवैध रूप से चलने) न करने, और रेलवे लाइन पार करने के लिए केवल अधिकृत रास्तों का उपयोग करने के लिए जागरूक किया गया। साथ ही रेल गाड़ियों पर पत्थर फेंकने जैसी खतरनाक गतिविधियों से होने वाले नुकसान और इसके लिए लागू कानूनी कार्यवाही के बारे में भी जानकारी दी गई। यात्रियों को यह भी बताया गया कि एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने के लिए फूट ओवर ब्रिज का ही इस्तेमाल करें। रेलवे ट्रैक पार करने से होने वाली दुर्घटनाओं के खतरों और उनके बचाव के लिए लाउड हेलर, बैनर और पोस्टर के माध्यम से पूरे स्टेशन परिसर में जागरूकता फैलाई गई। इस अभियान में उप निरीक्षक अर्चना मीणा, सहायक उप निरीक्षक पी.एन. राय, प्रधान आरक्षी रसीदा बानो, आरक्षी भूपेंद्र यादव, अशोक यादव, विजय सिंह समेत अन्य स्टाफ ने भाग लिया। इस प्रयास का उद्देश्य यात्रियों को सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा अनुभव प्रदान करना था।

अंगीठी से निकली कार्बन मोनोऑक्साइड गैस से हुई तीनों मौत

उन्नाव। जिले के बांगरमऊ में सेना के सूबेदार की पत्नी और उनके दो बच्चों की कमरे में जल रही अंगीठी से निकली कार्बन मोनोऑक्साइड गैस से मौत हो गई। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से चौंकाने वाला खुलासा हुआ कि 7 वर्षीय वैभव ने अपनी मां और छोटी बहन को बचाने का प्रयास किया, जिसमें उसके हाथ भी जल गए। जानकारी के अनुसार, खाना खाने के लगभग तीन घंटे बाद तीनों की मौत हुई। वैभव के बाएं हाथ की झुलसी अंगुलियां बताती हैं कि उसने अंगीठी को बुझाने का प्रयास किया। कमरे में मिला खाली गिलास और मेज पर रखा दूध का गिलास इस बात के सबूत हैं कि बचने के लिए वह कमरे में इधर-उधर भागा। डॉक्टरों के अनुसार, रात करीब 10 बजे सोते समय तीनों की हालत बिगड़ी। कमरे में ऑक्सीजन की कमी के कारण उनके फेफड़ों ने काम करना बंद कर दिया। पोस्टमार्टम में दम घुटने से मौत की पुष्टि हुई है। मृतक रचना अपने मायके में दो भाइयों के बीच इकलौती बहन थी। शव देखते ही परिवार के सदस्य-पिता शिवशंकर, मां मुन्नी देवी और भाई आशू व शुभम सिंह बेहाल हो गए। परिवार ने बताया कि अंतिम संस्कार नानामऊ के गंगा तट पर किया जाएगा। आर्मी सूबेदार आलोक सिंह 13 अक्तूबर 2024 को बेटे वैभव के जन्मदिन पर घर आए थे। एक महीने तक परिवार के साथ रहने के बाद छुट्टी खत्म होने पर 20 नवंबर को वह ड्यूटी पर गए थे। उन्होंने परिवार के लोगों से फोन पर बात करते हुए बताया कि उन्हें क्या पता था कि वह परिवार से आखिरी बार मिलकर जा रहे हैं। लद्दाख में ड्यूटी पर तैनात सूबेदार आलोक रोज रात को और सुबह पत्नी व बच्चों से बात करते थे। रविवार रात आठ बजे उनकी पत्नी से फोन पर आखिरी बार बात हुई थी। सोमवार सुबह भी फोन किया था लेकिन रिसीव नहीं हुआ।

मां भारती का एक महान सपूत रासबिहारी बोस की मनाई गई पुण्यतिथि

हमीरपुर। सुमेरपुर आजादी के संघर्ष में महावीरों के माहात्म्य के मद्देनजर वर्णिता संस्था के तत्वावधान मे विमर्श विविधा के अन्तर्गत जिनका देश ऋणी है के तहत मां भारती का एक महान सपूत रासबिहारी बोस की पुण्यतिथि 21 जनवरी पर संस्था के अध्यक्ष डॉ0 भवानीदीन ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि रासबिहारी बोस सही मायने मे एक राष्ट्र सेवी सोच के सूरमा थे।उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।बोस का जन्म 25 मई 1886 को बंगाल मे विनोद बिहारी बोस और ज्ञानेश्वरी देवी के घर वर्धमान जिले के सुबहदल गांव मे हुआ था, इनकी प्रारंभ से ही देशपरायण सोच थी,ये भारतीय स्वतंत्रता लीग ,आई एन ए तथा गदर आन्दोलन के सूत्रधार के सूत्रधार थे ,इन पर अलीपुर केस ,लाहौर केस और गदर योजना को लेकर बोस पुलिस की नजर मे चढ गये, ये पुलिस की पकड मे नहीं आये,1915 मे पंजाब चले गये, वहां से भी भारत की आजादी के लिए काम किया, वहीं पर जापानी महिला से शादी कर ली,इन्होंने 16 पुस्तकें लिखी, कालांतर मे 21 जनवरी 1915 को जापान मे बोस का निधन हो गया, इनके आई एन ए को सुभाष चन्द्र बोस ने संभाला, जो आजाद हिन्द फौज के नाम से जानी गयी।कार्यक्रम मे सिद्धा, महावीर, संतोष, भोलूसिंह, रिचा, सागर, प्रिन्स, प्रेम, दयाराम सोनकर, जौहरी, आशुतोष, अजय और दस्सी आदि शामिल हुए।

विकास का नारा, विनाश का खेल, एलडीए अधिकारियों की करतूत भ्रष्टाचार को खुला खेल

● प्रवर्तन जोन-7 में विकास का मॉडल या भ्रष्टाचार का अड्डा?

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) के अधिकारियों की मिलीभगत से बाजार खाला क्षेत्र स्थित बुलाकी अड्डा चौराहे पर मस्जिद और कब्रिस्तान की जगह पर अवैध निर्माण किया जा रहा है। शिकायतकर्ता का आरोप है कि इस अवैध निर्माण की जानकारी कई बार एलडीए को दी गई, लेकिन अधिकारियों ने कोई कार्रवाई नहीं की। निर्माण लगभग पूरा होने की कगार पर है, फिर भी अधिकारी निर्माण को बचाने में लगे हुए हैं। यह मामला न केवल भ्रष्टाचार को उजागर करता है बल्कि एलडीए की अक्षमता और लापरवाही को भी दर्शाता है। एलडीए अधिकारी मुख्यमंत्री के आदेशों की अवहेलना कर रहे हैं, जो कि एक गंभीर मामला है। यह मामला प्रवर्तन जोन-7 में विकास के नाम पर विनाश की ओर इशारा करता है। इस निर्माण से एलडीए अधिकारियों

की लापरवाही और भ्रष्टाचार की बू आती है। यह सवाल उठता है कि क्या एलडीए अधिकारी मुख्यमंत्री के आदेशों का पालन करने में असफल हो रहे हैं या फिर वे इसमें शामिल हैं? मालूम हुआ कि शिकायतकर्ता ने मुख्यमंत्री जनसुनवाई पोर्टल पर भी शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन एलडीए के अधिकारियों ने झूठा दावा करते हुए कहा कि निर्माण कार्य के लिए आवश्यक नक्शा स्वीकृत कर दिया गया है। जबकि हकीकत में स्वीकृत नक्शा वास्तविक निर्माण से काफी कम है। यह मामला दर्शाता है कि नक्शा विभाग से लेकर प्रवर्तन विभाग तक सभी अधिकारी इस अवैध निर्माण में शामिल हैं। एलडीए के अधिकारी इतने बड़े पैमाने पर अवैध निर्माण को कैसे अनुमति दे सकते हैं, यह एक गंभीर सवाल है। मुख्यमंत्री की जीरो टॉलरेंस नीति के बावजूद एलडीए के अधिकारी खुलेआम नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं। यह मुख्यमंत्री के आदेशों का खुला अपमान है। इस मामले में शिकायतकर्ता ने माननीय मुख्यमंत्री जी, प्रमुख सचिव (आवास), राजस्व परिषद अध्यक्ष व जिलाधिकारी लखनऊ और मंडलायुक्त को लिखित शिकायत से अवगत कराया था। लेकिन अभी तक इस संबंध में कोई कार्रवाई नहीं हुई है। यह एक गंभीर मामला है और इसकी गहन जांच होनी चाहिए। एलडीए के भ्रष्ट अधिकारियों की भूमिका की जांच होनी चाहिए और उन्हें दंडित किया जाना चाहिए। इस संबंध में शिकायतकर्ता ने प्रवर्तन जोन-7 के जोनल अधिकारी से मिलकर अवैध निर्माण के बारे में पूरी जानकारी दी थी। जोनल अधिकारी ने आश्वासन दिया था कि निर्माण पर जल्द कार्रवाई की जाएगी, लेकिन इसके बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इस मामले में लापरवाही या भ्रष्टाचार का मुखौटा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। यह सवाल उठता है कि क्या एलडीए के अधिकारी अवैध निर्माण को रोकने में असफल हो रहे हैं या फिर वे इसमें शामिल हैं।मुख्यमंत्री को हस्तक्षेप करना चाहिए और एलडीए के अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए। अवैध निर्माण को तत्काल गिराया जाना चाहिए और दोषी अधिकारियों को निलंबित किया जाना चाहिए। इसके अलावा एलडीए को अपनी कार्यशैली में सुधार करना चाहिए और अवैध निर्माण को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने चाहिए।

2026 तक नक्सल मुक्त भारत : केंद्र सरकार का ऐतिहासिक लक्ष्य, 24 वर्षों में 77% की गिरावट - डॉ. राजेश्वर सिंह

➢ देश में केवल 45 नक्सल प्रभावित जिले शेष, 40 वर्षों में पहली बार मौत का आंकड़ा 100 से नीचे - डॉ. राजेश्वर सिंह

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजिनीनगर। मंगलवार को नक्सलवाद के विरुद्ध चलाये गए ऑपरेशन में छतीसगढ़ के गरियाबंद में 1 करोड़ का इनामी नक्सली कमांडर चलपति सहित 20 नक्सली मारे। इस बीच सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने ट्वीट कर केन्द्रीय नेतृत्व की प्रशंसा की है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (ट्विटर) पर पोस्ट कर लिखा, %%माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और माननीय गृह मंत्री अमित शाह के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत ने नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में असाधारण सफलता हासिल की है, जिससे प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षा और विकास सुनिश्चित हुआ है। उनके संतुलित दृष्टिकोण, निर्णायक अभियानों और जमीनी विकास पहलों के संयोजन ने हाल के वर्षों में नक्सली उग्रवाद को काफी हद तक कमजोर किया है। गृह मंत्री अमित शाह की नीतियों की प्रशंसा करते हुए डॉ. सिंह ने आगे जोड़ा, गृह मंत्री अमित शाह ने नक्सली हिंसा के पीड़ितों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की, सरकारी सहायता प्रदान की और प्रभावित समुदायों को ठीक करने की आवश्यकता पर जोर दिया। 2025 की शुरुआत ने इस संकल्प को और मजबूत किया है, जिसमें हमारे सुरक्षा बलों ने ओडिशा-छत्तीसगढ़ सीमा पर 14 नक्सलियों को निष्प्रभावी किया। यह हमारे 2026 तक नक्सल मुक्त भारत के लक्ष्य को और दृढ़ करता है। विधायक ने आगे जोड़ा,प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उग्रवाद का समाधान विकास के मंत्र और गृह मंत्री अमित शाह की प्रभावी सुरक्षा रणनीतियों के तहत, लाल गलियारा धीरे-धीरे हरित विकास गलियारे में बदल रहा है। इन सतत प्रयासों ने पहले प्रभावित क्षेत्रों में शांति और समृद्धि लाई है, जिससे एक मजबूत, सुरक्षित और एकीकृत नए भारत का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

ग्राम पंचायत पारी में आवारा पशुओं को संरक्षित कर भेजा गया गौशाला

सलोन, रायबरेली। विकासखंड सलोन के ग्राम पंचायत पारी में आवारा पशुओं की समस्या का समाधान करते हुए उन्हें सुरक्षित तरीके से गौशाला भेजा गया। यह कार्य खंड विकास अधिकारी शशि कुमार तिवारी के निर्देश पर ग्राम विकास अधिकारी अशोक कुमार सिंह और ग्राम प्रधान रोहित सिंह की देखरेख में सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

ग्राम प्रधान रोहित सिंह ने बताया कि ग्राम पंचायत के सभी आवारा पशुओं को संरक्षित कर गौशाला भेजा गया है। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि अब यदि कोई ग्रामीण आवारा पशु छोड़ता है तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। ग्राम प्रधान ने आगे कहा कि वह गौशाला के स्थायी निर्माण के लिए प्रयासरत हैं। इस संबंध में वह जल्द ही जिलाधिकारी से मिलेंगे और ग्राम पंचायत की उन सरकारी जमीनों को कब्जामुक्त कराने की मांग करेंगे, जिन पर भू-माफियाओं ने अवैध कब्जा कर रखा है। इन जमीनों को पुन: ग्राम पंचायत के अधिकार क्षेत्र में लाकर वहां गौशाला का निर्माण करवाने का प्रयास किया जाएगा। इस अभियान में ग्रामीणों ने भी पूर्ण सहयोग दिया और आवारा पशुओं की समस्या को समाप्त करने में अपनी भागीदारी निभाई।

बुद्ध सर्किट भ्रमण के लिए आए नौ देशों के बौद्ध भिक्खु

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पर्यटन के संयुक्त तत्वावधान में नौ देशों के बौद्ध भिक्खुओं का दल राज्य भ्रमण के लिए आया है। बौद्ध भिक्खु 18 से 30 जनवरी तक बुद्ध सर्किट से जुड़े गंतव्यों का दर्शन करेंगे। यह दल 19 जनवरी को लखनऊ पहुंचा। इनके सम्मान में 20 जनवरी की देर शाम शांति उपवन बौद्ध विहार में संगोष्ठी और स्वागत समारोह आयोजित किया गया। यह दल 21 जनवरी को श्रावस्ती के लिए रवाना हुआ, जो कुशीनगर, सारनाथ और कौशांबी में भ्रमण करेगा। इसके बाद सभी भिक्खु श्रावस्ती के लिए रवाना हो गए। यह दल 22-23 जनवरी को श्रावस्ती, 24-26 जनवरी को कुशीनगर, 27-28 जनवरी को सारनाथ और 29-30 जनवरी को कौशाम्बी पहुंचेगा। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश पर्यटन और लाइट ऑफ बुद्ध धर्म फाउंडेशन इंटरनेशनल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस धम्म यात्रा में कम्बोडिया, थाईलैंड, वियतनाम, म्यांमार आदि थेरवादी बौद्ध देशों के वो विशिष्ट भिक्खु सम्मिलित हैं, जो प्रतिदिन कम से कम 30 किलोमीटर चारिका करने के अभ्यस्त हैं। ब्राजील, पुर्तगाल, अमेरिका, ब्रिटेन आदि पश्चिमी देशों के श्रद्धालु बौद्ध उपासक भी उत्तर प्रदेश के बौद्ध पर्यटन में सम्मिलित हैं। भिक्खुओं का दल प्रत्येक स्थान पर बुद्ध पूजा-पाठ करेंगे। लखनऊ के शान्ति उपवन बुद्ध विहार, आलमबाग में 20 जनवरी को विश्व शान्ति के लिए बुद्ध के वचनों के संग्रह धम्मपद का अखंड पाठ, नृत्य नाटिका, फिल्म प्रदर्शन, संघदान आदि किया गया। इस दौरान अमेरिका से आए डॉ. वांगमों डिक्सी ने कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा, उत्तर प्रदेश सरकार बुद्धिस्ट सर्किट का निरंतर विकास कर रही है, जो कि बौद्ध तीर्थयात्रियों के लिए अच्छा प्रयास है। उन्होंने कहा, उत्तर प्रदेश में भगवान बुद्ध से जुड़े स्थल जीवंत विरासत के रूप में मौजूद हैं।

आरसेटी के तहत बीसी सखियों को दी जा रही रिफ्रेशर ट्रेनिंग

अमेठी। जिले के बड़ौदा स्वरोजगार प्रशिक्षण केन्द्र गौरीगंज द्वारा जिले के ग्राम सभा में कार्यरत बीसी सखियों को रिफ्रेशर ट्रेनिंग (पुनर्श्चर्या प्रशिक्षण) दिया जा रहा है। यह ट्रेनिंग जिले के आईटीआई कालेज गौरीगंज में दिया जा रहा है। कार्यक्रम में आरसेटी के प्रभारी अनिल कुमार व प्रकाश जायसवाल और सी.एस.सी ई गवर्नेंस के सहायक प्रबंधक बैंकिंग पवन शर्मा द्वारा दिया जा रहा है। साथ ही बीसी सखी के साथ सी.एस.सी ई गवर्नेंस के सहायक प्रबंधक बैंकिंग पवन शर्मा द्वारा और सर्वेश कुमार, व अभिषेक कुमार द्वारा ट्रांजैक्शन को बढ़ाने के साथ अन्य योजनाओं को विस्तार से हर खाताधारकों तक पहुंचाने के गुण बताए। साथ ही साथ समस्त बीसी सखी अपने क्षेत्र के समस्त व्यक्तियों को बैंक से जोड़े और सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओ जैसे प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा , प्रधानमंत्री जीवन ज्योती बीमा, अटल पेंशन योजना के लाभ से जोड़े। आज जिले के अमेठी तहसील के 4 विकास खंड संग्रामपुर, भादर, भेंटुआ और अमेठी में कार्यरत बीसी सखियो का प्रशिक्षण दिया गया। आज 127 बी सी उपस्थित होकर पहले 2 दिन का प्रशिक्षण लिया। इस अवसर डीसी एनआरएलएम प्रवीणा शुक्ला ने बताया कि क्षेत्र में बीसी सखियों को रिफ्रेशर ट्रेनिंग दी जा रही है। इस ट्रेनिंग से व्यक्ति की स्मृति ताजा होती है और उस विषय पर ज्ञान बढ़ता है। उन्होंने बताया कि प्रथम बैच शुरू हुआ है जिसमें अमेठी तहसील के संग्रामपुर भेंटुआ, भादर व अमेठी की बीसी सखियों को रिफ्रेशर ट्रेनिंग दी जा रही है।

सड़क सुरक्षा सप्ताह कार्यक्रम के तहत चलाया गया जागरूकता अभियान

नेहरू युवा केंद्र ने हेलमेट व सीट बेल्ट लगाने के लिए लोगों को किया जागरूक

हमीरपुर। नेहरू युवा केंद्र हमीरपुर द्वारा सड़क सुरक्षा सप्ताह कार्यक्रम 17 जनवरी से 23 जनवरी के अन्तर्गत सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम राठ मोड़ कुछेछा में यातायात विभाग एवं बुंदेलखंड सोशल वेलफेयर सोसायटी तथा युवा मंडल सदस्यों के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में दो पहिया चालकों को हेलमेट लगाने, चार पहिया वाहन चालकों को सीट बेल्ट लगाने, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करने, वाहन की गति पर नियंत्रण रखने इत्यादि यातायात नियमों का पालन करने हेतु जागरूक किया गया। कार्यक्रम में यातायात विभाग मुख्यालय से असित कुमार, धर्मेंद्र कुमार यादव, रविंद्र आर्य, वीरेंद्र कुमार एवं बुंदेलखंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष दीपचन्द्र एवं चंद्रकेतु, दीपक कुमार, के.पी.सिंह, रवि निषाद एवं सूर्यकेतु इत्यादि गणमान्य जन उपस्थित रहे।

किसान शीघ्र अति शीघ्र बनवाएं अपनी फार्मर रजिस्ट्री आईडी : उप कृषि निदेशक

स्वयं अथवा जन सुविधा केंद्र एवं राजस्व ग्रामों में आयोजित होने वाले कैंप में उपस्थित होकर बनवा सकते हैं किसान फार्मर रजिस्ट्री आईडी

अमेठी। उप कृषि निदेशक सत्येंद्र कुमार ने बताया कि जनपद के समस्त राजस्व ग्रामों में कृषि एवं राजस्व विभाग के कर्मचारियों द्वारा कैम्प मोड में अभियान चलाकर किसानों की फार्मर रजिस्ट्री आई.डी. तैयार किये जाने का कार्य युद्धस्तर पर किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि जिलाधिकारी के निर्देशानुसार जनपद के समस्त उपजिलाधिकारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, उप कृषि निदेशक, जिला कृषि अधिकारी, जिला कृषि रक्षा अधिकारी एवं भूमि संरक्षण अधिकारी अमेठी द्वारा जनपद के जन सुविधा केन्द्रों एवं फार्मर रजिस्ट्री हेतु प्राप्त एप सहायक मोड से किसानों की फार्मर रजिस्ट्री आई0डी0 तैयार की जा रही है। जनपद में कुल 318852 किसानों की फार्मर रजिस्ट्री आई0डी0 बनायी जानी है जिसमें से अब तक कुल 96729 किसानों की फार्मर रजिस्ट्री आई0डी0 तैयार की गयी है। जो कि लक्ष्य का 30.29 प्रतिशत है। अवशेष किसानों की फार्मर रजिस्ट्री आई0डी0 बनाये जाने का कार्य जनपद के समस्त जन सुविधा केन्द्रों एवं राजकीय कृषि बीज भण्डरों पर किया जा है। जिसका निरन्तर अनुश्रवण जनपद के अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है। उक्त के कम में जनपद के समस्त किसान भाइयों से अपील है कि आप स्वंय सेल्फ मोड से अथवा नजदीकी जन सुविधा केन्द्र व राजस्व ग्रामों में आयोजित होने वाले कैम्पों में उपस्थित होकर अपनी फार्मर रजिस्ट्री आई0डी0 अवश्य बनवायें। जिससे कि आपको प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजनान्तर्गत प्राप्त होने वाली किस्तें अनवरत प्राप्त होती रहें।

मतदाता जागरूकता के लिए वॉकथान कल

लखनऊ। मतदाताओं को जागरूक करने के लिए स्वीप योजना अंतर्गत राज्य स्तरीय वॉकथान का आयोजन 23 जनवरी को केडी सिंह बाबू स्टेडियम से किया जाएगा। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार इस वर्ष भी 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में भव्य रूप से आयोजित किया जाएगा। अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी चंद्रशेखर ने बताया कि 23 जनवरी को वॉकथान में एन एस एस, भारत स्काउट गाइड, एन वाई के, स्पोर्ट्स परसन एवं छात्र-छात्राएं कुल मिलाकर लगभग 1500 प्रतिभागी प्रतिभाग करेंगे। वॉकथान प्रात: 08 बजे, केडी सिंह बाबू स्टेडियम, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सामने गेट से, हजरतगंज रोड से सहारागंज होते हुए वापस स्टेडियम के गेट नंबर-3 से प्रवेश कर स्टेडियम ग्राउण्ड में समाप्त होगी। वॉकथान समाप्ति के उपरान्त केडी सिंह बाबू स्टेडियम में ही मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा द्वारा प्रतिभागियों को मतदाता शपथ भी दिलायी जाएगी।

पुलिस ने दो शातिर स्मैक तस्कर को गिरफ्तार कर सात लाख रुपए से अधिक का स्मैक बरामद किया

एक तस्कर पर पहले भी कई मुकदमे दर्ज, जेल भेजने में जुटी पुलिस

अमेठी। मे अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे धरपकड़ अभियान में पुलिस को एक बार फिर बड़ी सफलता में जहां पुलिस ने चेकिंग के दौरान दो शातिर स्मैक तस्करों को गिरफ्तार किया।तस्करों के पास से सात लाख रुपए से अधिक का अवैध स्मैक बरामद हुआ।एक तस्कर पर पहले भी कई गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं।पूरा मामला जायस कोतवाली क्षेत्र के सम्मन तालाब के पास का है जहां मंगलवार को सुबह पुलिस संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग कर रही थी।इसी दौरान पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली दो शातिर स्मैक तस्कर मन्नू उर्फ दिलरैन पुत्र अलीबक्श निवासी छोटा कजियाना और इसी थाना क्षेत्र के रहने वाले 21 वर्षीय आरिफ पुत्र अल्लू के पास भारी मात्रा में स्मैक है।मुखबिर से सूचना मिलते ही हरकत में पुलिस ने मौके पर जाकर दोनों को पकड़ लिया और जब तलाशी ली तो मन्नू उर्फ दिल रैन के पास से 40 ग्राम जबकि आरिफ के पास से 30 ग्राम स्मैक बरामद हुआ।बरामद स्मैक की कीमत करीब 7 लख रुपए है। गिरफ्तार तस्कर मन्नू पुत्र अली बक्श के ऊपर चार गंभीर आपराधिक मामल दर्ज हैं। पुलिस दोनों तस्करों को जेल भेजने की कार्रवाई में जुट गई है। गिरफ्तारी को लेकर जायस थानाध्यक्ष रवि सिंह ने बताया कि दोनों तस्करों पर धारा 8/ 21 एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर दोनों को जेल भेजा जा रहा है।

चाय बागानों में बेहतर स्वास्थ्य सेवा के लिए असम सरकार की पहल

⇨ तिनसुकिया जिले के 80 उद्यान अधिकारियों के साथ जिला प्रशासन का समझौता ज्ञापन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ

असम। तिनसुकिया जिले के चाय बागानों में 80 अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों को आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के रूप में अपग्रेड करने की जिम्मेदारी राज्य सरकार ने औपचारिक रूप से ली है। इस उद्देश्य के लिए आज राज्य स्तर पर आयोजित एक कार्यक्रम के समानांतर तिनसुकिया जिला आयुक्त कार्यालय के बैठक कक्ष में जिला प्रशासन द्वारा 80 उद्यान अधिकारियों के साथ अलग अलग समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इससे चाय बागान क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं के विकास में तेजी लाना सुनिश्चित किया गया है। इस समझौते के अनुसार, राज्य सरकार अपने दम पर प्रत्येक उद्यान में प्रत्येक अस्पताल के समानांतर एक अलग अस्पताल का निर्माण करेगी और प्रत्येक अस्पताल के लिए एक

सामान्य स्वास्थ्य अधिकारी नियुक्त किया जाएगा। उद्यान प्राधिकरण अपने अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक नए अस्पताल भवन या आवास के निर्माण के लिए पर्याप्त भूमि प्रदान करेगा। अस्पतालों में मुफ्त दवाओं की आपूर्ति और मुफ्त बीमारी की जांच का प्रावधान राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन द्वारा किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि चाय बागानों में स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा अपनाई गई इस प्रणाली का उद्घाटन आज गुवाहाटी में राज्य स्तरीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री अशोक सिंघल और श्रम एवं चाय श्रमिक कल्याण मंत्री रूपेश गोयल की उपस्थिति में किया गया। इसके समानांतर जिलों में आयोजित कार्यक्रम के तहत तिनसुकिया जिला आयुक्त कार्यालय के बैठक कक्ष में जिला आयुक्त स्वप्निल पाल और जिले के 80 बड़े चाय बागान अधिकारियों के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस संदर्भ में जिला आयुक्त ने कहा कि चाय बागान और उसके आस-पास के क्षेत्रों के लोग पर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं से वंचित होने के आरोपों के मद्देनजर राज्य सरकार ने यह पहल अपने दम पर की है ताकि बागान के लोगों को भी बेहतर स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं मिल सकें। उन्होंने इस संबंध में उद्यान अधिकारियों से पूरा सहयोग मांगा। इस अवसर पर अपर आयुक्त चिन्मय पाठक, स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. जयंत भट्टाचार्य, सहायक श्रमायुक्त भास्कर मिली और जिला सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी विकास शर्मा भी उपस्थित थे।

प्रेमभूषण महाराज के जन्मदिवस पर वृद्धाआश्रम में बांटी आवश्यक सामग्री

लखनऊ। नर सेवा नारायण सेवा की अलख जगा रही ममता चौरिटेबल ट्रस्ट ने मिधानी ग्रुप के सहयोग से अपने स्वास्थ्य जागरुकता शिविर अंतर्गत दिव्यांग कृत्रिम अंग, सहायक उपकरण व कंबल वितरण अभियान की श्रंखला के अन्तर्गत ममता चौरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ क्षेत्रीय उपाध्यक्ष भाजपा अवध क्षेत्र उ0प्र0 की पुत्री अराध्या मिश्रा ने आज विश्वविख्यात कथावाचक पंण्डित परमपूज्य प्रेम भूषण जी महाराज के जन्मदिवस पर राजाजीपुरम के वृद्धाआश्रम में जाकर वृद्धों को कंम्बल,फ्रूट एवं खाने की सामग्री वितरित किया तथा सभी के पैरो को छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया। इतना ही नही राजीव मिश्रा ने लोगों को खाने की सामग्री तथा कम्बल वितरित करते हुए कहा की ममता चौरिटेबल ट्रस्ट हर समय आप सभी की हरसम्भव मदद करती रहेगी।

दिल्ली जीत के लिए आप पार्टी ने हवन पूजन के साथ किया हनुमान चालीसा पाठ

⇨ जीत दिलाने के लिए 25 सदस्यीय टीम दिल्ली रवाना

सुलतानपुर। आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष बृजेश प्रजापति की अगुआई में डाकखाना चौराहे के पास पंचमुखी हनुमान मंदिर पर दिल्ली विधानसभा में पार्टी की प्रचण्ड जीत की कामना के लिए हवन पूजन और हनुमान चालीसा का पाठ कर जिले से पच्चीस सदस्यीय टीम दिल्ली के लिए रवाना हो गई । जिला अध्यक्ष बृजेश प्रजापति ने बताया कि जिस तरह से दिल्ली में आम आदमी पार्टी की पिछले तीन बार से जनता के हित में अच्छा काम करके दिखाया है ठीक उसी तरह चौथी बार भी जनता की सेवा के लिए फिर से सरकार बनाने का प्रभु से प्रार्थना किया गया !

जिला महासचिव रामविलास तिवारी ने बताया कि जब तक चुनाव की मतगणना नहीं हो जाती है तब तक सुलतानपुर से कार्यकर्ता और जिम्मेदार लोग अलग अलग शिफ्टों में दिल्ली जाते रहेगें। हवन पूजन कार्यक्रम में बौद्ध प्रांत सचिव अजीत श्रीवास्तव, प्रदेश कोषाध्यक्ष पूनम श्रीवास्तव, महासचिव रामबिलास तिवारी, जिला उपाध्यक्ष सुरेश चंद्र गौतम, जितेन्द्र तिवारी, सह प्रभारी मो0 अख्तर राईन, बौद्ध प्रांत सचिव शहजादा शकील, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष वसीद अहमद, जाकिर अली , सादाब अहमद, विद्या देवी सहित अनेकों लोग मौजूद रहे।

फिल्म 'आजाद' के जरिए अजय देवगन के भतीजे अमन देवगन और रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी बॉलीवुड में डेब्यू कर रहे हैं। अभिषेक कपूर के डायरेक्शन में बनी यह 17 जनवरी 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। हाल ही में इस फिल्म को लेकर अमन देवगन और राशा थडानी ने दैनिक भास्कर से बातचीत की। बातचीत के दौरान अमन ने बताया कि अंकल अजय देवगन की डांट में उन्हें प्यार नजर आता है। वहीं, राशा ने बताया कि उनकी मम्मी रवीना टंडन ने उन्हें जमीन से जुड़े रहना सिखाया है। बातचीत के दौरान 'आजाद' की स्टारकास्ट ने और क्या कहा? पढ़िए बातचीत के कुछ प्रमुख अंश3 अमन, इस फिल्म को लेकर कितने एक्साइटेड और कितने नर्वस हैं? करियर में जब भी किसी काम की शुरुआत करते हैं तो थोड़ी सी घबराहट रहती ही है। एक्साइटमेंट भी बहुत है क्योंकि यह बहुत खास क्षण है। राशा, आप बताएं कैसा फील कर रही हैं? मैं भी बहुत नर्वस हूं। एक्साइटमेंट भी है, लेकिन घबराहट बहुत ज्यादा है। यह फिल्म मेरे लिए बहुत ही स्पेशल है। यह मेरे लाइफ की पहली फिल्म है। इस फिल्म की शूटिंग के दौरान जिस तरह के अनुभव हुए हैं, वह कभी वापस नहीं आएगी। यह फिल्म मेरे दिल के हमेशा करीब रहेगी। करियर शुरू करने के लिए इस फिल्म को ही क्यों चुना? मैं इस फिल्म से बहुत प्यार करती हूं। इस फिल्म में अजय देवगन सर, अमन, डायरेक्टर अभिषेक कपूर और फिल्म के बाकी क्रू मेंबर का बहुत ही प्यार मिला है। अमन, आप बताएं। इस फिल्म में ऐसी क्या खास बात लगी कि आपने इस फिल्म को चुना? मैं इस फिल्म में गोविंद का किरदार निभा रहा हूं। जब मैंने इस किरदार के लिए पहली बार ऑडिशन दिया था, तभी गोविंद के किरदार से मुझे प्यार हो गया था। फिल्म की कहानी ऐसी है कि जिसमें इंसान नहीं, बल्कि घोड़ा हीरो है। मुझे जानवरों से बहुत प्यार है। मुझे यह चीज बहुत ही स्पेशल लगी। इसलिए मैंने यह फिल्म की। फिल्म का हीरो आजाद घोड़ा है, कहीं आपको यह नहीं लगा कि यह ओवर शैडो करेगा? इसमें बहुत ही प्यारा घोड़ा है। अगर ओवर शैडो भी करता है तो क्या प्रॉब्लम होगी? यह बहुत ही इमोशनल कहानी है, जिसमें कॉमेडी, रोमांस, एक्शन और जानवरों के प्रति लगाव भी देखने को मिलेगा। इतना सबकुछ फिल्म है, तो कौन नहीं ऐसी फिल्म करना चाहेगा।राशा, आप आजाद के बारे में क्या कहना चाहेंगी? मुझे बचपन से ही जानवरों से बहुत प्यार है। इसमें काले रंग का आजाद घोड़ा बहुत ही खूबसूरत है। मेरे लिए यह ड्रीम जैसा है कि जानवरों के साथ काम कर पाऊं। घोड़े के साथ हर रोज मैं वक्त गुजार सकती हूं। अमन, आपने गोविंद के किरदार के लिए किस तरह की तैयारी की? फिल्म की कहानी 100 साल पहले एक गांव की है। मैं मुंबई में पला बढ़ा हूं। शुरुआत में किरदार की तैयारी में बहुत मेहनत करनी पड़ी। उस समय लोग कैसे बात करते थे। उसको समझने के लिए हमने डायलेक्ट की क्लासेस ली । बहुत सारे एक्टिंग वर्कशॉप करने पड़े। इस फिल्म में घोड़े के साथ बहुत सारे सीन हैं। उसके साथ सही तालमेल बैठाने के लिए उसके साथ सोता था, उसे नहलाता और खाना भी खिलाता था। इस वजह से घोड़े के साथ एक बॉन्ड बन गया था। राशा, आपको अपने किरदार के लिए किस तरह की तैयारी करनी पड़ी? हमने साथ में वर्कशॉप किए। गट्टू सर (अभिषेक कपूर) का फोकस हमारे परफॉर्म पर था। उनका कहना था कि लाइंस ऐसी होनी चाहिए, जिसे 100 बार बोल सके। इस फिल्म को समझने के लिए हमने 'मदर इंडिया' और 'लगान' जैसी फिल्में देखी थी। फिर भी गट्टू सर ने हमें उस माहौल के बारे में बताया कि कैसे उस समय में लोग रहते थे, किस तरह की बातें करते थे। आप को कब लगा कि एक्टिंग में करियर बनानी है? बचपन में परफॉर्म करना मेरा पैशन था। म्यूजिक बजाकर आईने के सामने डांस करती रहती थी। कुछ ना कुछ गाती रहती थी, भले ही सुर में नहीं गा पाती थी। जब मैं स्टेज पर परफॉर्म करती थी तब बहुत ही अलग तरह की फिलिंग आती है। तभी से मेरा ड्रीम बन गया कि एक्टिंग करनी है। मम्मी रवीना के अलावा और कौन सी हीरोइन आपको आइडियल लगती हैं? जब मैं छोटी थी तब दीपिका पादुकोण, श्रद्धा कपूर और तमन्ना भाटिया का काम मुझे बहुत अच्छा लगता था। उस समय उनका नाम तक नहीं पता था। उनके काम को देखकर सोचती थी कि एक इंसान के अंदर इतना टैलेंट कैसे हो सकता है। अमन, आप किसे अपना आइडियल मानते हैं? बचपन में अंकल (अजय देवगन) की बहुत फिल्में देखता था। जब पहली बार उनकी फिल्म 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह' देखी थी, तभी यह एहसास हो ही गया था कि यह तो बहुत ही अजीब दुनिया है। उस समय मुझे एक्टिंग की कोई समझ नहीं थी। हम ऐसे वातावरण में पले बढ़े है, जहां खाने के टेबल पर भी सिनेमा की बात होती है। 10जी के बाद 15 साल का हुआ, तभी मैंने सोच लिया कि एक्टिंग ही करनी है। सबसे पहले किसे बताया कि एक्टिंग में करियर बनानी है? सबसे पहले मैंने मम्मी और अंकल (अजय देवगन) को एक ही साथ बताया था। दोनों ने कहा कि बहुत मेहनत लगती है। उस प्रेशर के साथ ही मैंने काम शुरू किया। कभी मुझे उनकी तरह से कॉम्प्लीमेंट नहीं मिला। अंकल डांट भी देते हैं, लेकिन उसे मैं प्यार समझता हूं। क्योंकि वो चाहते हैं कि मैं भी उनके जैसा ही बनूं। राशा, आपने सबसे पहले किसे बताया कि एक्टिंग में करियर बनानी है? मैंने कभी एक्टिंग के बारे में नहीं बताई। मुझे यह बात बड़ी अजीब लगती थी। मम्मी एक्ट्रेस हैं, सबको लगता था कि एक्टिंग में ही करियर बनाऊंगी। लोग ऐसा उम्मीद करते हैं, तो जाहिर सी बात थी कि मम्मी से तुलना भी करेंगे। मैंने इस बात को स्वीकार कर लिया है। मुझे पता है कि अपनी मेहनत के बल पर पहचान बनानी है। शूटिंग के दौरान अजय देवगन के साथ काम करने का अनुभव कैसा रहा? अजय सर के साथ फिल्म में मेरा तो कुछ खास सीन नहीं है। शूटिंग के दौरान हमारी काफी मुलाकातें हुईं। अजय सर ने हमारे सीन की शूटिंग के दौरान काफी मदद की। थोड़े-थोड़े टिप्स देते रहते थे। उससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। अमन और आपके बीच शूटिंग के दौरान कैसी केमिस्ट्री थी? हम पहली बार वर्कशाप पर मिले थे। वर्कशॉप का पहला दिन था। इंप्रेशन अच्छा बने, इसलिए सीधे स्कूल यूनीफार्म में ही 20 मिनट जल्दी गई थी। वहां पर अमन दिख नहीं रहा था, मेरी निगाहें अमन को ढूंढ रही थी। वर्कशाप के दौरान एक दूसरे को अच्छे से समझने का समय मिला। इसके बाद हमलोग वर्कशॉप के लिए गांव में रहने गए। वहां से हमारे बीच अच्छी बॉन्डिंग हो गई थी। उस समय आप 12जी का एग्जाम भी दे रही थी, एक्टिंग की तैयारी करना बहुत मुश्किल रहा होगा?

बोल्डनेस के कारण तृप्ति को 'आशिकी 3' से नहीं निकाला

फिल्ममेकर अनुराग बसु बोले- सोशल मीडिया पर हो रही बातें झूठी, एक्ट्रेस को भी पता है

फिल्म आशिकी 3 से तृप्ति डिमरी को निकाले जाने पर अब डायरेक्टर अनुराग बसु ने अपना रिएक्शन दिया है। उन्होंने साफ किया कि तृप्ति को फिल्म से उनकी बोल्डनेस के कारण नहीं निकाला गया है। यह बात खुद तृप्ति को भी पता है। दरअसल, कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा था कि फिल्म से तृप्ति को उनकी बोल्ड इमेज के चलते बाहर किया गया है। सोशल मीडिया पर हो रही बातें झूठी- अनुराग मिड डे से बातचीत के दौरान जब अनुराग बसु से पूछा गया कि क्या फिल्म की डिमांड लीड एक्ट्रेस की मासूमियत के कारण तृप्ति को फिल्म से निकाला गया है। इस पर अनुराग बसु ने कहा, 'नहीं, यह सच नहीं है। तृप्ति को भी यह बात पता है।' जानें क्या है पूरा मामला? दरअसल, कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा था कि फिल्म एनिमल में जोया के किरदार के बाद तृप्ति डिमरी की बोल्ड इमेज बन गई है। दूसरी ओर आशिकी 3 के लिए मेकर्स को एक ऐसी एक्ट्रेस की तलाश थी जो दिखने में मासूम हो। जबकि अपनी कुछ फिल्मों के कारण तृप्ति ने अपनी मासूमियत खो दी है। इस वजह से वह रोल के लिए फिट नहीं मानी गईं और उन्हें फिल्म से बाहर कर दिया गया। फिल्म के लिए नई एक्ट्रेस की तलाश जारी बताते चलें कि तृप्ति डिमरी के फिल्म आशिकी 3 से बाहर होने के बाद फिलहाल नई हीरोइन का नाम सामने नहीं आया है। रिपोर्ट्स की मानें तो मेकर्स अभी भी हीरोइन की तलाश में हैं और फिल्म की शूटिंग को कुछ समय के लिए टाल दिया गया है। इन फिल्मों नजर आ चुकी हैं तृप्ति डिमरी तृप्ति डिमरी एनिमल, भूल भुलैया 3, कला, बुलबुल, बैड न्यूज और विक्की विद्या का वो वाला वीडियो जैसी फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। क्यों आशिकी 3 से निकाली गईं तृप्ति श्एनिमलश् और श्बैड न्यूजश् जैसी फिल्मों में अपने बोल्ड किरदारों के चलते तृप्ति डिमरी ने खूब सुर्खियां बटोरी हैं। वहीं श्आशिकी 3श् में कार्तिक आर्यन के साथ तृप्ति की कास्टिंग की खबरें थीं। लेकिन कई मीडिया रिपोर्ट का दावा है कि तृप्ति को फिल्म से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है। श्आशिकी-3श् के लिए मेकर्स को एक मासूम चेहरे की तलाश है जो इसकी लीड के लिए फिट बैठ सके। लेकिन तृप्ति डिमरी रोल के लिए फिट नहीं बैठ पा रही थीं। इसपर अनुराग बसु ने सच बताते हुए इस खबर को झूठ बताया है। क्या बोले अनुराग बसु हाल ही में मिड डे को दिए एक इंटरव्यू में जब उनसे पूछा गया कि क्या लीड एक्ट्रेस के मासूम चहरे की डिमांड के चलते तृप्ति डिमरी को निकाला गया है। इस पर अनुराग बसु ने कहा कि श्यह सच नहीं है, और तृप्ति को भी यह बात पता हैश। अनुराग बसु के रिएक्शन के बाद ये साफ हो गया है कि बोल्डनेस की वजह से एक्ट्रेस को बाहर नहीं किया है। लेकिन असल वजह अभी तक सामने नहीं आई है। तृप्ति डिमरी का वर्क फ्रंट बता दें, तृप्ति को बुलबुल, कला और लैला-मजनू जैसी फिल्मों में उनके सादगी भरे अंदाज के लिए खूब पसंद किया गया है। वर्क फ्रेंट की बात करें, तो साल 2024 में तृप्ति को कार्तिक आर्यन के साथ फिल्म भूल भुलैया 3 और राजकुमार राव के साथ विक्की विद्या का वो वाला वीडियो में देखा गया है। खबरें हैं कि उन्हें धर्मा प्रोडक्शन्स की धड़क 2 में देखा जा सकता है। सोशल मीडिया पर झूठी बातें हो रहीद्द अनुराग एक इंटरव्यू में अनुराग बसु से पूछा गया कि 'क्या फिल्म की कहानी में कैरेक्टर की 'मांग की वजह से तृप्ति डिमरी को फिल्म से बाहर किया गया है।' इसका जवाब देते हुए डायरेक्टर ने कहा, 'नहीं, यह बिल्कुल सही नहीं है। तृप्ति को भी इस बात का पता है।' क्या है पूरा मामला? कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया था कि फिल्म एनिमल में जोया के किरदार निभाने के बाद तृप्ति डिमरी की एक बोल्ड इमेज बन गई है। वहीं, आशिकी 3 के मेकर्स ऐसी एक एक्ट्रेस की तलाश में थे, जो दिखने में मासूम लगे। रिपोर्ट्स के मुताबिक, तृप्ति अपनी कुछ फिल्मों के कारण अब वह मासूमियत खो चुकी हैं, जो इस भूमिका के लिए जरूरी थी। इसी वजह से उन्हें इस रोल के लिए उपयुक्त नहीं माना गया और फिल्म से हटा दिया गया। फिल्म के लिए नई एक्ट्रेस की तलाश गौरतलब है कि तृप्ति डिमरी के आशिकी 3 से बाहर होने के बाद अब तक नई हीरोइन का नाम सामने नहीं आया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, मेकर्स अभी भी लीड एक्ट्रेस की तलाश में हैं। इसी कारण फिल्म की शूटिंग को फिलहाल कुछ समय के लिए टाल दिया गया है।

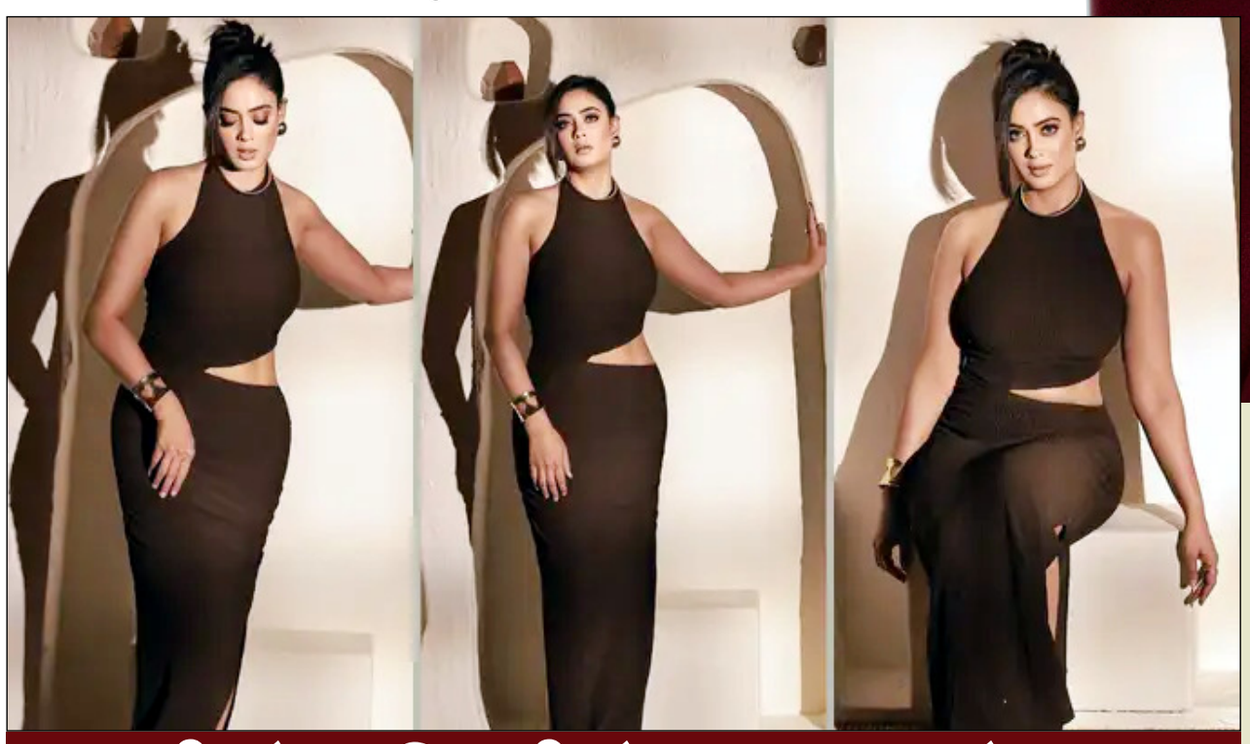

44 की श्वेता तिवारी ने कटआउट ड्रेस पहन दिखाई हॉटनेस, अदाएं इतनी किलर कि लगी ही नहीं 24 साल की बिटिया की मां

श्वेता तिवारी बढ़ती उम्र में भी अपने फैशनेबल अंदाज के चलते चर्चा में आ जाती हैं। हसीना के स्टाइल के आगे अच्छे- अच्छों का पत्ता साफ हो जाता है, तो अब वह कटआउट ड्रेस पहनकर ग्लैमर का तड़का लगा गईं। जिसमें उन्हें देखकर लगा ही नहीं कि वह 44 साल की हैं।घ् श्वेता तिवारी का 44 की उम्र में दिखा किलर रूप टीवी से करियर की शुरुआत कर हर घर में अपनी पहचान बनाने वाली श्वेता तिवारी आए दिन अपने लुक्स के चलते चर्चा में छा जाती हैं। जहां पर्दे पर वह सीधी- साधी नजर आतीं, तो अब उनका एक से बढ़कर एक स्टाइलिश कपड़ों में कातिलाना रूप देखने को मिलता है। जिसके आगे तो वह वह अपनी 24 साल की बेटी पलक तिवारी को भी कड़ी टक्कर दे जाती हैं। जिसका सबूत हाल ही उनकी लेटेस्ट तस्वीरों में भी देखने को मिला। दरअसल, श्वेता ने ब्राउन कलर की ड्रेस पहनकर अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर की हैं। जिसमें उनकी फिटनेस और अदाएं देखकर ये कोई नहीं कह सकता कि वह 44 साल की हैं और दो बच्चों की मां हैं। यकीन मानिए उनकी हॉटनेस से भरपूर ये तस्वीरें देख आप भी उनसे नजरें नहीं हटा पाएंगे। (फोटो साभाररू इंस्टाग्राम /ीमजं.जपूंतप) ग्लैमरस रूप दिखा फ्लॉन्ट किया फिगर वैसे तो अक्सर ही श्वेता का जवां लड़कियों जैसा ग्लैमरस रूप देखने को मिलता है, लेकिन इस बार तो उनकी अदाएं सबको दीवाना ही कर गईं। जहां वह कटआउट ड्रेस पहनकर अपने परफेक्ट फिगर को फ्लॉन्ट करती नजर आईं। जिसमें उन्हें स्टाइल करने का जिम्मा हर बार की तरह सेलिब्रिटी स्टाइलिस्ट विक्टर रॉबिन्सन और सोहेल मुगल ने उठाया और उसे बखूबी निभाया।दिखाईं सिजलिंग अदाएं हसीना की इस हॉल्टर नेकलाइन ड्रेस को बॉडी फिट्टेड बनाया है। जिसमें वेस्ट के लेफ्ट साइड पर कटआउट डिजाइन दिया। जहां उनका मिडरिफएरिया फ्लॉन्ट हो रहा है, तो स्कर्ट में दिया थाई- हाई स्लिट कट ग्लैम कोशेंट को बढ़ा गया। जिसे पहन हसीना ने कभी बैठकर पोज दिए, तो कभी खड़े होकर अपनी सिजलिंग अदाएं दिखा गईं। जूलरी को रखा मिनिमल श्वेता की ड्रेस पर कोई कढ़ाई या प्रिंट नहीं है, ऐसे में वह चाहती तो जूलरी के साथ कुछ एक्सपेरिमेंट कर सकती थीं। लेकिन, उन्होंने जूलरी को मिनिमल ही रखा। वह स्टाइलिश गोल्डन चोकर पहने दिखीं, तो साथ में मैचिंग ईयररिंग्स पेयर किए। वहीं, उन्होंने हार्ट कटआउट वाला ब्रेसलेट पहना। जिसने उनके लुक को बखूबी कॉम्प्लिमेंट किया। ऑन पॉइंट रहा हेयर और मेकअप अब अगर बात करें श्वेता के हेयर स्टाइल और मेकअप की, तो इसमें भी उन्होंने कोई कमी न करते हुए एकदम ऑन पॉइंट रखा। उन्होंने बालों को हाई बन में बांधकर स्टाइलिश टच दिया, तो आगे एक साइड में फ्लिक्स निकाले। वहीं, न्यूड ब्राउन लिप्स और हल्के स्मोकी इफेक्ट वाली ब्राउनिश आइज ओवरऑल लुक के साथ खूब जची।

विराट कोहली सफेद गेंद क्रिकेट के सबसे...

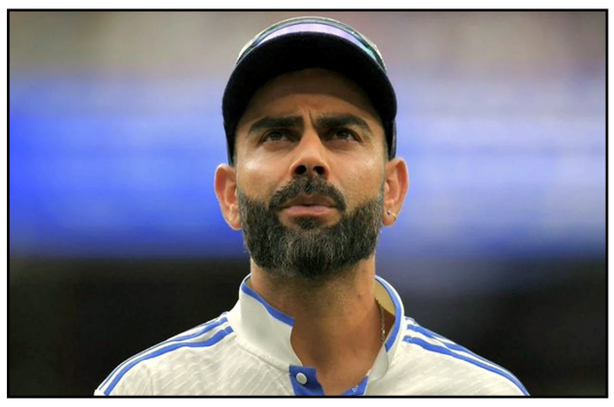

भले ही विराट कोहली और सौरव गांगुली के बीच कितने ही मतभेद की खबरें आए लेकिन सौरव गांगुली अक्सर कोहली की तारीफही करते दिखते हैं। वहीं हाल ही में सौरव गांगुली ने टीम इंडिया के पूर्व कप्तान और सलामी बल्लेबाज विराट कोहली को वाइट बॉल क्रिकेट का सबसे महान खिलाड़ी बताया है। दादा ने कोहली की जमकर तारीफकी है। दादा ने ये भी कहा कि विराट जैसे खिलाड़ी विरले ही पैदा होते हैं। पूर्व भारतीय कप्तान ने राज्य के खिलाड़ियों के लिए बंगाल क्रिकेट संघ के सम्मान समारोह के दौरान कहा कि, विराट कोहली जैसे क्रिकेटर विरले ही पैदा होते हैं। अपने करियर में 81 इंटरनेशनल शतक बनाना अविश्वसनीय है। मेरे लिए वह शायद सफेद गेंद के दुनिया के सबसे महान खिलाड़ी हैं। पर्थ में शतक के बाद कोहली के संघर्ष पर गांगुली ने कहा कि उन्हें भी हैरानी हुई कि वह सीरीज केबाकी बचे मैचों में शतक नहीं बना पाए। गांगुली ने कहा कि, मैं वास्तव में हैरान था कि पर्थ में शतक बनाने के बाद उन्होंने किस तरह से बल्लेबाजी की। इससे पहले उन्हें संघर्ष करना पड़ा था लेकिन पर्थ में शतक बनाने के बाद मुझे लगा कि ये उनके लिए एक बड़ी सीरीज होगी। दादा ने आगे कहा कि, मुझे लगता है कि ऐसा होता है। हर खिलाड़ी की अपनी कमजोरी और ताकत होती है। आप जानते हैं कि दुनिया में ऐसा कोई खिलाड़ी नहीं है, जिसके साथ ऐसा नहीं होगा। ये इस बात पर निर्भर करता है कि आप समय के साथ महान गेंदबाजों के सामने खेलते हुए अपनी कमजोरियों के साथ कैसे तालमेल बिठाते हैं। गांगुली ने भरोसा जताया है कि कोहली इंग्लैंड के खिलाफतीन मैचों की वनडे सीरीज और उसके बाद होने वाली चौंपियंस ट्रॉफी में अपने सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में लौटेंगे। उन्होंने कहा कि, वह भारतीय परिस्थितियों में इस टूर्नामेंट में रन बनाएंगे और मुझे अभी भी लगता है कि विराट कोहली में बहुत क्रिकेट बचा है। इंग्लैंड का दौरान उनके लिए एक बड़ी चुनौती होगी। मैं चौंपियंस ट्रॉफी में उनके फॉर्म को लेकर बहुत चिंतित नहीं हूं क्योंकि वह सफेद गेंद के क्रिकेट में शायद दुनिया के बेहतरीन खिलाड़ी हैं।

फील्डिंग में बेहतरीन और खराब की लड़ाई !

कैचिंग के मामले में इंग्लैंड शीर्ष पर, भारत फिसड्डी

कोलकाता। इंग्लैंड की टीम ने साल 2024 से टी20 अंतरराष्ट्रीय में 69 कैच लिए हैं, जबकि नौ कैच ड्रॉप किए हैं। उनके कैच पकड़ने की क्षमता (कैचिंग एफिशिएंसी) 88.50 फीसदी है। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज की आज से शुरुआत हो रही है। पहला मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डेंस में खेला जाएगा। इसके लिए इंग्लैंड ने अपनी प्लेइंग-11 की घोषणा कर दी है, जबकि भारत आज टॉस के दौरान इसका एलान करेगा। हालांकि, इस मैच में फील्डिंग में सबसे बेहतरीन और सबसे खराब टीमों के बीच लड़ाई है। ऐसा हम नहीं कह रहे, बल्कि आंकड़े बता रहे हैं। दरअसल, साल 2024 से टी20 अंतरराष्ट्रीय में फील्ड पर श्रेत्ररक्षण में इंग्लिश टीम ने गजब प्रदर्शन किया है, जबकि भारत नियमित सदस्यों में सबसे नीचे है।

कौन सी टीम कैच पकड़ने में सबसे बेहतर? इंग्लैंड की टीम ने साल 2024 से टी20 अंतरराष्ट्रीय में 69 कैच लिए हैं, जबकि नौ कैच ड्रॉप किए हैं। उनके कैच पकड़ने की क्षमता (कैचिंग एफिशिएंसी) 88.50 फीसदी है। वहीं, इस लिस्ट में दूसरे स्थान पर अफगानिस्तान है। इस टीम ने साल 2024 से अब तक 91 कैच पकड़े और 16 कैच ड्रॉप किए। उनके कैच पकड़ने की क्षमता 85 फीसदी है। बांग्लादेश ने इस दौरान 114 कैच पकड़े, लेकिन 24 ड्रॉप भी किए। उनके कैच पकड़ने की क्षमता 82.60 प्रतिशत है। श्रीलंका ने इस दौरान 96 कैच पकड़े और 22 कैच ड्रॉप किए। 81.40 प्रतिशत उनके कैच पकड़ने की क्षमता है। ऑस्ट्रेलिया ने साल 2024 से 113 कैच पकड़े हैं और 26 कैच ड्रॉप किए हैं। उनके कैच पकड़ने की क्षमता 81.30 फीसदी है। पाकिस्तान इस लिस्ट में छठे स्थान पर है। उसने इस दौरान 120 कैच पकड़े और 29 कैच ड्रॉप किए। उनके कैच पकड़ने की क्षमता 80.50 प्रतिशत है। दक्षिण अफ्रीका इस लिस्ट में सातवें स्थान पर है। उसने साल 2024 से टी20 अंतरराष्ट्रीय में 100 कैच पकड़े और 25 कैच गिराए। उनकी कैचिंग एफिशिएंसी 80 प्रतिशत है। वेस्टइंडीज ने 108 कैच पकड़े और 28 गिराए हैं, जबकि न्यूजीलैंड ने 112 कैच पकड़े और 30 गिराए हैं। भारत इस लिस्ट में 10वें स्थान पर है।

उसने साल 2024 से टी20 अंतरराष्ट्रीय में 134 कैच पकड़े हैं, जबकि 36 गिराए हैं। उनके कैच पकड़ने की क्षमता 78.80 प्रतिशत है। भारत और इंग्लैंड के आंकड़े भारत और इंग्लैंड के बीच आंकड़ों की बात करें तो दोनों टीमों के बीच अब तक कुल 24 टी20 खेले गए हैं। इसमें से भारत ने 13 टी20 जीते हैं, जबकि 11 में इंग्लिश टीम को जीत मिली है। भारत ने कोलकाता के ईडन गार्डेंस में सात टी20 खेले हैं। इनमें से भारत ने छह टी20 जीते हैं और उन्हें एकमात्र हार इंग्लैंड से 2011 में मिली है। भारत और इंग्लैंड के बीच ईडन गार्डेंस पर पिछला टी20 मुकाबला भी तभी (2011) में ही खेला गया था।

नए सिरे से शुरुआत करने उतरेगी भारतीय टीम, जानें कब और कहां देख सकेंगे मैच

कोलकाता। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच टी20 और तीन वनडे मैच खेले जाएंगे जो अगले महीने होने वाली चौंपियंस ट्रॉफी से पहले दोनों टीमों के लिए खुद को आंकने का सुनहरा मौका है। भारतीय टीम न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मिली टेस्ट सीरीज में हार को भुलाकर इंग्लैंड के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज में नए सिरे से शुरुआत करने उतरेगी। सूर्यकुमार यादव की अगुआई वाली भारतीय टीम का पांच मैचों की टी20 सीरीज के पहले मैच में बुधवार को इंग्लैंड से होगा। इस मैच से अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी 14 महीने बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी करेंगे। शमी ने वनडे विश्व कप में किया था प्रभावित भारत और इंग्लैंड के बीच पांच टी20 और तीन वनडे मैच खेले जाएंगे जो अगले महीने होने वाली चौंपियंस ट्रॉफी से पहले दोनों टीमों के लिए खुद को आंकने का सुनहरा मौका है। शमी वनडे विश्व कप 2023 में चार मैचों से बाहर रहने के बावजूद भारत के सबसे कामयाब गेंदबाज रहे जिन्होंने 24 विकेट लिए थे। उन्होंने वानखेड़े स्टेडियम पर न्यूजीलैंड के खिलाफसेमीफाइनल में 57 रन देकर सात विकेट चटकाए थे। वह टी20 क्रिकेट में कुल 24 विकेट ले चुके हैं और इसमें अपने प्रदर्शन में सुधार करना चाहेंगे। अक्षर निभाएंगे ऑलराउंडर की भूमिका रोहित शर्मा की कप्तानी वाली भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया दौरे पर मिली हार को अभी तक भुला नहीं पाई है जिसके बाद टीम में अनुशासन बहाल करने के लिए बीसीसीआई ने कड़े दिशा निर्देश जारी किए हैं। ऑलराउंडर अक्षर पटेल को भारतीय टीम का उपकप्तान बनाया गया है जिन्होंने पिछले साल वेस्टइंडीज में टी20 विश्व कप में खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाई थी। अक्षर ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफफाइनल में 31 गेंद में 47 रन बनाए और आठ मैचों में नौ विकेट भी लिए थे। भारत की चौंपियंस ट्रॉफी टीम में जगह बनाने में नाकाम रहे विकेटकीपर संजू सैमसन पर अच्छे प्रदर्शन का दबाव होगा। आइए जानते हैं भारत और इंग्लैंड के बीच पहले टी20 मैच से जुड़ी सारी जानकारियां... भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच कब खेला जाएगा? भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच कहां खेला जाएगा? भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच कोलकाता के ईडेन गार्डेंस पर खेला जाएगा। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच कब शुरू होगा? भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच भारतीय समयानुसार शाम 7रू00 बजे से शुरू होगा। टॉस इससे आधे घंटे पहले यानी शाम 6रू30 बजे होगा। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का पहला मैच किस टीवी चौनल पर देख सकते हैं? भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज के प्रसारण का अधिकार स्टार स्पोर्ट्स के पास है। भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज के पहले मैच की लाइव स्ट्रीमिंग कहां उपलब्ध होगी? भारत और इंग्लैंड के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज के पहले मैच को ऑनलाइन डिज्नी हॉटस्टार एप (क्पेदमल भ्वेजंत) पर देखा जा सकता है।

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बीसीसीआई पर लगाया आरोप, कहा- भारतीय बोर्ड खेल में राजनीति...

अगले महीने चौंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारतीय टीम हाइब्रिड मॉडल के तहत पाकिस्तान नहीं बल्कि दुबई में अपने सारे मैच खेलेगी। वहीं इस बीच चर्चा थी कि टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा चौंपियंस ट्रॉफी 2025 की ओपनिंग सेरेमनी के दौरान कैप्टन फोटोशूट के लिए पाकिस्तान जाएंगे। लेकिन इस मामले में बीसीसीआई ने अभी तक कुछ भी नहीं कहा है। वहीं अब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड यानी पीसीबी के एक अधिकारी ने एक बार फिर बीसीसीआई पर निशाना साधा है। पीसीबी अधिकारी ने चौंपियंस ट्रॉफी 2025 की ओपनिंग सेरेमनी के लिए टीम इंडिया के पाकिस्तान नहीं आने की रिपोर्ट्स पर कहा कि बीसीसीआई के कारण वे पाकिस्तान नहीं आ रहे। बता दें कि, चौंपियंस ट्रॉफी का उद्घाटन समारोह और कैप्टन्स डे 16 या 17 फरवरी को होगा। कैप्टन्स फोटोशूट के लिए रोहित शर्मा के भी पाकिस्तान जाने की रिपोर्ट्स थीं। लेकिन अब कुछ स्पष्ट नहीं है। पीसीबी अधिकारी ने ये भी कहा कि बीसीसीआई खेल में राजनीति को ला रहा है। टीम इंडिया आईसीसी चौंपियंस ट्रॉफी 2025 में अपने अभियान की शुरुआत 20 फरवरी को बांग्लादेश, 23 फरवरी को पाकिस्तान और 2 मार्च को न्यूजीलैंड से लीग मैच है इंडिया सैमीफाइनल मैच भी दुबई में खेलेगी और अगर फाइनल में भारत पहुंचा तो ये मैच लाहौर की बजाय दुबई में होगा। पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, एक सूत्र ने कहा कि हाल में पाकिस्तान आए आईसीसी प्रतिनिधिमंडल में शामिल तीन भारतीय नागरिकों को विश्व संस्था द्वारा पीसीबी को उनके नाम भेजे जाने के तुरंत बाद वीजा जारी कर दिया गया। सूत्र ने कहा कि पीसीबी ने सभी कप्तानों, खिलाड़ियों और टीम अधिकारियों को तुरंत वीजा जारी करने के लिए अपनी सरकार से सभी प्रासंगिक मंजूरी हासिल कर ली है, जो टूर्नामेंट से पहले होने वाले कार्यक्रमों के लिए यहां आएंगे। उन्होंने कहा कि, इसमें रोहित या कोई अन्य भारतीय टीम का खिलाड़ी या अधिकारी या बोर्ड अधिकारी शामिल हैं। एक अन्य सूत्र ने पीटीआई को पुष्टि की पीसीबी ने आईसीसी को स्पष्ट कर दिया है कि उद्घाटन समारोह, जिसमें सभी टीमें और उनके कप्तान शामिल होंगे, पाकिस्तान में होगा। सूत्र ने आगे कहा कि, ये सामान्य प्रोटोकॉल के अनुरूप है और चूंकि ओपनिंग सेरेमनी 19 तारीख को है इसलिए उद्घाटन समारोह 16 या 17 तारीख को होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि, उद्घाटन समारोह का कार्यक्रम अभ्यास मैचों के शेड्यूल पर निर्भर करेगा। इस बीची बीसीसीआई ने ना तो रोहित को पाकिस्तान भेजने से इनकार किया है और ना ही उनकी यात्रा की पुष्टि की है। हालांकि, पीसीबी अधिकारी ने उन रिपोर्ट्स पर अपनी निराशा व्यक्त की, जिनमें कहा गया था कि भारतीय टीम अपने टूर्नामेंट की जर्सी पर पाकिस्तान का नाम नहीं पहनेगी। वहीं पीसीबी अधिकारी ने गोपनीयता की शर्त पर सोमवार को आईएएनस को बताया कि, बीसीसीआई क्रिकेट में राजनीति ला रहा है, जो खेल के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।

बीसीसीआई की गाइडलाइंस के बाद रणजी ट्रॉफी में खेलेंगे ये दिग्गज खिलाड़ी, ऑस्ट्रेलिया दौरे पर रहे थे फ्लॉप

विजय हजारे ट्रॉफी के बाद अब एक बार फिर रणजी सीजन शुरू होने वाला है। लीग राउंड में आखिरी दो मैच खेले जाने हैं जिसके बाद नॉकआउट का दौरा शुरू होगा। बचे हुए दो मुकाबलों में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गए और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफबीजीटी खेल चुके 9 दिग्गज नजर आएंगे। वहीं इन खिलाड़ियों में टीम के कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे नाम भी शामिल हैं। ये बीसीसीआई की नई गाइडलाइंस का ही असर है जिसमें टीम इंडिया के खिलाड़ियों का ब्रेक के समय घरेलू क्रिकेट खेलना अनिवार्य है। यशस्वी जायसवाल और रोहित शर्मा मुंबई की टीम में भारत के कई स्टार खिलाड़ी नजर आएंगे। इनमें यशस्वी जायसवाल और रोहित शर्मा जम्मू-कश्मीर के खिलाफमैच में टीम का हिस्सा होंगे। रोहित ने पहले टीम के साथ प्रैक्टिस सेशन में हिस्सा लिया था। इसके बाद उन्होंने खुद को मैच के लिए उपलब्ध बताया। इन खिलाड़ियों का सामना तेज गेंदबाज उमरान मलिक से होगा जो अपनी रफ्तार के लिए जाने जाते हैं। विराट कोहली जबकि विराट कोहली 23 जनवरी से शुरू होने वाले मैच में सौराष्ट्र का सामना करेंगे। इसके बाद 30 जनवरी को टीम का सामना रेलवे से होगा। रेलवे के खिलाफ मैच में विराट कोहली दिल्ली का हिस्सा होंगे। 12 साल बाद कोहली फर्स्ट क्लास मैच खेलते हुए दिखेंगे। वहीं पंत भी काफी समय बाद दिल्ली का हिस्सा होंगे। रविंद्र जडेजा - साथ ही टीम इंडिया के स्टार ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा भी रणजी ट्रॉफी खेलते हुए दिखेंगे। वह सौराष्ट्र के लिए मुकाबला खेलने उतरेंगे। इस टीम में जडेजा के अलावा दिग्गज बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा भी शामिल हैं। जडेजा साल 2023 में भी रणजी ट्रॉफी का मैच खेल चुके हैं उस दौरान सौराष्ट्र ने तमिलनाडु के हराया था। मयंक अग्रवाल- बीजीटी में एक मैच खेलने वाले देवदत्त पडिक्कल भी रणजी ट्रॉफी में खेलेंगे। वह मयंक अग्रवाल की कप्तानी वाली कर्नाटक में खेलेंगे। उनके अलावा सिडनी टेस्ट के लिए टीम इंडिया में एंट्री करने वाले प्रसिद्ध कृष्णा भी टीम का हिस्सा होंगे। मोहम्मद सिराज- इसके अलावा मोहम्मद सिराज भी रणजी ट्रॉफी में खेलते हुए दिखेंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सिराज 30 जनवरी से शुरू होने वाले आखिरी लीग मैच में हैदराबाद का सामना करने उतरेंगे।

सलामी बल्लेबाजों की जगह तय लेकिन बाकी को बल्लेबाजी क्रम को लेकर लचीला होना होगा

कोलकाता। इंग्लैंड के खिलाफपांच मैचों की टी20 श्रृंखला से पहले भारत के उपकप्तान अक्षर पटेल ने कहा कि भारतीय टी20 टीम में सिर्फ सलामी बल्लेबाजों का क्रम ही तय है जबकि बाकी सभी बल्लेबाजों को क्रम को लेकर लचीला रूख अपनाना होगा। भारतीय टीम बुधवार को ईडन गार्डेस पर पहला मैच खेलेगी। बल्लेबाजी क्रम में बार बार बदलाव के बारे में पूछने पर अक्षर ने कहा ,'' यह सिर्फमेरे बारे में नहीं है बल्कि टीम में सभी पर लागू होता है।'' उन्होंने कहा ,'' 2024 की शुरूआत से हमने तय किया था कि सलामी जोड़ी तय होगी जबकि तीसरे से सातवें नंबर तक सभी को हालात, संयोजन और मैच अप्स के अनुरूप लचीला रहने के लिये कहा गया है।'' अक्षर ने कहा ,'' ऐसा कोई तय क्रम नहीं है कि कोई बल्लेबाजी उसी क्रम पर खेलेगा। तीसरे से सातवें नंबर के बीच सभी के लिये यह लागू होता है। यह अभ्यास सत्र में तय होगा।'' उन्होंने कहा ,'' टी20 क्रिकेट में सही समय पर सही बल्लेबाज का इस्तेमाल करना अहम है।'' उन्होंने कहा ,'' अभी यहां आये एक ही दिन हुआ है। हमने (कप्तान सूर्यकुमार यादव, मुख्य कोच गौतम गंभीर और खुद अक्षर) बात की है। टीम नेतृत्व दल पर अतिरिक्त जिम्मेदारी है। बहुत कुछ बदला नहीं है। हमारे पास स्थिर टी20 टीम है और ज्यादा दबाव नहीं है।'' अक्षर ने कहा ,'' नेतृत्व दल का हिस्सा बनने पर कड़े फैसले लेने पड़ते हैं। हमने इस पर बात की है। एक दूसरे पर भरोसा रखना और सही राय लेना अहम है। हम यह भी बात करते हैं कि जो हो गया, वो वापिस नहीं आने वाला। अगली श्रृंखला से पहले सकारात्मक सोच के साथ उतरना जरूरी है।'' उन्होंने लंबे समय बाद टीम में लौटे तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी का स्वागत करते हुए कहा ,'' वह आखिरी बार वनडे विश्व कप 2023 फाइनल खेले थे और रिकवरी के बाद से उन्होंने सैयद मुश्ताक अली और विजय हजारे ट्रॉफी में अच्छा प्रदर्शन किया है। सीनियर खिलाड़ी की वापसी से टीम का मनोबल बढता है।

सात्विक-चिराग सेमीफाइनल में हारे, इंडिया ओपन में भारतीय अभियान खत्म

नयी दिल्ली। भारत के सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की युगल जोड़ी का अभियान शनिवार को यहां इंडिया ओपन सुपर 750 में मलेशिया के गोह सेज फेई और नूर इज्जुद्दीन से सीधे गेम में हारने के बाद सेमीफाइनल में समाप्त हो गया। 2022 की इस चौंपियन भारतीय जोड़ी को मलेशियाई जोड़ी ने मात्र 37 मिनट में 18-21, 14-21 से हरा दिया। भारतीय जोड़ी ने अच्छी शुरुआत कर बढ़त बनाई, पर मलेशियाई जोड़ी ने अगले छह में से पांच अंक लेकर ब्रेक तक एक अंक की बढ़त ले ली। सात्विक और चिराग ने ब्रेक के बाद कुछ समय के लिए बढ़त हासिल की और 15-12 पर पहुंच गए। हालांकि मलेशियाई जोड़ी ने सात अंक जुटाकर मजबूत वापसी करते हुए पहला गेम जीत लिया। दूसरे गेम में मलेशियाई टीम ने 5-0 की बढ़त बना ली, सात्विक की बदौलत भारतीयों ने अंतर 4-8 तक कम कर दिया।

इंडिया की जर्सी पर नहीं होगा पाकिस्तान का नाम, चौंपियंस ट्रॉफी से पहले मचा बवाल

आईसीसी चौंपियंस ट्रॉपी 2025 शुरू होने में अब बस कुछ ही दिन शेष हैं। हाइब्रिड मॉडल के तहत होने वाले इस टूर्नामेंट के मुकाबले पाकिस्तान के तीन शहरों रावलपिंडी, कराची और लाहौर साथ ही दुबई में होंगे।

मोहम्मद शमी की वापसी पर रहेंगी नजरें, वॉशिंगटन और नीतीश में से किसे मिलेगा मौका?

कोलकाता। भारत ने कोलकाता में अबतक सात टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले हैं जिसमें छह में उसे जीत मिली है, जबकि एक मैच गंवाया है। दिलचस्प बात यह है कि भारत को इस मैदान पर एकमात्र टी20 हार इंग्लैंड से ही मिली है। भारत और इंग्लैंड के बीच बुधवार को कोलकाता के ईडेन गार्डेंस पर पांच मैचों की सीरीज का पहला टी20 मुकाबला खेला जाएगा। इस मैच से अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी भारतीय टीम में वापसी करेंगे जो वनडे विश्व कप 2023 के बाद से टीम से बाहर चल रहे थे। शमी ने घरेलू क्रिकेट में खेलकर अपनी मैच फिटनेस साबित की है और अगर सबकुछ योजना के अनुसार रहा तो शमी का प्लेइंग-11 में जगह बनाना पक्का है। भारत को हराना नहीं आसान टी20 प्रारूप में भारत को हराना किसी भी टीम के लिए आसान नहीं होता है। हालांकि, भारतीय टीम के खिलाफइस प्रारूप में जीत हासिल करने में इंग्लैंड का कोई तोड़ नहीं है। शीर्ष टीमों में इंग्लैंड ऐसी टीम है जिसका भारत के खिलाफ जीत प्रतिशत सबसे ज्यादा है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा शहीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।